सूचवन.

आ मोहमुद्गर आर्यधर्मप्रकाशमां प्रथम छुटक छुटक आवतुं हतुं. ते जीज्ञासु अधिकारीने उपयोगी जाणी जुदा पुस्तकरूपे प्रकट कर्युं छे. तेमां श्लोकने अनुसारेज जेटलु लखवुं योग्य जणायुं तेटलुं विस्तारीने लख्युं छे. जेनी जेटली शक्ति होय तेटलुं ते लखी शके छे माटे न्यूनाधिक दोष होय ते विद्वान सुबोधक लोकोए दीर्घदृष्टिथी दरगुजर करवो अने सत्य सार होय ते सूक्ष्मदृष्टिथी ग्रहण करवो.

स्वं. १९४६ प्रथम भाद्रपद.

केशवलाल हरिराम भट्ट.

आर्यधर्मप्रकाशतंत्री.

४५४५

श्रीमच्छंकराचार्यभगवत्प्रणीत

मोहमुद्गर.

गुजराती टीका साथे

तेने योग्य अधिकारीने उपयोगी थवा

मुंबई—वेदधर्मसभाए

छपावी प्रकट कर्युं.

मुंबई

फोर्ट प्रींटींग प्रेसमां छाप्युं छे.

मूल्य ९ आना.

संवत् १९४६—सन १८९०

मुंबई—भूलेश्वर. फीरंगीना देवळने रस्ते कानजी
धर्मशीना मालामां आर्यधर्मप्रकाश चोपानियांनी ओ
फीसेथी मळशे.

के. ह

मोहमुद्गर.

*मूढ जहीहि धनागमतृष्णां
कुरु तनुबुद्धे मनसि वितृष्णां
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं
वित्तं तेन विनोदय चित्तं ॥ १ ॥†

* सर्व बंधन अने दुःख मोहथी थनारा विकारोथी थाय छे, माटे पेहेलां कृपालु भगवान् शंकराचार्यजी मोह मटाडवाना हेतुथी सर्व विकारोमां प्रबळ एवी तृष्णा तजवाने अने संतोष राखवाने "मूढजही" ए श्लोकथी उपदेश करे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† हे मूर्ख धन मळवातणी तृष्णा तजी अंतरथकी,
कर मनविषे संतोष तुं, हे सूक्ष्मबुद्धि हवे नकी;
निज कर्मना योगे करीने वित्त वेगे लावजे,
ते वित्तनाथी चित्तने आनंद तुं उपजावजे.

अर्थ.

हे मूढ! धन आववानी तृष्णाने तुं तजी दे अने हे क्षीणी बुद्धिवाळा! मननेविषे संतोष कर. तुं तारां कर्मथी प्राप्त थयेलुं जे मेळवे छे, ते धनथी चित्तने आनंद पमाड.

टीका.

धननी तृष्णा राखवाथी कांई धन मळतुं नथी, माटे तेनेमाटे तृष्णा करवी ते विद्वाननुं के समजु माणसनुं काम नथी, एम 'मूढ' एवुं जे गर्भित संबोधन छे तेथी प्रतीत थाय छे. तृष्णा तजीने मनने तृष्णावगरनुं अथवा संतोषवाळु करवुं ते समजु अथवा विद्वान् क्षीणी बुद्धिना माणसनुं काम छे एम 'तनुबुद्धे' एवुं जे गर्भित संबोधन छे ते जणावी आपे छे.—मनमां इच्छा राखवाथी धन मळी जतुं नथी पण उद्यमप्रमाणे

मळे छे. उद्यम करतां विषेश आशा राखनारनुं आयुष्य अने काळ फोकट जाय छे. विद्वान् पुरुषो तो जे कांई मळे छे तेथी संतोष मानी चित्तने प्रसन्न राखे छे.

आ अनादिकाळना जगत्मां धननेमाटे कोई प्रयत्न नहि करतो होय तेवो पुरुष जोवामां आवतो नथी. राजा के रंक अथवा रागी के विरागी सर्वे धन मेळववाना धंधामां पोतानुं जीवित गाळी नांखे छे. एटलुंज नहि पण आ संसारमां उत्पन्न थवानुं सफळपणुं पण तेमांज लेखता जणाय छे. धन मेळववुं एज ज्यारे जन्मवानुं प्रयोजन समजाय त्यारे पछी तेनेमाटे जे आडां-अवळां काम करवां पडे तेनाविषे सारो-माठो विचार कई रीते थाय? अनेक आडां-अवळां प्रयत्नथी कोई थोडी मेहेनते लक्षाधिपति बने छे ने

कोई घणी मेहेनते पण भीखारीना भीखारी रहे छे. जेओ लक्षाधिपति थाय छे, तेओने पण पाछी हायवोय तेटली ने तेटली अथवा वधारे थाय छे, अने भीखारी होय छे तेने पण तेटली ने तेटली हायवोय थाय छे- भीखारी पोतानी दशा विचारीने हजी पण हायवोय तजी शके छे, पण लक्ष्मीवाळाओने तो जेम जेम लक्ष्मीथी भराता जाय तेम तेम तेनी तृष्णा पण वधारे वधारे वधती जाय छे.—तृष्णा घणी नठारी छे. प्रत्येक विषयमां माणसने तृष्णा होय छे, पछी गमे तो धनमां, स्त्रीमां, पुत्रमां, गाममां, गरासमां, शरीरमां के बीजी संपत्तिमां. शरीर जेम जेम वृद्ध थतुं जाय ने ईन्द्रियो जेम जेम निर्बळ थती जाय तेम तेम माणसनी तृष्णाओ जुवान थती जाय छे. अर्थात् तृष्णाने कोई तरी शकतुं नथी. अ-

थेनी तृष्णा कंई जेवी तेवी नथी. ईच्छाप्रमाणे धन मेळवी तेनी मगरुबीमां रही विशेष संपादन करनारने कदि धननो वियोग थाय तो शुं थाय तेविषे भर्तृहरि कहे छे के:—

तानींद्रियाणि सकलानि तदेव कर्म
सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव ।
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव
अन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत् ॥

सर्वे ईन्द्रियो पण एनी एज होय छे, काम पण अेनुं अेज होय छे, क्यांई पण अटके नहि एवी बुद्धि पण एनी एज होय छे, वचन पण एनुं एज होय छे, अने पुरुष पण एनो एज होय छे, तो पण अर्थनी गरमीथी वियोग पामेलो ते क्षणमात्रमां कंई जुदोज थई जाय छे ए आश्चर्यनी वात छे.

द्रव्य मळ्या पछी पण सुख नथी ने मेळवी लीधा पछी जाय तोपण दुःखरूप दशा थाय छे, तोपण मनुष्यो एवा मोहमां अंध थई गया छे के एनेज कर्त्तव्य कर्म समजे छे. सर्व वाते मनने स्थिर राखी तृष्णानो त्याग करवो ए उत्तमोत्तम विचार छे. जो एम नहि बनी शके तो कोई दिवस नहि नाश थई शके एवुं धन अने सदाय सुख उत्पन्न करे एवी तृष्णा जोईए तो क्यां नथी? आ संसार गांधीनी दुकान जेवो छे. जेम गांधीनी दुकाने कडवा-मीठा सघळा पदार्थो होय छे, तेम संसारमां पण होय छे: जेम गांधीनी दुकाने सारां-मांठां परिणाम लावनारा पदार्थो होय छे तेम संसारमां पण होय छे; परंतु जेवो जे ग्राहक होय तेने तेवो पदार्थ मळे छे. कोई अघेली लई एळियो लेवा जाय तेने

साकर केम मळे? जो आपणे संसारमां परिणामे हितकारक पदार्थ मेली अहितकारक लेवा जईए तो आपणे जेवुं लेईए तेवु मळे. आपणे आपणी मेळेज सारा पदार्थना ग्राहक थवुं तो पछी कोई पदार्थनो तोटो नथी. कोई शंका करे के अमने समजावे कोण? तो तेना जवाबमां एटलुंज के ईश्वरे समजवा माटेज आपणने बुद्धि आपी छे, एम करतां जो न समजाय तो विद्याभ्यास करी पोतानी सत्वगुणी प्रकृतिनी साथे विचार करी समजवुं. आपणी प्रकृति सत्वगुणी नथी एम जणाय तो जगत्मां महापुरुषो घणा पड्या छे. ते शास्त्रानुसारे जे कहे तेमां बुद्धि जोडवी. पोतानुं भलुं पोते न करिये त्यारे कोण करे? पासे पडेलुं अन्न जो कोळियो वाळीने मोढामां न मेलिये तो ते केम खवाय? सारा मार्ग घणा छे

पण ते उपर आपणे चालिये तोज आपणने उ-
पयोगी छे. 'आज शुं छे ? काले वात' एम धारी
बेशी रेहेवुं ए पण मोटामां मोटी भूल केहेवाय.
कालनी कोने खब्बर छे? पलनी खबर पडवी पण
कठण छे तो कालनो शो भरोसो ? आ शरीर
उत्तमोत्तम अने अमूल्य छे, परंतु ते क्षणभंगुर
छे. एक मटकुं मारिये तेटला समयमां पण ते
घटे छे, पण वधतुं नथी. आपणे एम जाणिये
छिये के आपणे मोटा थता जइए छिये, पण ते
आपणी भूल छे, केमके देखीता आकृतिमां मोटा
थया जणाईए छिये, पण आयुष्यमां घटता जई-
ए छिये. विद्या के धन मेळववामां आपणे अ-
जर ने अमर छिये एम जाणवुं एम सहु कोईने
गमे छे अने अमे पण ते अंगीकार करिये छिये,
पण तेनी साथे

ग्रहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्।[१]

ए वाक्य शुं भूली जवानुं छे? अमे तो एम जाणिये छिये के पेहेलेथी तें स्मरणमां राखवुं जोईये; केमके मन केळववानो ज्यां समय होय त्यां सारी वात प्रथम बेसी जाय तो पछी विपरीत वातनो भय रहे नहि. पण जो विपरीत वात प्रथम मनमां उतरे छे तो सारी वातनो पछी आदर थई शकतो नथी. आ नियम खरा विद्वानोने लागु नथी पडतो, साधारण माणसने पडेछे.

आज काल तृष्णावाळा लोको आम तेम अथडाता आपणे घणा जोईए छिये. रातदिवस प्रयत्न कर्या छतां पण तृष्णानो लेश पण ओछो

१ धर्मनां काम करवामां मृत्युए आवीने शीखा पकडी होय तेवी रीते मानवुं. अर्थात् धर्मना काममां कोई वातनो भरोसो राखी ढील न करवी.

थतो नथी, पण प्रतिदिवस तेमां वधारो थतो जाय छे. तृष्णा टाळवानुं खरुं साधन शांति छे. ते शिवायना बीजा उपायो करवा ते अग्निने शांत करवा माटे तेमां घी रेडवा जेवा छे.

कोई एक बालकने तेनी माताए दीवो ठारी नांखवा माटे पंखानो पवन नांखवानुं कह्युं, तेथी तेणे तेम करी दीवो ठारी नांख्यो. थोडो समय गया पछी बीजा बाळकोने साथे लई पेहेलो बाळक तापणी करतो हतो. तापणी करतां करतां पासे राखेलां घासनी नजीक पथराएलां बीजां घासनो थोडो भाग सळगतो चाल्यो. बाळकनी माता घरमांथी बहार आवी जुवे छे तो पथराएलुं घास सळगतुं चाल्युं हतुं; तेथी बाळकने ते ठारी नांखवानुं कहीने कोई जरुरना प्रसंगथी ते बीजां कामपर लागी. छोकराए जाण्युं के माताए प-

हेले दिवसे दीवो ठार्यो हतो त्यारे पंखानो पवन नांखवा कह्युं हतुं माटे आ समये पण तेमज करवाथी ते ठरी जशे. आम विचारी जेवो पवन नांख्यो के तरत घास बळ्युं वधारे सळगी उठी बीजां घासमां लाग्युं अने आखो घासनो ओघो सळगी उठ्यो.

तृष्णाना विषयमां पण आमज माणसो ठगाय छे. पाणीनी तरश जेम पाणी पीधाथी शांत थाय छे, तेम बीजा संसारना पदार्थ अने विषयोनी तरश (तृष्णा) ते ते विषयो के पदार्थो मळवाथी शांत थतीज नथी पण वधे छे खरी. आने शांत करवानां साधन केवळ उलटांज जोईए. तृष्णा थई तो तेने संतोषथी शमावी देवी. जो ते शमी नथी जती तो पछी लोभने साथे लई आवी पोतानुं पड जमावे छे. नानो सरखो शत्रु

जेम जामी जाय तो ते नाश करे, तेम नानो स-
रखो दुर्गुण पण जामी जाय तो नाश करे. अ-
ग्निनो तणखो राई जेटलो होय परंतु जो तेने
विपरीत होय तेवां साधनोथी ठारी नांखवामां
न आवे तो आखा वननो नाश करी नांखे. ई-
श्वरेच्छाथी जे काई मळ्युं तेमां संतोष राखी वर्त्त-
वाथी जे सुख थाय छे ते वर्णवी शकातुं नथी.
आ सहजमां मळी शके एवुं सुख समजु माणसे
वेगळुं न करवुं जोईए. संतोष के शांतिनुं सुख
लेतां उद्यम करी धन मेळववाथी थतुं सुख कांई
ओछुं थई जतुं नथी, परंतु उलटुं वधारे थायछे.
आ वात अनुभवविना सिद्ध थई शकती नथी,
माटे विचारवान माणसोए अनुभव करी लेवो
जोईए.



*अर्थमनर्थं भावय नित्यं
नास्ति ततः सुखलेशः सत्यं ।
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः
सर्वत्रैषा विहिता रीतिः † ॥ २ ॥

अर्थ.

अर्थने निरंतर अनर्थरूपज जाणवो. ते अनर्थरूप अर्थथी लेश पण सुख नथी ए खरेखरूं

* धननी तृष्णा शामाटे न करवी एम शंका थाय तो ते देखाडवामाटे आ तृष्णाने छोडाववामाटे धननुं अनर्थपणुं अने दुःखरूपपणुं 'अर्थमनर्थं' ए श्लोकथी वर्णन करे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† धन होय तेने आप नित्य अनर्थरूप गणो अहीं,
मानो खरेखर लेश ते लक्ष्मीवडे सुख छे नहीं;
धनवान लोकोने सदा भय पुत्रथी पण थायछे,
ए रीति आ संसारमां जाहेर साव जणायछे.

छे. धनने भोगवनारा एटले अनेक द्रव्यनी संपत्तिथी सुख भोगवनारा पुरुषोने. पुत्रथकी पण बीक रहे छे. आ रीति (एक ठेकाणे नहि पण) सर्व टेकाणे अवचळ छे.

टीका.

अर्थ एटले अहीं धन समजवुं. धनथी अनेक अनर्थ थाय छे, माटे तेने अनर्थरूप ठराव्युं छे. सद्गुणी अने कंगाल पुरुषो पण ईश्वरेच्छाथी धनना पात्र थई केवळ असद्गुणी अने अति अहंकारी थई जाय छे. धनना मदथी छती आंखे अंध थई गयेला केटला आपणे नथी जोया? धनना मदथी छते काने बेहेरा बनी गयेला केटला आपणे नथी दीठा? धनना मदथी छता हाथ-पगे लुला-पांगळा थई गयेला केटला आपणे नथी निरख्या? धनना मदथी स्वाधीन छतां

पराधीन थई गयेला केटला आपणे नथी पेख्या?
धनना मदथी छती आरोग्यताए मांदा मरता
केटला आपणे भोगीलोको नथी भाळ्या? गमे तो
राजा होय, गमे तो अधिकारी होय, गमे तो
व्यापारी होय, अने गमे तो सराफ होय. पण
सघळाए पोतपोतानी पूंजीना बळप्रमाणे उपर
जेवा बनी रहे छे. धनना धणी थनाराओने पछी
तो काम कोटे वळगे छे, क्रोध कांधे चडी
बेसे छे, लोभ ललाटमां आवी वसे छे, मोह म-
नमां आवी बेसे छे, मद हृदयमां वास करे छे,
अने मत्सर सर्व अंगमां पेशी जाय छे. आम
थवाथी जेवी भूतभरायेलां माणसनी दशा होय
तेवी ते धनवान्नी थाय छे. विचारी जोतां नि-
श्चय जणाशे के आवा अनर्थ थवानुं मूळकारण
मात्र धन छे. जो धनना मदथी काम कोटे न

वळगतो होत तो, रावण शामाटे रणसंग्राममां रोळात? जो क्रोध कांधे न चडतो होत तो, प्रजाने उत्पन्न करनारा दक्ष नामना प्रजापति शामाटे पायमाल थई जात अने जरासंध जेवो जोरावर राजा शामाटे वीरशय्यामां सूत? जो लोभ ललाटमां वास न करतो होत तो, धृतराष्ट्र जेवा समजु वृद्ध राजा पोतानी प्रजानो नाश शामाटे देखत? जो मोह मनमां न वसतो होत तो, भीष्मपितामह जेवा भड पुरुष कौरवोनो पक्ष करीने पोताना नामने केम झांखुं करत अने इंद्र जेवो देवता पोताना गुरु बृहस्पतिनुं अपमान करी शामाटे शत्रुओनां शस्त्रोना वरसादने सहन करत? मद हृदयमां न रेहेतो होत तो बाणासुर जेवो बळियो असुर, शिवनी सहाय छतां शामाटे पराजय पामत? जो मत्सर सर्व

अंगउपर न चडी बेसतो होत तो, प्रतापी राजा परीक्षितने राजपाट तजी शामाटे गंगाकिनारे जई बेसवुं पडत अने कुबेर यक्षना नळ-कुबर नामना बे पुत्रोने शामाटे दुष्ट दशा भोगववी पडत? आ इतिहासो संस्कृत जाणनाराना ध्यानमां छे, अने तेवा बीजा अर्वाचिन इतिहासो हालनी केळवणी पामेलाथी अजाण्या हशे नहि. आ बधा अनर्थनुं मूळ उपर कही गया ते धनज छे. गमेतो स्त्री होय के पुरुष होय परंतु बेयने ते आंधळा कुवामां उतारे छे. एमांथी बची शके तेवुं कोईकज माणस नीकळे छे.

धन मळवाथी सुख थाय छे, एम लोको मानता होय तो पण ते एक जातनी भूल छे. देखवामां आवता उपरना भपकाथी निर्धन लोको धनवाळाने कदि सुख माणता माने ए वात एक

पक्षे खरी छे; पण उपरना देखावथी तेम मानी बेसवुं ए कोई रीते खरूं गणाय नहि. आजे आपणे कोई जाणीता मोटा धनिकने जईने पुछिये के 'केम भाई, तमे सुखी छो के नहीं?' तो ते एवो उत्तर आपशे के, 'अरे भाई, मारा जेवुं तो कोई दुखियुं नहि होय. आ फेरे वेपार वणजमां बरोबर नफो थयो नथी. छोकराना विवाह करवा छे तेमां आबरू प्रमाणे खरच करवो जोईए तेनी मोटी चिंता छे, गाडी-घोडानी बे जोड छे ने बे बीजी राखवी छे पण कांई कमाणी नथी एटले खरच उपडे नहीं, घरमां बे लाखनां कडां करावववानां छे तेनेमाटे रात दिवस रांड जीव खाई जाय छे, मोटो छोकरो लफंगो थयो छे ते नाणुं उडाडी नाखे छे, शरीरे कांई सारूं रेहेतुं नथी, धार्युं उतरतुं नथी, रा-

तना बारबार वाग्यासुधी रखडीने मरी जईए छीए अने हेरान थई जाईए छिए.' आम ते बोली उठशे. आ बात खोटी नथी. धन न होय तो तेने मेळववानी चिंता थाय छे. मळ्या पछी तेने केम साचववुं तेनी चिंता थायछे. साचववानी चिंता थया पछी हवे वधारो केम थाय एनी चिंता थाय छे. एम इच्छा करवाथी पण दुःख करे छे, मेळव्या पछी पण दुःख करे छे अने कदी मेळवेलुं जाय तो पण महा दुःख करे छे. आ नियम एकनेमाटे नथी. मोटा मोटा चक्रवार्ति राजाने अने साधारण धनिकने बधाने सरखो छे. धनवडे केटलाके पोताना प्राण संग्राममां खोईने अमूल्य शरीरने गीध अने कागडाओने खवराव्यां छे, धनवडे केटलाके पोतानां वहालां सगांने वेरी कर्यां छे, धनवडे केटलाक

पोतानां पवित्र कुटुंबथी विखूटा पडी रखडी मुवा छे, धनवडे केटलाक आपघात करी महा नर्कना निवासी थया छे, धनवडे केटलाक लुटाराओने हाथ पडी मोतविना मुवा छे, धनवडे मोटी मोटी आपत्तियोने केटलाक पाम्या छे, अने धनवडे राजद्वारमां दंडाया छे. विचारी जुओ के शुं सुख थाय छे धनथी? धनवाळाने कुटुंबमां संप रेहेतो नथी, वखते प्रजा उत्पन्न थती नथी, ओचींती पीडाओ आवी पडे छे अने क्षण मात्र पण पुण्यनो के परमार्थनो विचार थई शकतो नथी. आटलामाटे लक्ष्मीमां लेश पण सुख नथी एम जाणवुं जोईए.

धनने भोगवनाराओ क्षणमात्र पण सुखनो अनुभव करी शकता नथी. भीख मागीने पेट भरनारा भीखारियो जेटलुं सुख लेछे, दीवासळीनी

डाबलीजेवा साधारण धंधा करी पेटनो गुजारो करनारा जेटलो संतोष लेछे, तेनो शतांश पण धनवाळा लेता नथी. गरीब लोको कोरी धूळमां पाणानुं ओशीशुं करी जेवी आनंदनी ऊंघ लेछे, दुर्बळ लोको घासनी पथारी करी पोताना हाथनुं ओशीसुं करी जेवी आनंदनी ऊंघ ले छे, तेवी आनंदनी मीठी ऊंघ बिचारा धनथी सुखीया केहेवाता लोकोने एक पलवार पण आवती नथी. तेने धननी त्यां रही पण पोतानां तननी पण रातदिवस चिंता थया करे छे. सगो पोतानो पुत्र होय तो पण धनवान्ने तेनी बीक रह्या करे छे. आ नियम कांई एक ठेकाणे नथी, पण आखा जगत्मां प्रसिद्ध छे. संबंधप्रमाणे जेटली मर्यादा अने धर्म निर्धन पाळी शके छे, तेनो सहस्त्रांश पण धनवाळाथी पाळी शकातां नथी. मोटा मोटा

राजाओने ज्यारे टिलात पुत्र अवतरे छे त्यारे घ-णो आनंद थाय छे. पण तेज टिलात पुत्र मोटो थवा मांडे छे के पछी पोताना तनविपनी, पण चिंता वधती जायछेः इतिहासोथी प्रसिद्ध जणाय छे के पिता पुत्रने कोइकज ठेकाणे पिता-पुत्रनो संबंध रहेछे,बाकीतो निरंतर वैरभावज रहेछे. पोताना पेटना पुत्रनीसाथे ज्यारे वेर बंधायछे, अने पेटना पुत्रथी ज्यारे पोताना शरीरनी धा-स्ती रहेछे, त्यारे बीजाओनी रहे के होय तेमां शी नवाइ? इतिहासोविषे मोटां मोटां राज्यमां आवां वृत्तांतो आपणे बहु वांच्यां छे. मोटा मो-टा राजाओनां, कारभारियोनां अने राजकुमा-रोनां निकंदन थइ गयांछे. आ बधुं अेक धनवडे थायछे. धनना निशाथी आंधळा थयेला, पछी सघळा अनर्थ करवाना अने भोगववाना पात्र

थायछे. कोइ पुण्यशाळी होय तेज तेवा अनर्थथी अळगो रही शकेछे.

कोइ कहेशे के धनना दोष अमे जाण्या; पण जाणीने शुं करवुं? पण ए सवाल टुंकी न जरनो छे. आपणा घरमां सर्प नीकळ्यो होय तेने जो सर्प जाणीये तो तेमां लाभ छे के हानि? दुधनो प्यालो भर्यो होय ने तेमां झेरी जंतुनी लाळ पडी होय तो ते दुध छतां पण तेना गुण दुधजेवा नथी रेहेता. एवां दुधना जो दोष आपणे न जाणीये तो तेमां लाभ के हानि? एक गांधीनी दुकान होय तेमां चाक पण वेंचाय अने सोमल पण वेंचाय. वेंचनार बेयना सरखापणांथी सोमलने पण चाक समजी तेना खरा गुण के दोष न जाणे तो तेथी लाभ के हानि? गमे तो आपणे धनना भोगवनारा छिये अथ-

वा गमे तो भोगवनारा न होइए, तोपण बेय-
पक्षवाळाओए धनना जे दोष छे ते जाणवा
जोईए. रसांजन अफीणना जेवुं थायछे. अफीण-
ना कटकाने रसांजनना जेवा गुणनो मानी बेसिये
तो एमांथी शुं थाय? जीवनां जोखमविना बीजुं
कशुं थाय नहि. सोमलने चाक जाणीये ने तेना
गुण न जाणवाथी तेने क्यांइ वापरी दइए
तो शुं थाय? जीवना जोखमविना बीजुं कशुं
थाय नहि. जाण्या न जाण्यामां एटलो फेर
छे. जेवो जाणवामां सार छे तेवो न जाणवामां
नथी.

निशा सघळा उन्मत्त करे छे, तेम धनथी
थतो निशो पण उन्मत्त करे छे. पण एनी उ-
न्मत्ताइ बीजाना जेवी नथी. अफीणना गुण आ-
पणे जाणता होइए, पण ते जो खावामां न आवे तो

तो कांइ नहीं पण जो खावामां आवे तो ते पो-
तानुं प्रबळ देखाड्याविना रेहेतुं नथी; पछी गमे
तो गुण जाणता होइए अने गमे तो न जाणता
होइए. धनना निशानुं तो एम छे के, धनना
गुण-दोष खरा अंतःकरणथी खरेखरा जाण्या
होय तो, ते मळे त्यारे जेवी अवस्था होय तेवी
ने तेवीज मळ्या पछी पण रहे छे. जाणवामां
एटलो गुण छे. जे नथी जाणता तेनी दशा उ-
पर लखाइ गया प्रमाणे बने छे. आ नियम
गृहस्थनेमाटे छे अने तेने व्यवहारमाटे धन
वगर चालतुं पण नथी. मळेलामां संतोष राखवो
अने मळ्या पेहेलां अने मळ्या पछी तेना जे
दोष छे ते जाणी लइ तेथी अळगुं रेहेवुं, एटलुं
गृहस्थोनेमाटे कर्त्तव्य छे. सन्यासियोमाटे तो
धननुं दर्शन पण योग्य नथी. तेनेमाटे तो स-

दाय ते धन अपार अनर्थ करनारुंज केहेवामां आव्युं छे, ने ते यथार्थ जणाय छे.

धनविषे व्यवहारने अनुकूळ रही हवे जणाववानुं एटलुंज के, धन एवुं अनर्थकारक छे एम समजवुं अने समजीने जे जे अनर्थ तेथी थाय छे ते अनर्थथी अळगा रेहेवुं; कुटुंबने पाळवुं ने तेनी साथे संप राखवो; सत्ताप्रमाणे सत्कार्यमां अने सन्मार्गमां मळेलांमांथी वापरवुं अने आ लोकनुं अने परलोकनुं साधन संपादन करी अमर नाम करी जवुं. जो आम न थयुं तो धन धूळ करतां पण नपावट छे एम समजवाने कंइ अडचण नथी. जेओ निर्धन होय तेओए मानवुं के एवां अनर्थकारक द्रव्यथी ईश्वरे अळगा राख्या ते घणुं सारुं कर्युं. आम विचारीने पछी व्यवहार चलाववामाटे बनतुं प्रयत्न

करी उपार्जन करवुं. पछी कदी मळे तो मदी न जवुं अने न मळे तो दुःख न पामवुं. श्रीकृष्णे पण कह्युं छे के जेनी उपर हुं कृपा करुं छु तेने ऐश्वर्यथी भ्रष्ट करुं छुं. आमां समजवानो सार ए छे के ऐश्वर्य एटले संपत्तिथी माणस मोही जइ अनेक प्रकारना अनर्थ करे छे अने तेनुं मन सारे मार्गे नहि जतां अवळे मार्गे चडे छे; माटे ईश्वरनी मेहेरबानी जेना उपर होय तेने धन न होय एटले तेना मदथी मदाय नही, अने मदाय नही एटले तेथी थनारा अनर्थो क्यांथीज थाय? परंतु विशेष लाभमां ईश्वरपूजन थाय अने क्षमा, शांति, संतोष, दया, शम, दम, तितिक्षा, श्रद्धा, आदि अनेक गुण आवे छे.



* यावद्वित्तोपार्जनशक्त-
स्तावन्निजपरिवारो रक्तः ।
तदनु च जरया जर्जरदेहे
वार्त्तां कोपि न पृच्छति गेहे †॥ ३॥

अर्थ.

ज्यांसुधी धन मेळववानी तारामां शक्ति छे त्यांसुधी स्त्रीपुत्रादिक तारो परिवार तुंने आ-

* तृष्णा मटाडवा धनना दोष कहीने 'यावत' ए श्लोकथी सर्वनुं स्वार्थीपणुं देखाडे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† समरथ हशे तुं सर्वदा जर लाववामां ज्यांसुधी,
परिवार तारो सर्व पण अनुरक्त रेशे त्यांसुधी;
आ देह थाशे शिथिल घडपणमां पछी घेराइने,
कदि कोई पण घरमां कशो नहि भाव पूछे भाइने.

धीन थईने रह्यो छे. पण पछी ज्यारे घरडपणथी शरीर खळखळी जशे, त्यारे तो कोई घरमां तुंने वात पण पुछशे नहीं.

टीका.

आखुं जगत् स्वार्थने आधीन छे. स्त्री, पुत्र चाकर, संबंधी अने स्नेहियो पण स्वार्थने आधीन छे. ज्यांसुधी आपणामां धन मेळववानी शक्ति होय अने आपणे आपणांनुं भरण-पोषण करी शकता होइए त्यांसुधी तेओ आपणने अत्यंत आधीन थईने रहे छे. जो प्रथमथीज आपणे धन मेळवी शकिये एवा न होइए तो प्रथमथीज संसारमां कोइ आवकार आपे नहि के कोई आधीन थइ रहे नहि. प्रथम कदी कमावानी शक्ति होय अने पाछळथी शरीर अशक्त थवाथी ओछी थाय तोपण आपणुं जे मान

प्रथम रेहेतुं होय, जे मरतबो प्रथम सचवातो होय अने आपणी जे प्रतिभा प्रथम पडती होय तेनो शतांश पण पछी पडे नहीं. केटलांक माता-पिताना प्रिय पुत्रो छते मावापे भुंडे हाले रांक थई रखडे छे, केटलाक पुत्रोना पूज्य पिताओ छते पुत्रे पेटने पण पूर्ण अन्न न मळे एवी दशामां दबाई गया छे, केटलाक प्रिय पतिओने पोतानी पत्नीओए परहेरेला छे, केटलाक भाई-ओए पोताना सगा अने मंपीला भाइओने भट-कता मेलेला छे, केटलाकने सगा-संबंधियोए धकेली काढेला छे, केटलाकने ज्ञातिए गनारेला नथी, केटलाकने माथे ज्ञातिए जुलम करेल छे, केटलाकने मित्रोए मूर्ख करी काढेला छे, अने केटलाक चाकरोए धणीने धोळमां दीधा छे, ए वात आपणा जाणवानी बहार नथी. आ बधुं

शाथी थाय? धन न होय अने कमावानी शक्ति न होय तेथीज. गमे तेवो रुडोरुपाळो पुरुष उत्तम कुळमां अवतरे अने भणेलो होय, तोपण जो धन वगरनो होय अने कमावानी शक्ति न होय तो तेने कोडी समान मानेछे; अने गमे तेवो करुपडो, कपटी, दुर्गुणी, अभण, नीच कुळमां उत्पन्न थयेलो होय तो पण धनवाळो होय के धन मेळववानी शक्तिवाळो होय, तो तेने सहु कोई मान आपे छे. कांणा, बेरा, लुला, आंधळा, पांगळा,काळा, कुबडा, अने अनेक दुर्गुणथी भरेला पुरुषो धनवाळा होय के धन मेळववा शक्तिमान होय, तो पोतपोतानां संबंधियोने संबंधप्रमाणे अत्यंत प्रिय लागे छे. शुं आ संसारनो स्वार्थ न केहेवाय? जो स्वार्थ न होय तो आपणे तेवाज पुरुषोने निर्धन अने

कमावाने अशक्त होय तो तेओना उपर पडता अनेक विपत्तिना प्रहारथी आंखमांथी आंसु पाडता केम देखिये छिये ?

एक ब्राह्मणने बे पुत्र हता. मोटो पुत्र बे चार चोपडी गुजराती शीखी मेली दइने एकादशा सरावतां अने श्राद्धो सरावतां शीख्यो अने भीखनुं अने क्रियमाणनुं काम पोताना पिता करता ते करवा मांडयुं. पोते बिचारो भोळियो, बोली तोतडी ने कमाणी थाय नहीं, तेथी मनमां उदास रहेवा लाग्यो. नानो पुत्र तो पोताना पितानी लागणीथी इंग्रेजी शीखवा लाग्यो, अने थोडा दिवसमां बे चार चोपडी शीखी चाकरीए वळगी जइने ते महिनाना आशरे १५ रुपीया कमावा लाग्यो. नानो छोकरो रुपाळो, बोलवे चतुर अने कमावा शी-

ल्यो तेथी माता-पिताना मनमां तो हरख थवा मांड्यो, अने भाइने तो वखाणवानां थवा लाग्यां. कोइ वात पुछवी होय तो तेने पुछे, साचववा के मेलवा आपवुं होय तो तेने आपे, नात-जातमां वखाण पण तेनां करे, 'भाइबापा' पण तेने करे, जमवानो वखत होय ने जो नानो पुत्र क्यांइ आघो-पाछो गयो होय तो घरनां माणस भाइ आव्याविना खाय नहि, अने कांइ साजो-मांदो थाय तो बधांए आंखमां पाणी आणवा अने चाकरी करवा मंडे. आवी रीते पोताना नाना भाइनो मान-मरतबो सचवातो जोई, मोटा भाइने कंइ दुःख लगाडवा जेवुं न हतुं, पण उलटुं राजी थवा जेवुं हतुं. पण स्वार्थी एवां सघळां घरनां माणसोए तेने अंतरमां दुःख थाय एवी रीतनी गोठवण करवा मांडी. स्वार्थनुं

सगपण कांइ ओर तरेहनुं छे. जेनी साथे स्वार्थ न होय तेनी साथेनुं सगपण बीजुं गमे तेवुं बळवाळुं होय तोपण ते कंइ नथी एम समजवुं मोटा भाइनी नात-जातमां चारेकोर निन्दा करवा मांडी, घरमांथी बहार गया होय तो सहु तेना पेहेलां खाइ बेसे, घेर आवे तो कोइ बोलावे पण नहि, घरमां मोटेरो खरो पण कंइ वातने पुछे नहि, कंइ काम कह्युं होय ने बरोबर न थाय तो सघळां माणसो बायडीना देखतां फफडावी नांखे, मांदो पडे तो कोइ माथुं पण चांपे नहि, अने लुगडुं-लत्तु पण पुरुं पेहेरवा मळे नहि, पोताने माथे अनेक पडताल पडे, अने बाकी कांइ जो रह्यो होय तो बिचारा कमनसीबनी बायडीउपर पडे. आवुं प्रतिदिवस दुःख पडतुं जोइ तेने एकाएक कांइ उद्योग

करवानुं सुजी आव्युं. कोइएक सडकना कंट्रा-
कटरने मळी तेनी आगळ तेणे पोतानुं दुःख
गायुं एटले तेने दया आवी, तेथी तेने तेणे
आठ रुपीयानी दाडियांनी दांडी चूकववानी
नोकरी आपी. नोकरी मळी तेथी कांइक तेनो
पग जोरमां आव्यो. घरनां माणसोए आठ
रुपीया कमातो जोइ पेहेलांना अपमानमांथी
जराक घटाडो कर्यो. आथी करी ए छोकराने
नोकरीनुं परिणाम सारुं लाग्युं; तेथी पाच दस
मास ए नोकरी करी, जरीफना धंधामां छ
मास उमेदवारी करी कोइ मोटा जरिफ आगळ
पोतानुं दुःख रोइने एकदम ३० रुपीयानी
नोकरीने पाम्यो. आ नोकरी मळी के भाइनां
मान वध्यां. भाइ नोकरी उपर बे मास रहे तो
पण घरनां माणसो तेनो वियोग न खमी शके,

स्त्री जुदुं मान आपे, बाप जुदुं मान आपे, संबंधियो जुदुं मान आपे, नातजातवाळा जुदुं मान आपे, अने मित्रो जुदुं मान आपे. पछी तो नाना भाइ करतां पण मोटा भाइनी आबरु नथी. वातचित पुछवी होय ते तेने पुछाय, अने तेना मोटामांथी जे वेण पडे ते उल्लंघन न थाय.

आ प्रमाणे सर्व संबंधियो जो आपणामां कांइ पण कमावानी शक्ति होय, तोज ते अनुसरी रहे छे अने न होय तो आपणने वेतां मेले छे. केटलां मातापिताओने आपणे पोताना कमाउ पुत्रने पूजा करतां नथी जोयां, केटला भाइओने पोताना कमाउ भाइओ उपर अपूर्व भाव राखता नथी जोया, केटला मित्रोने पोताना कमाउ मित्रउपर उत्तम ममता राखता नथी जोया, केटला संबंधियोने पोताना कमाउ

संबंधियोउपर स्नेह राखता नथी जोया, केटला नातजातवाळाओने पोताना कमाउ नातजातवाळाउपर नम्रता राखता नथी जोया, केटली बेनोने पोताना कमाउ भाइउपर प्रीति राखती नथी जोई, ने केटला चाकरोने पोताना कमाउ शेठउपर पोतानां शरीरने पण कुरबान करतां नथी जोया? स्वार्थमय संसारमां एवा अनेक जोया छे. ए बधुं विचारशो तो धनथी अने धन रळवानी शक्तिथीज. जो तमारामां शक्ति न होय तो तमारी दशा केवी होय? मार्गमां 'अरे माबाप कोइ आंधळा भीखारीने आपो' एवी बुम पाडता अने छाती कूटता रखडता भीखारीनाथी पण भूंडी होय. निःसार संसारना स्वार्थी लोकना सहवासने अनुसरीने प्रसिद्ध कवि शामळभट्टे धनना संबंधमां २४ छप्पा लख्या छे ते बधा

समावतां लंबाण थइ जाय माटे तेमांना एक बे अहीं दाखल करीने जोईए, के ते प्रसिद्ध कवि शुं लखे छे.—

गांठे जेने गरथ भली ते विद्या भणियो,
गांठे जेने गरथ कोइनो न रहे रणियो,
गांठे जेने गरथ तेज पंडित छे पूरो,
गांठे जेने गरथ तेज छे सांमत शूरो;
वळी गांठे जेने गरथ छे पराक्रमी परमाणवो,
सामळ आ संसारमां जरविण मूरख जाणवो.
डापण दमडामांज रहे दमडामां यारी,
दमडामां छे रूप भेद दमडामां भारी,
जो दमडामां जोर रहे वश थईने राजा,
दमडे उंच अधिकार गुणो दमडामां झाझा,
दमडो छे मोनो देवथी वण दमडे सहु वामणां,
सामळ ए दमडातणां भातभात लउ भामणां.

सारांश एनो एज आपणे समजवानो छे के जो आवुं दाम ने आवां दाम मेळववानी शक्ति आपणमां न होय, तो आपणे जगतमां जेटला पाणा उपयोगमां आवे छे तेटला पण उपयोगना नथी.

कोई संस्कृत कवि कमावानी शक्ति न होय के कमाणी न होय तो स्वार्थी संसारमां संकटो वेठवां पडे छे, तेथीज जाणे न केहतो होय तेम कहे छे केः—

धनैर्निष्कुलीना कुलीना भवंति
धनैरापदं मानवा निस्तरंति ।
धनेभ्यः परो बांधवो नास्ति लोके
धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वं ॥

धनवडे कुळवगरना पुरुषो कुळवान् थाय छे, धनवडे माणसो आपत्तिने उतरे छे, अने

धनथकी बीजो कोई पण लोकमां बंधु नथी, माटे हे भाईओ, धन मेळवो धन मेळवो.

अनर्थकारक. धननो आ संसारमां शो म-हिमा छे ! ! सर्व सुख अने संबंध धनमां समाई गयेल छे, ने ते सत्य छे. अनेक अनुभवियो पण मथीमथीने छेवट एज सिद्धांत बांधी गया छे के धनविना जे कांइ मानो कहो ते खोटुंज.*

जेओ ते दशाने परिपूर्ण रीते अनुभवता हशे तेओ ते वातने कबुल कर्याविना नहि रहे. ज्यारे आपणो परिवार धनने के धन कमाबानी शक्ति ने आधीन छे, त्यारे ते शा कामनो अने शुं कल्याण करे? कशा कामनो नहि अने कंई पण ते कल्याण करे नहि. परिवार तो ज्यां-

* आत्माराम, पूर्णकाम अने शमदम राखनारा विरक्त पुरुषने आ वात लागु पडती नथी.

सुधी जीविये, त्यांसुधी गीधपक्षियो जेम मुवेलां मरदांने चांचवती ठोली खाय, तेम आपणने जीवतांज•ठोली खाय, अने मरण पछी अनेक प्रकारनी योनियोनां दुःख भोगववाना अधिकारी करे.

कमावानी शक्ति जाय ते पछी धीरेधीरे वृद्धपणुं आवे छे. वृद्धावस्थारूप राक्षसी एवी तो बळवाळी छे, के जेम जेम ते आपणा शरीरमां जामती जाय, तेम तेम आपणी अशक्तिमां वधारो करती जाय छे. पेहेलां चामडी खरबचडी थवा मांडे छे, रूप ओछुं थवा लागे छे, वाळ सफेत थवा लागे छे, दांत पडवा मांडे छे, हाथ-पग कंपवा लागे छे, लाकडी लेवी पडे छे, पथारिये पडी रेहेवुं पडे छे, आंख्यो फीकी थई जाय छे, कानमां धाक पडी जाय छे, वायु

ने कफ वधवा मांडे छे, मोमांथी लाळ पडवा मांडे छे, अने जेम कोई कुतराने रोटलानो कटको नांखे तेम घरनां स्वार्थी माणसोए आपेलो रोटलानो कटको म्हाकष्टे खावो पडे छे. आ-वृद्धावस्था फरीने बाळकपणु आपे छे तेविषे कवि कहे छे के:—

> वदनं दशनविहीनं
> वाचो परिस्फुटागताशक्तिः।
> अव्यक्तेंद्रियशक्तिः
> पुनरपि वाल्यं कृतं जरया॥

मोढुं दातविनानुं थई जाय छे, बीजुं कोई न समजी शके तेवुं बोलाय छे, शक्ति जती रहे छे, अने शरीरमां रहेली दशे इंद्रियनी शक्ति बंध पडे छे. आवी रीते वृद्ध अवस्था फरीने बाळकपणुं करे छे.

जेवी दशा धावणां छोकरांनी होय तेवी पराधीन दशा थाय छे. मात्र माणसोनां ममत्वमां फेर पडे छे. आवी दशामां पण दिवसे दिवसे जीववावी आशा वधती जाय छे, सुख भोगववानी तृष्णा वधती जाय छे, धन साचववानो लोभ वधतो जाय छे, वखते जीभनी चंचळता वधती जाय छे, सारूं सारूं खावानी इच्छा वधती जाय छे, अने प्रतिदिवसे आबरूना कांकरा थता जाय छे अने अकल आकाशमां उडी जाय छे. आवी दशामां पोतानुं हित हवे केम करवुं ते सुझतुं नथी. कोई कवि कहे छे के:—

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयंती
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरंति देहं।
आयुः परिस्रवति भिन्नघटादिवांभो
लोकस्तथाप्यहितमाचरतीति चित्रम् ॥

वाघणनी पेठें ज्वरो उपजावती जरा पासे आवी उभी रहे छे, शत्रुनी पेठे रोगो देहने हणे छे, अने काणा घडामांथी पाणीनी पेठे आयुष्य ओछुं थतुं जाय छे, तो पण लोक पोतानुं हित न थाय तेवुंज आचरण कर्या करे छे ए आश्चर्यनी वात छे.

जे वखते आपणी दशा आवी थई ते वखते आपणा पण एज हाल छे. स्त्री, पुत्र, सगां, संबंधी कोई पण पछी पडखे चडशे नहि, अने आपणे पथारिये पड्या पड्या मांखियो उडाड्या करशुं त्यां आपणनो कोई भाव पण नहि पूछे अने सहु सहुनामां आसक्त रहेशे. आ वखते आपणे आपणुं शुं कल्याण करि शकशुं?

परिवार सघळो स्वार्थी छे तोपण संसारना व्यवहार चलावनारने तेनाथी जुदुं पडातुं नथी.

आपणे जोयुं के धनथी संसारमां लोको संबंध राखे छे, माटे आपणे धन मेळववानी सारी शक्ति वरावववी. गमे तेवुं धन नठारूं छे पण तेना दोष अंतरमां जाणी तेनो सारे मार्गे उप-योग थाय तो धन पण कल्याण करवानुं एक साधनरूप थई पडे छे, पण ते आपणामां सम-जण होय तोज बने. आपणे शक्तिमान् थया एटले परिवार अनुसरीने रहे छे. ए परिवार स्वार्थी छे एम जाणीने तेनो त्याग करवानी ज-रूर नथी. मात्र ए वात अंतरमां जाणीने पछीथी सर्वे परिवारने संबंधप्रमाणे संतोष उपजाववो. जो आपणां अंतःकरणमां समजण साची हशे तो धन के परिवार आपणने अंते बंधन करशे नहि. परिवार तरफथी थतुं अपमान पण जो आपणे तेनुं स्वार्थीपणुं प्रथमथी जाण्युं हशे तो

ते दुःख आपशे नहि. आपणे समजु थई कमावा शीख्या के तेज समर्थ अवस्थामां आपणे आपणा कल्याणनी वात समजी लेवी जोईए. कोई महाकवि कहे छे के:—

यावत्स्वस्थमिदंशरीरमरुजंयावज्जरादूरतो
यावच्चेंद्रियशक्तिरप्रतिहतायावत्क्षयोनायुषः।
आत्मश्रेयसितावदेवविदुषाकार्यःप्रयत्नोमहान्
संदीप्तेभुवनेतुकूपखननंप्रत्युद्यमःकीदृशः ॥

ज्यांसुधी आ मनुष्यशरीर रोगविनानुं अने स्वस्थ छे, ज्यांसुधी वृद्धावस्था आवी नथी, ज्यांसुधी इन्द्रियोनी शक्ति बराबर छे, अने ज्यांसुधी आयुष्यनो क्षय नथी थयो, त्यांसुधी विद्वान् पुरुषे पोतानां कल्याणविषे मोटुं यत्न करवुं जोईए, केमके पछी घर सळगी जतुं होय ते वखते कुवो खोदवो ते शा कामनो?

अर्थात् पछी कंई बनी शकतुं नथी, माटे कल्याणकारक साधनो प्रथमथीज संपादन करवां जोइए. शरीर अशक्त थयापछी पडतां दुःखनेलीधे संबंधियो कदी स्वार्थी अने संसार कदी असार जणाय तोपण ते पछी शुं काम लागे ? चित्तने उद्वेग थोडो थाय खरो, पण कल्याणनुं साधन कंई बनी शके नहि. पेहेलांथी जो सारी टेव पडी होय, तो छेवट तेवी सारी टेव रहे. पण पेहेलांथी विचार न कर्यो होय अने अमूल्य देह वृथा गुमाव्यो होय तो पछी तेनो बदलो पाछो क्यांथी मळे ? माटे ज्यारे जाग्या त्यारे सवार एम समझी, ज्यारथी समजण आवी त्यारथी सदाचरणमां चालवा, सद्गुण ग्रहण करवा ने ईश्वरने ओळखवानुं प्रयत्न राखवुं. आ शरीर एटलाज हेतु माटे छे. केमके आ शरीरथी ते न

बनी शक्युं-तो पछी बीजा कागडा-कुतरानां के कीडानां शरीरमां शुं बनशे? आपणने विचार करवाने बुद्धि छे तेने आपणे उपयोगमां न लईए, तो आपणमां अने पशुमां शो फेर? आपणी बाल्यावस्था गई होय, पौगंड अवस्था गई होय, किशोर अवस्था गई होय अने युवावस्था गई होय तथा वृद्धावस्था आवी होय, तोपण जो आपणे मृत्युना पाशमां पड्या न होईए अने शरीर कंईक स्वस्थ अने साध्य दशामां होय तो आपणुं कल्याण करी शकिये. मात्र आपणे आपणुं कल्याण करि लईए, एवी स्मृति थवी जोईये. छेवटनी दशा चूक्या तो पछी चूक्याज. आ शरीर एटलुं बधुं अमूल्य छे के क्षणमात्र थएलो सद्विचार पण उत्तम फळ आपे छे. कोईने शंका थाय के त्यारे अमे पण छेवटनी द-

शामां बे घडी रामनाम लेशुं, तो एनो उत्तर एज छे के, ए छेवटनी दशा आपणी आवशे एनो शो भरोसो? काळनी गतिनी केम खबर पडे? नहि ने आपणे आजेज मृत्युना पाशमां पकडाया तो पछी ए आपणो विचार शुं काम लागे? काळनी गतिनी खबर नथी पडती माटेज जे काळे ने जे घडिये आपणे वर्तमान छिये, ते काळे अने ते घडिये आपणे आपणां कल्याणनुं साधन करी लेवुं; पछी बाल्य। युवा के वृद्धा गमे ते अवस्था होय. आपणे आपणुं जे कल्याण करवुं तेज आपणने परिणामे सहाय करनारूं छे. असार संसारमांना स्वार्थियो कोई सहाय करनार नथी अने तेनी सहायता कंई काम लागवानी नथी.



*कातव कांता कस्ते पुत्रः
संसारोयमतीव विचित्रः ।
कस्य त्वं वा कुत आयात-
स्तत्वं चिंतय तदिदं भ्रातः ॥

अर्थ.

आ संसार अति विचित्र प्रकारनो छे. (ए संसारमां) तारी स्त्री कोण छे अने तारो पुत्र

---

* संबंध अने संसारनुं विचित्रपणुं तथा तत्वविचारथी पोतानु स्वरूप ओळखवानुं 'कातव' ए श्लोकथी कहे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† निःसार आ संसार तो अत्यंत भाई विचित्र छे,
क्यां कोण तारी कामिनी ने कोण तारो पुत्र छे,
हे तात तुं छे कोणनो आव्यो अहीं तुं क्यां थकी,
ए तत्वनो अंतरविषे करने विचार विवेकथी.

कोण छे ? हे भाई ! तुं कोनो छो अने क्यांथी आव्यो छो ए तत्वनो विचार कर.

टीका.

संसारनां विचित्रपणांनो कंई पार आवतो नथी. जेनाविषे कशो निश्चय बांधी न शकाय, जेना जेवी बीजी वस्तु थई पण न होय ने थवानो संभव पण न होय, जेमां थवुं जोईए कंई ने थाय कंई, जे होय खोटुं ने देखाय खरूं, जे एक होय अने थाय अनेक, जे होय एक ने मनाय अनेक, जेना गुणनी खबर न पडे, जेना रूपनी खबर न पडे, जेना रंगनी खबर न पडे, जेनी स्थितिनी खबर न पडे, जेमां कंई आश्चर्यपणुं रह्युं होय, जेनेमाटे कंई बोलायज नहीं, जेनेमाटे धार्युं न उतरे अने जेने मनुष्य बनावी न शके, त्यां विचित्र विशेषण लागु थाय छे.

जो आपणे लेश मात्र पण विचार करिये तो ते संसारनुं विचित्रपणुं आपणा जाणवा बहार रहे नहीं. एक आंबाना झाडने फळ लागे, ते सघळां फळ एकज रसथी भरेलां, एकज नामनां, एकज रूपनां, एकज रंगनां अने एकज गुणदोषवाळां होय छे; ते प्रमाणे आपणे संसारमां देखशुं नहीं. अनेक तत्वथी[1] थयेलुं आ विराट्स्वरूप (ब्रह्मांड) छे ए ब्रह्मांडमां पण दृष्टिथी न देखाय तेवा कीडाथी मांडीने देव अने ईश्वरसुधीनां जे जे शरीर छे, ते सघळां पण विराट्पुरुषमां जेटलां अने जे तत्वो छे तेटलां अने ते तत्वोथी बनेलां छे, एम शास्त्रथी सिद्ध थायछे.

१ तत्वनी संख्याविषे अनेक मत छे. पण सघळां तत्वनुं मूळ तो प्रकृति-पुरुष छे. ते थकी क्रमे करीने तत्वो थयां अने अनुकूळता प्रमाणे तेनी संख्या गणाइ.

आम छतां पण कुंभारना निभाडामां पाकेलां ठीकरांनां ठाम, विलायतमां बनतां पारदर्शक काचनां[1], वासण ने बीजी वस्तु, तथा चीनमां बनतां वधारे सफाईदार काचना. जेवां ठीकरांनां ठाम अने रमकडां, ए सघळां एक माटीमांथीज[2] बने छे. एक माटीनांज ए सघळो विकार छे. एक माटीमांथी बनेला ए अनेक आकृतिना, अनेक रंगना, अने अनेक उपयोगमां आवता पदार्थोने जुदां जुदां नामथी आपणे ओळखिये छिये; एवीज रीते संसारनां प्राणियोने आपणे एनी अनेक आकृति, अनेक रंग, अनेक उपयोग अने अनेक शक्तिथी जुदां जुदां नाम आपी

१ त्रांबापीतळनां ठाम जेटलांज काचनां ठाम हाल बने छे एम केहेवाय छे. २ माटिना विकारमां पण शरीरनी पेठे पांचेय भूतनो भाग संभवे छे. केमके पृथ्वीमांज प्रथम बीजां चार भूतना अंश रहेला छे.

ओळखिये छिये. प्रथम तो सामग्री मळेली एकज वस्तुथी बनेलां प्राणियोने जुदां जुदां नाम आपी ओळखिये छिये एज संसारनुं विचित्रपणुं. प्रत्येक प्राणीना स्वभाव अने कृत्यमां अनेक प्रकारना फेर जोईये छिये, तेना अनेक प्रकारना उपयोगो जोईए छिये तथा तेनो अनेक कारणोथी अने प्रकारोथी नाश जोईए छिये, ए पण विचित्रपणुंज कहेवाय. संसारमां बनता बनावो जे जे आपणी आंख देखिये छिये, ए मोढेथी बोली शकवाने अने लखी शकवाने समर्थ थवातुंज नथी. कोई सुखी, कोई दुःखी, कोई राजा, कोई रंक, कोई दयाळु, कोई निर्दय, कोई घातकी, कोई कामनां अने कोई न कामनां प्राणियो आपणने थोडी विचित्रता बतावतां नथी. प्राणियो जे जे दशा भोगवे छे, जे

जे कर्म करे छे, जे जे स्थितिने पामे छे, जे जे
गतिने पामे छे अने उत्पन्न थई नाश पामे छे,
ते पण आपणने थोडी विचित्रता बतावतां नथी.
एक वस्तु हाथमां लई विचार करवा बेशिये तो
एनी विचित्रतानो, अगणित अवसर वह्यो जाय
तोपण आपणे पार पामिये नहीं. ईश्वरनी लीला
अद्‌भुत छे. जुवोने एक मकाइनो पोटो (भूटियो)
लईने ते उपर विचार करवा बेशिये तो तेना
रंग उपर, तेना दाणानी गोठवण उपर, तेना
स्वाद उपर, तेना गुण उपर, तेनी आकृति
आदि उपर अने तेनी उपरनी चमरी तथा वि-
टायेला पडदा उपर केटलुं बधुं कौतुक थाय छे!
दुनियांमां जेटला कारिगरो होय तेटला भेळा
करिये अने एवो हलको पदार्थ बनाववाने कहिये
तो आयुष्य पूर्ण थाय त्यांसुधी ते बनावी शके

खरा के? कदी न बनावी शके. कदी कोई अकलवाळो कारीगर होय तो तेवी आकृति बनावी शके, पण बीजुं तेनाथी कशुं बने ज नहि. एक कोई कीडो, मांमणमुंडो अथवा इळ होय तेने कोई भ्रमरी मळे तो उपाडी लई जई पोतानां करेलां माटीनां दरमां मेले छे. ते समये ते मरी जाय छे के जीवे छे, एनो निश्चय नथी करी जोयो, तोपण अनुमानथी एम निश्चय थाय छे के, ते जीवडो ते समये अति बेभान अवस्थामां थई जाय छे. ए जीवडाने भ्रमरी पछी सदैव पोते कोई पण जातनुं पोषण करे छे, जेथी ते जीवडो कीडानुं, मामणमूडानुं के इळनुं रूप मटी जई पोते भ्रमरी बनी जाय छे, ने पांखो थई के तरत उडी ने दरनी बहार आवी पोते पण पाछो तेज धंधो करे छे. केहेवामां

एम पण आवे छे के जे कीडाने भ्रमरी लई जाय छे, तेने निरंतर भ्रमरीनी बीक अने तेथी तेनुं स्मरण थया करे छे, एटले ते पछी भ्रमरीरूप थई जाय. आ वात पण प्रसिद्धज छे. अहीं पण जो आपणे विचारवा बेशिये तो कंई थोडुं विचित्रपणुं न लागे. असंख्य आश्चर्यवाळा संसारमां केटलुंक बतावी शकाय ? खातां, पीतां, बोलतां, रमतां, जागतां, ऊंघतां, अने ए आदि अनेक क्रिया करतां, ज्यां जोईए त्यां संसारनां विचित्रपणां[1] वगर बीजुं कांई छेज नहि. जुवोने पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश ए पांच भूत कहेवाय छे. माणसनां स्थूळ शरीर पण एज पांच भूतनां बनेलां पूतळां छे, पण ते श-

१ संसारनुं विचित्रपणुं ए पण ईश्वरनी अलौकिक शक्तिने सूचवन करे छे.

रीरमांनां स्त्री-पुरुषोमांथी कोईने माता ने कोईने पिता, कोईने काको अने कोईने काकी, कोईने मामो ने कोईने मामी, कोईने भाई अने कोईने भोजाई, कोईने दीकरी ने कोईने जमाई, कोईने सासु ने कोईने ससरो, कोईने बेन ने कोईने बनेवी, कोईने शेठ ने कोईने चाकर, इत्यादि अनेक रीतिये ओळखी मनमानतो व्यवहार करी संतुष्ट थईए छिये. आ बाबतमां शुं थोडुं विचित्रपणुं देखाय छे? एथी पण आगळ जुवो. एकज कोई युवती के वृद्धा स्त्री मरण पामे तो कोई मारी पुत्री, कोई मारी मा, कोई मारी बेन, कोई मारी काकी, कोई मारी मामी, कोई मारी सासु, कोई मारी स्त्री, के कोई मारी साळी एम अनेक नामथी रूवे छे. तेमज कोई युवा के वृद्ध पुरुष मरण पामे तो

कोई मारो पुत्र, कोई मारो पिता, कोई मारो काको, कोई मारो मामो, कोई मारो भाई, कोई मारो भाणेज, कोई मारो भत्रीज, के कोई मारो साळो, एम कहीने रूवे छे. अहीं शुं थोडुं विचित्रपणुं छे? खरूं जोतां विचारिये तो मरनार शरीर विलाप करनारां अज्ञानी संबंधीनुं कोईनुं नथी. मात्र सहुए व्यवहारना संबंधप्रमाणे माने छ ने ते प्रमाणे तेनो हर्ष के शोक करे छे. समजवानुं आपणे ए छे के आ संसार विचित्र छे. ए विचित्र संसारमां खरूं जोईए तो आपणुं कोई नथी. कोण कोनी स्त्री अने कोण कोनो पुत्र छे? कोई कोईनुं छेज नहीं. मात्र मानी लीधेलां छे. आ संसारना चक्रमां अनेक अवतारो जीवने थाय छे, तेमां अमुक अमुकनो पिताज थाय के अमुक अमुकनो पुत्रज थाय एवो

नियम संभवतोज नथी. कोई समये कोई कोईनो पुत्र थाय छे तो कोई समये कोई कोईनो पिता थाय छे. वखते पिता होय ते पुत्र थई जाय छे अने पुत्र होय ते पिता थई जाय छे. एम सघळा संबंधियोनुं समजवुं. अवतार कंई एक नथी पण अनेक छे. मनुष्यना अवतारमांज तेम छे एम नहि, पण बीजा अवतारोमां पण तेमज छे. संसारमां एकठां थयेलां संबंधियोनो सहवास पण सरखो होतो नथी कोई आगळ मरे छे तो कोई पाछळ मरे छे. वखते नानुं बेटुं रहे ने मोटुं मरे ने वखते मोटुं बेठुं रहे ने नानुं मरे छे. एमां पण विचारतां आपणुं कोई नथी एम नीकळी शके छे. चैतन्य जीव शिवाय अनेक तत्वथी थयेलुं शरीर आपणुं छे ते पण आपणुं नथी, तो बीजा आपणां कैम थाय? एम

केहेवाय छे के जे आपणी साथे अंतने समये आवे तेज आपणुं. अंतने समये पाप अने पुण्य जे सकाम थईने कर्यां होय ते पराणे आपणां थाय छे. ने तेनी सहाय आपणने थाय छे. अंतकाळे तो शुं पण गमे तेवुं वहालामां वहालुं सगुं होय पण ते आपणी आधिनो उपाधिनो के व्याधिनो लेश पण अंश लई शकतुं नथी अने तेने मटाडी शकतुं नथी. बीजी वात मेली व्यवहार पक्षमां सूक्ष्मदृष्टिथी जोईए तो त्यां पण कोई कोईनुं नथी अेम जणाय छे; केमके सर्वने पोताना स्वार्थप्रमाणे सर्व पोतानुं मनाय छे. जो तेम न होय तो, केटलांक मातापिताए पोताना पुत्रोने परहेरला छे, केटलाक भाईओए पोताना सहोदरोने दूर करेला छे, केटलाक पतियोए पोतानी प्राणप्रियाओने तजी दी-

थी छे अने केटलाक स्वामीओए सेवकोने काढी
मेल्या छे, ते वात केम संभवे? गमे तेवो नजी-
कनो संबंध होय पण ते माणसथी जो आपणुं
मन संताप पामतुं न होय, अथवा ते कंई आ-
पणा उपर जोईए तेटलो प्रेम दर्शावतुं न होय
अथवा ते योग्य आज्ञामां रेहेतुं न होय, अथ-
वा अनेक पीडाथी पीडाएलुं के अंतःकरणने
दुःख उपजावे तेवुं होय तो तेने आपणे दूरमां
दूर अने शत्रु करतां पण वधारे दुशमन लेखि-
येछिये. आमां क्यां संबंध प्रमाणे पोतानुं पारकुं
रह्युं? एक माताना बे पुत्र होय ते सरखा प्रे-
मथी ने यत्नथी उछरेला होय ने परस्पर जीव
जुजवा न होय, तो पण कोई कुळनी कभारजा
घरमां आवे के ए बे भाईओनां एक लोहि विना
कारणे जुदां पडी वच्चमां मोटो अंतर पडे छे;

ने जेनी साथे कंई पण संबंध के स्नेह न होय तेवी पारका मातापितानी पुत्री ते पोतानी प्राण-प्रिया बने छे. जो खोटुं न होय तो एम पण वखते बने छे के ए स्त्रीना मोढामांथी पडेला बोल विधाताना आंकडा जेवा प्रमाणिक ने सत्य मनाय छे ने ते प्रमाणे योग्य होय के न होय पण आंधळा बनी गयेला अमल पण करे छे !! विचारो जोईए के कोई कोईनुं संसारमां छे? जेने प्राणप्रिया मानी होय तेज कोई वखते झेर करतां पण वधारे कडवी लागे छे. ने ते उंधा मार्गमां दोरी जनारी आलोक ने परलोक बगाडे छे. एम खबर पडे तो फरीने तेनुं मोढुं पण जोवुं गमतुं नथी. पुत्रनुं पण तेमज छे. बेयनी अनुकूळता होय ने बेयनो स्वभाव स्वार्थ सरखो स धातो होय त्यांसुधी परस्पर पोतापणानुं अभि-

मान रहे छे, पण तेमां कांई न्यूनाधिक थयुं तो पोतापणांमां न्यूनाधिक थाय छे. शी वात केहेवी संसारना स्वार्थनी ? आगळ कांई थोडुं नथी कह्युं एक माणसनी आपणे रोगथी पीडातो होय त्यारे चाकरी करता होईए. तेमां कदी बे दिवसनी गेरहाजरी थाय तो बे मासनी करेली चाकरी पाणीमां जाय छे, एटलुंज नहि पण उपरथी अपशद्बनो वरसाद वरसे छे. संसार साथे सगाई एम स्वार्थनीज छे. [1]चित्रगुप्त राजाने संतान न हतुं तेथी एक दिवसे पोताने त्यां पधारेला ब्रह्माना पुत्र अंगिराने ते वात निवेदन करतां तेणे तेने पुत्र आप्यो. ते पुत्रनुं बाल्यावस्थामां मृत्यु थयुं; ते वखते अंगिरा अने नारदे

---

१ भागवत षष्टस्कंध अ. १५. श्री व्यासजी ए पात्रद्वारा आपणने तेम मनावे छे एम समजवुं.

चित्रकेतु राजाने घणो बोध आप्यो छे. छेवट राजाने आ संसारनी असत्यता दृढ कराववा माटे अने संबंध सर्व खोटो छे एवो अभि-प्राय तमने उतराववा माटे ते पुत्रने सजीवन करी तेनी पासेज आ प्रमाणे केहवराव्युं छे.—

कस्मिन्जन्मन्यमीमह्यं पितरोमातरोभवन् ।
कर्मभिर्भ्राम्यमाणस्य देवतिर्यङ्नृयोनिषु ॥
बंधुज्ञात्यरिमध्यस्थमित्रोदासीनविद्विषः ।
सर्वएवहिसर्वेषां भवंतिक्रमशोमिथः ॥
यथावस्तूनिपण्यानि हेमादीनिततस्ततः ।
पर्यटंतिनरेष्वेवं जीवोयोनिषुकर्तृषु ॥
नित्यस्यार्थस्यसंबंधो ह्यनित्योदृश्यतेनृषु ।
यावद्यस्यहिसंबंधो ममत्वंतावदेवहि ॥
एवंयोनिगतोजीवः सनित्योनिरहंकृतः ।
यावद्यत्रोपलभ्येत तावत्स्वत्वंहितस्यतत् ॥

एषनित्योऽव्ययःसूक्ष्म ; एषसर्वाश्रयःस्वदृक् ।
आत्ममायागुणैर्विश्व मात्मानंसृजतेप्रभुः ॥
नह्यस्यास्तिप्रियः कश्चिन्नाप्रियःस्वःपरोऽपिवा ।
एकःसर्वधियांद्रष्टा कर्तृणांगुणदोषयोः ॥
नादत्तआत्माहिगुणं नदोषंनक्रियाफलं ।
उदासीनवदासीनः परावरदृगीश्वरः ॥

अर्थ—कर्मे करीने देवताओना, पशुपक्षीआदिना, अने माणसना अवतारोमां हुं फरतो हतो त्यारे, ते कृतद्युति अने चित्रकेतु कया जन्ममां मारां माता-पिता हतां ? (के मने पुत्र मानीने शोक करे छे.) क्रमवडे परस्पर सहु सहुनां सगां, पित्राई, मारनारा, रक्षा करनारा, मारनारा अने रक्षा करनाराथी जुदा मध्यम, द्रव्यना हेतुथी द्वेष करनारा अने उदासी थाय छे. जेम सुवर्ण-आदि वेचवानी वस्तु वेचनारना हाथमां आवे

छे ने वेचाय छे एम आवजा थयाज करे छे, तेम जीव पण योनिमां उत्पन्न करनारानेविषे फर्या करे छे. जीव नित्य छे, (कोई दिवस तेनो नाश थेज नहि.) तो पण तेनी साथे पशुआदिकनो संबंध अनित्य (खोटो नाशवंत) छे. (एम एक जन्ममां पण कोईने कोई साथे सत्य संबंध नथी.) माणसोमां जेनी साथे जेटलो संबंध छे तेटलुंज तेनी साथे ममत्व छे. एम योनिमां गयेलो एटले मातापिता आदिना संबंधने पामेलो छे तो पण ते जीव (तेने देह नथी अने जन्मपण नथी तेथी) नित्य छे अने हुं आनो पुत्र छुं एवां अभिमानरहित छे. मातापिताना संबंधमां कर्मने वश थई ज्यांसुधी वसे छे त्यांसुधीज ते मातापिताआदिनुं ते जीवनेविषे ममत्व छे. पोतानी मायाना गुणोवडे पोतारूप आ विश्वने समर्थ जीव

सृजे[1] छे; माटे (उपादान कारणपणांथी) सर्वनो (जन्ममरणवाळां देहादिकनो) आश्रय छे केमके ते पोतानी मेळे प्रकाशमान छे; जीव सर्वनो आश्रय छे एटला माटे सूक्ष्म (जन्मादि रहित) छे; सूक्ष्म छे एटलामाटे अव्यय (क्षय वगरनो) छे; ने ए हेतुथी ते नित्य छे. हित अने अहितने करनारा मित्र आदिकनी विचित्र प्रकारनी बुद्धियोनो साक्षी जीव छे, माटे ते एक (सुहृद आदिना संगरहित) छे. अने एटलामाटे तेने कोई प्रिय नथी ने कोई अप्रिय नथी, अने तेने कोई पोतानो पण नथी ने पारको पण नथी. आत्मा (जीव) सुखने, भोगवतो नथी. ते तो कारण अने कार्यनो साक्षी

---

१ जीवनुं वस्तुताए ब्रह्मपणुं छे तेथी अने चिच्छक्ति-विशिष्ट ब्रह्मनुं ईश्वरपणांथी स्रष्टापणुं छे तेथी जीव सृजे छे एम कह्युं.

छे अने एटलाजमाटे ईश्वर छे तेथी उदासी-
ननी पेठे रहे छे.

आ प्रमाणे मुवेला पुत्रनी. वाणी सांभळी
सर्व वात सत्य लागवाथी चित्रकेतु राजाने सं-
सारमां वैराग्य थयो छे ते पछी तेने ज्ञान थयुं
छे. आवी सेळभेळ वातोने विचारतां पण
आपणने एम निश्चय थशे के संसारमां कोई
कोईनुं नथी. कोई कोईनुं नथी त्यारे कोण कोनी
स्त्री अने कोण कोनो पुत्र छे? व्यवहारदृष्टिमां
पण स्वार्थमात्रज केहेवानो संबंध छे.

माटे ए मारां-तारांनी ममता मेलीने आपणे
कोणना अने क्यांथी आव्या छिये तेविषे वि-
चार करी आपणा सत्यस्वरूपने ओळखवुं जो-
इए. उपरना लेखथी सिद्धज थयुं छे के जीव

नित्य अने तेने जन्म-मरण नथी, तेथी आपणे क्यांइथी आवेला नथी पण आकाशनी पेठे सर्वदा सर्वत्र छिये. अने संबंध मात्र सर्व पंच-महाभूतना देहमांथी थयेला पंचमहाभूतना देह-नेज परस्पर छे. जीवने कशो संबंध नथी तेथी आपणे कोईना नथी. व्यवहारमां तो स्वार्थनी सगाई छे माटे पण आपणे कोईना नथी. एम विचारी निर्लेप ने निर्विकार पोतानां शुद्ध स्वरू-पने ओळखवुं. आ हाडकां चामडांनो देह छे ते आपणे नथी. ए तो पंचभूतनुं बनेलुं मळमूत्रनुं पात्र छे. एमां पोतापणुं मानवुं ए जेवुं एके बीजुं दुःखदायक नथी: केमके एमां पोतापणुं मानवाथी तेना धर्म अने तेनां दुःख पण पोतानां मानवाथी महाकष्ट वेठवुं पडे छे. पापना परि-णामरूप अने पुण्यना द्वाररूप देह आपणे

नथी एटले तेनो जे संबंध छे ते आपणो नथी. एम तत्वनो विचार करी आ संसारनी छती आंखे अंधापो आपनारी जाळमां •बंधावुं नहि. ज्यांसुधी खरो विचार नथी थयो त्यांसुधी बंधन छे. खरो विचार थया पछी होय ते बंधन पण बंधनरूप थतुं नथी.



*मा कुरु धनजनयौवनगर्वं
हरति निमेषात्कालः सर्वम् ।
मायामयमिदमखिलं हित्वा
ब्रह्मपदं प्रविशाशु विदित्वा[†] ५॥

अर्थ.

धननो, माणसोनो, के यौवननो गर्व न कर, केमके ए सर्वने काळ हरे छे अर्थात् नाश करे

---

* हवे धनादिक सर्व नाशवंत अने मायामय छे तेथी तेमां निरासक्त रही ब्रह्मपद ओळखवानुं कहे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† करतो नहीं धन जन अने यौवनथकी तुं गर्वने,
पलवारमां विकराळ काळ हरण करे छे सर्वने;
आ सर्व मायामय जगत, अळगुं करीने एमने,
कर तुं प्रवेश ब्रह्मपदमां तरत जाणी तेमने. ५

छे. मायामय आ जगत्‌ने त्याग करीने ब्रह्मप-
दने जाणीने तेमां तत्काळ प्रवेश कर.

टीका.

प्रयत्ने के वगर प्रयत्ने धन मळ्युं होय तो
पण तेथी गर्व करवो नहि. अनेक माणसना
जथावाळा होईए तो पण तेथी अभिमान आ-
णवुं नहि. गमे तेवुं सारूं यौवन प्राप्त थयुं होय
तो पण तेथी अहंकार आणवो नहि. धन अति
अनर्थनुं रूप छे ए आपणे आगळ वांचीने अनु-
भव्युं छे. ए अनर्थकारक धननो मद करनारा-
ओनो गर्व गळी गयो छे, माणसोनुं अभिमान
करनाराओनुं अभिमान भागी गयुं छे, अने यौ-
वननो अहंकार राखनाराओनो अहंकार उडी
गयो छे, ए वात कोईनो अजाणी नथी. मूळ
गर्व एज सर्व नाशनो हेतु छे, त्यां बीजुं शुं के-

हेतुं ; जेओ धनथी जनथी के यौवनथी गर्ववाळा नथी थया तेओने पण काळे एवा तो उडावी दीधा छे के जेनुं नाम के निशान पण आजे मळतुं नथी; तो गर्ववाळा नरपशुओनी तो वात ज शुं करवी ! जेओने खोंग्वारतां हजारो माणसो खमां खमां करतां, जेओ हीरामोतीनाहारोने तो इनाममां आपी देता, जेओ असंख्य सोनामोरो खरचीने रचेला बाग-बगीचामां मलकाता मोज-शोख माणता, जेओ रात कहे तो रात ने दिवस कहे तो दिवस केहेवाता, जेओ हजारो माणसना समाजमां मुख्य थई बेसता, जेओनी कीर्ति देशोदेशमां गवाती ने जेओना पदकमलमां लक्ष्मी सदाय लोट्या करतां तेवा धनना धणीओने पण कराल काल कोळियो करी गयो छे. जेओ अनेक जनोना मध्यमां

बीराजी निर्भय रेहेता, जेओना संबंधियो आख
जगत्ने जीती वळे तेवा हता, जेओनां माणसो
आखी पृथ्वीमां प्रख्यात थयेलां हतां अने जेओ
पोताने सहाय करनारा सगा-स्नेहियोनी सत्ता-
उपर झूझता तेओने पण क्रूर काल गळी गयो
छे. जेओ जुवानीना जोरमां महापराक्रम करी
पोतानी कीर्तिने अमर करी गया छे, जेओए
पोताना यौवनथी कामदेवने पण लज्जा उप-
जावी छे अने जेओ रतीने पण मूर्छा आपनार
युवावस्थाना पात्र थया छे, तेओने पण नामनि-
शान विनाना करी नांख्या छे. धनपति कुबे-
रना जेटलुं क्यांई पण धन कहेवायुं नथी, तो
ते पण आजे आपणी दृष्टि आगळ नथी. पु-
ण्यश्लोक पराक्रमी नल राजा जेवानी पण समृद्धि
आपणी नजरे आवती नथी. अर्वाचीनकालमां

मोटा मेहेलोमां कागडा कबुतर उडतां जोईए छिये. अर्जुनजेवा पराक्रमी पांडवने श्रीकृष्ण-भगवान् जेवा महाप्रतापी परमेश्वरनी सहायता हती, ते आपणे नजरे देखता नथी. एम बीजा घणा पुरुषो पोताना सहायकारक जनोनां पराक्रमथी पंकाई गया छे, पण तेनां ते मनुष्यो आपणे दृष्टिये देखता नथी. अर्वाचीनकालमां पण शुं माणसनो संबंध काम लागे छे? काल एवो तो अनियमितपणे नाश करनारो छे के, आपणुं ममत्व आपणा मनमांज समाई जाय छे. जेनेविषे आपणे सर्व सुखनो आधार राख्यो होय, जेनेविषे सर्व वाते आपणे प्रीति दर्शावता होईए ने जेनी उपर आपणे पूर्ण भाव राखता होईए अने जे आपणी उपर सर्व वाते हित करवाने तत्पर होय, तेवुं माणस एक क्षण-

वारमां परलोकनो परोणो थइ जतां आपणे जो-
इए छिये. अहिं कालनुं नाश करवापणुं आपणे
विचारिये तो प्रसिद्ध जणाइ रहे छे. जेओए
पोताना यौवनना बळनेलीधे मदोन्मत हाथियोने
पण पृथ्वीउपर पछाडी नांख्या छे. तेवाओनुं
यौवन आपणी नजर आगळ अकलित कालग-
तिये रेहवा दीधुं नथी. जुवोने हमणां पण यौव-
नथी रातामाता थयला, अनेक आशाना तरंगमां
गळकां खाता, यौवनना मदथी लालचोळ डोळा-
वाळा अने पोतानां संबंधीने संतोष उपजावता
युवानो कालना योगथी एक मटकु न मारीए
तेटली वारमां प्रेतपणाने पामी जता जोइए छिये.
विचारो के धननुं, जननुं के यौवननुं अभिमान
करवुं काम लागे तेम छे? मारूं तारूं करीने
जेटलो मोह पामिये तेटलुं दुःख थाय ते शिवाय

कशो तेमां सार नथी. निरंतर एवो अचळ नियमज छे के जे वस्तु वृद्धि पामती जती जणाती होय, तेनी साथे तेनो नाश पण थतो जातो होय. भोगीने अने भोग्यने भोगीपणांनो अने भोग्यपणांनो अधिकार जो प्राप्त थाय छे तो तेनी साथे तेने तेना अनधिकारपणानी पण क्रमकरीने अवश्य प्राप्ति छे. जे वस्तु उत्पन्न थई ते क्रमे करीने वधवा मांडे छे, परंतु समजवानुं ए छे के बहार जोतां ते वधती जणाय छे, पण परिणामे तेनो ऱ्हास थतो जाय छे. काळनी सूक्ष्म गति कोईकज वखत आपणने ए युक्ति जाणवा दे छे. आपणे एम जाणिये के आ आपणे अति मेहेनत करी मेळवेलुं धन हवे वध्या करशे के अविचळ रेहेशे, पण ते वात आपणा धार्या प्रमाणे उतरती नथी. कदी उतरे तो तेनो क्रम-

करीने थवानो नाश तो ईश्वरथी पण अटकावी शकातो नथी. ईश्वरेच्छाथी आपणने मनुष्यसंपत्ति मळी होय तेने आपणे वृद्धि पामती देखिये छिये, पण तेनुं अवळुं परिणाम अंतरमां विचारताज नथी. देखवामां मनुष्यसंपत्तिनी वृद्धि लागती होय पण तेनां सत्पणानो नाश कोईथी अटकावी शकातो नथी. माता-पिता, भाई-भोजाई, काका-काकी, मामा-मामी, इत्यादि आपणाथी मोटां अने बीजां आपणाथी नाना संबंधिने आपणे आपणां सहायकारक जोई अति आनंद पामिये छिये. एनो परिणामे काल नाश करे छे तेनुं जाण थयावगर ज्यारे आपणे कोईनो पण काले भक्ष करेलो जोइए छिये, त्यारे आपणे केटलुं कालनुं क्रूरपणुं अने संबंधनुं दुःख जाणिये छिये? निर्दय काल आपणा करेला वि-

लापशी, के आपणने थतां दुःखथी डरतो नथी. आम काल सर्वने नाश करनारो छे. युवावस्था पामीने आपणे, एम जाणिये के हुं हवे मोटो थयो अने जोरावर थयो, पण विचारिये तो आपणी जे अवस्था आवी तेनो खरेखर नाश थयो छे. कोई पण पदार्थनो निरंतर नाशज छे. युवावस्था अति अनर्थनु मूल थाय छे तेनु कारण ए छे के तेनुं अस्थिरपणुं जाणवामां आवतुं नथी. जेमणे कालनी गतिनो नियम जाण्यो छे अने जे संसारना पदार्थोनो नित्य नाश जाणे छे ते-ओनुं यौवन अनर्थकारक नहि पण उलटुं क-ल्याणकारक थई शके छे. जेओए एवी रीते पोतानुं यौवन निर्दोष राखी कल्याणकारक काम करनारूं कर्युं तेनुंज यौवन सफल छे, अने बी-जानुं ते मळयुं होय तोपण निष्फल अने दुःखना

डुंगर आपनारूं छे. काल जेनो निरंतर नाश कर्या करे छे, एवां धननो, जननो अने यौवननो गर्व करवो नहीं. जेनो एक क्षण पण भरोसो नहि, तेना तरफनुं अभिमान शा कामनुं? अहिं सरलपणाथी समजवानुं ए छे के, धन जन अने यौवन ए सघळां क्षणमां नाश थई जनारां छे, माटे मळेलां धननो सदुपयोग करी धर्म अने परोपकारार्थे वापरी ते धन मळवानुं सफलपणुं करवुं. मळवेलुं के मळेलुं धन नाश थतुं जायछे छतां नाश थतुं देखातुं नथी अने तेनाथी अनेक संसारना विषयमां सुख लेवाय छे, तोपण तेथी तेनुं कशुं सफलपणुं नहि थवाथी पूरणीमां भरेला कांकरा बरोबर छे. माटे जो धनवान् थया होइए अने सारो समय होय, तो तेनो सदुपयोग करवो एज तेनी प्राप्तिनुं सफलपणुं छे. सारा

सज्जनोना समुदायवाळा के कुटुंबवाळा होईये तो तेथी अभिमान आणवुं नहि, पण तेने बदले ईश्वरनो उपकार मानी जेम बने तेम परोपकार करवामां प्रवृत्त थवुं अने परनी पीडा टाळवामां प्रीतिवान् थवुं. आपणे महासमर्थ अने मनुष्यना जथावाळा थया छतां आपणाथी तेनो सदुपयोग न थयो अने कोइनुं सारूं करी न शक्या के कोइना दुःखमां भाग न लई शक्या तो ए आपणुं समर्थपणुं निष्फळज छे. पशुपक्षियो करतां पण आपणे उतरता केहेवाईए, जो आपणे आपणां बळियां मनुष्योनी महायताथी कांई सारूं न करी शकिये तो. आपणां धनथी के आपणां जनथी कोईने पीडा थाय तो आपणे असाधुमां गणाई तेने योग्य यातनाने भोगविये छिये. कदि आपणे सारां संबंधी-बांधवोना जथावाळा थया

अने अनेक सुख तेथी भोगवता थया पण आ-पणां ते सगां-संबंधियो जो आपणने कल्याणने मार्गे नहि चडावतां अकल्याणना मार्गमां दोरे तो ते मनुष्यो छे तोपण नथी अने ते सबळांनी प्राप्ति निष्फल छे. भागवत पंचमस्कंधना १८मा अध्यायमां कह्युं छे के—

गुरुर्न स स्यात्स्वजनो न स स्यात
पिता न सस्याज्जननी न सा स्यात् ।
दैवं न तत्स्यान्न पतिश्च स स्या-
न्नमोचयेद्यः समुपेतमृत्युम् ॥

मृत्यु प्राप्त थयेलाने जे छोडवे नहि ते गुरु होय तो पण गुरु नहि, स्वजन होय तो पण स्वजन नहि, पिता होय तोपण पिता नहि, माता होय तोपण माता नहि, पति होय तोपण पति नहि, अने दैव होय तोपण ते दैव नहि.

अर्थात् ए सघळां सन्मार्गमां जोडे अने कल्याणनो मार्ग बतावे तोज ते खरां संबंधी समजवां.

आपणने आपणां संबंधी जो सन्मार्गमां जोडे नहि अथवा एनी सहायताथी आपणे अभिमान शिवाय कशुं सारूं करी शकिये नहि तो ते आपणांज नथी. एवां माणसो करतां तो शत्रुओ पण सारा केहेवाय छे के, जेनी सामे सामे पगले मरवाथी वीरपुरुषोने उत्तम पद मळे छे. आपणे सारु ए समजवा के मळेलो जनसमूह नाशवंत तो छेज माटे तेनी सहायतामां पोते उत्तम काम करी लेवां अने करावी लेवां अने व्यवहारमां पण सहु कोईने संतोष थाय तेवी सरलताथी वर्त्तवुं. एमनो आपणने के आपणनो एमने ज्यांसुधी काले वियोग कराव्यो नथी, त्यांसुधी जे करवुं हशे ते थई शकशे. ईश्व-

रेच्छाथी यौवन प्राप्त थयुं तो ज्यांसुधी ते-
नी हयाति छे त्यांसुधीमां जे बने ते सत्क-
र्म करी लेवां. लोको कहे छे के मात्र पैसा
मेळववामाटेज आ युवावस्था छे, पण ते मोटी
भूल केहेवाय. जे कांई सारूं काम करवुं होय
तेनेमाटे युवावस्था योग्य छे. युवावस्था पछी
वृद्धावस्था आवशे एनेमाटे आपणने कशी खा-
तरी नथी. वळी कदी तेम दैवयोगथी बने पण
ते अवस्थामां इन्द्रियोनां शिथिलपणाथी कंई थई
शकतुं नथी. कोई कहे के अनर्थकारक युवाव-
स्था वश्य केम रहे ने केम सत्कर्म करवा दे?
पण ए बोलवुं थोडा विचारनुं छे. प्रथम जेमणे
तेनो प्रतिक्षणे थतो नाश जाण्यो तेने एम थायज
नहि. वळी सरसाई तो तेज केहेवाय के ज्यारे
सत्कर्म न करवा दे तेवी अवस्थामां पण सत्कर्म

करवां. युवावस्थानुं अभिमान कशुं नहि करतां जे कांई करवानुं होय तेनेमाटे वाट जोवी नहि. जेवो योग आजे आव्यो होय तेवो फरीने काले आवतोज नथी, तेमज जेवी स्थिति आज होय तेवी काले रहेतीज नथी. जन्मथी मांडीने जेटलुं आयुष्य भोगववानुं होय तेमां जेटला क्षण उत्तम कार्य करवामां जाय तेटलाज सफळ थाय छे. भागवत द्वितीयस्कंधना त्रीजा अध्यायमां कह्युं छे के—

आयुर्हरति वै पुंसामुद्यन्नस्तं चयन्नसौ ।
तस्यर्ते यत्क्षणो नीत उत्तमश्लोकवार्तया ॥

जे क्षण ईश्वरज्ञानसंबंधी वातोमां गाळवामां आवे छे, ते क्षण विना माणसोनुं जे आयुष्य छे, तेने उगतो अने आथमतो सूर्य नाश करे छे.

आ प्रमाणो आपणे पण एम समजवुं जे प्र-

तिक्षणे आयुष्यनो नाश थतो जाय छे, माटे सर्मथ अवस्थामां जेटला क्षण कल्याणना साधनमां अने परोपकारमां नीकळे तेटलाज क्षण सफल छे. बाकी जीववुं अने विषयसुख भोगववां तेतो झाडवांओने अने पशुपक्षि आदिने पण छे. आपणे उत्तम मनुष्यावतार पामीने वृक्षनी के पशुपक्षीनी दशामां रहिये, त्यारे आपणुं आ मनुष्यत्व वृथा थाय एमां कंई आश्चर्य नथी. आपणे अनेक मेहेनत करीने मेळवेलुं धन जीव करतां पण जाळवी राखिये छिये अने तेने वृथा वापरी नथी नाखता, त्यारे आ अनेक पुण्यरूप प्रयत्नेथी मळेलो हजारो हिराथी पण हठे नहि तेवी किमतनो मनुष्यदेह अने तेमां वळी सर्व इन्द्रियोनी शक्तिने सबल राखनारी युवावस्था आपणे जो वृथा जवा दईए तो ए आपणी के-

टली भूल अने केटलुं अज्ञान? गई वस्तु अने गयेलो समय कोई दिवस पाछां आवेल नथी ने आवे पण नहिज. माटे खोटुं अभिमान मेली नवी अवस्थामां उत्तम काम करवानुं अभिमान राखी ते प्रमाणे वर्ती सत्पुरुषोनी पंक्तिमां आववुं.

आ सर्व जगत् मायामय छे. जे कांई आ-पणे सांभळिये छिये अने जे कांई दृष्टिये देखिये छिये, ते नामरूपात्मक सर्व जगत् छे. पिंड अने ब्रह्मांडनो जगत्मां समावेश थाय छे. ए जगत् मायाथी रचायुं छे ने तेथी मायानुं कार्य छे. आ कार्य-कारणरूप मायामय जगत्मां ईश्वर व्यापी रहेल छे, माटे दृश्य अने असत् जगत्नो त्याग करवो. अर्थात् ईश्वरनुं स्वरूप जे जगत्मां व्यापी रहेलुं छे तोपण भिन्न छे, ते

ईश्वरस्वरूप ओळखवामाटे मायाए रचेलां असत्य जगत्‌ने ओळखी तेनो त्याग करवो. त्याग करवो एटले कांई एक पदार्थने जेम घा करीने नाखी दईए छिये तेम कांई तेनो त्याग थतो नथी पण मात्र अनादि सत्यस्वरूप ईश्वरनुं मत्यपणुं अने ते ईश्वरनी अविद्या मायाथी थयेलां नाशात्मक जगत्‌नुं असत्यपणुं यथार्थ समजवुं; केमके एटला विवेकविना ब्रह्मपदने जाणवाने पात्र थवामां मोटी न्यूनता रहे छे.

आटलुं थया पछी ब्रह्मपदने जाणीने तेमां प्रवेश करवो. कोईपण एकदेशी भौतिक पदार्थमां तेमाथी नानो बीजो एकदेशी भौतिक पदार्थ जेम प्रवेश करे छे, तेवि रीते ब्रह्मपदमां प्रवेश संभवतो नथी. केमके एकदेशी नथी. ईश्वरना निर्विकार शुद्ध स्वरूपने ब्रह्मना नामथी

बोलाय छे. जेने कोई पोतानुं नथी, जेने कोई पारकुं नथी, जे सर्वनो साक्षी छे, जेनी सत्ताथी वायु वाय छे, जेनी सत्ताथी सूर्य तपे छे, जेनी सत्ताथी वरसाद वरसे छे, जेनी सत्ताथी चंद्रादि तारामंडळ प्रकाशे छे, जेनी सत्ताथी सर्व ऋतुओ पोताना नियमप्रमाणे वर्त्या करे छे, अने जेनी सत्ताथी सर्व मर्यादाओ सचवाई रही छे, ते निर्विकार जगन्नियंतानुं ब्रह्म एवुं नाम कहेवाय छे. एनो कोई दिवस अंत नथी, ए कांई क्रिया करतुं नथी, ए सर्वनु आदि छे, एने कोई आदि नथी, एनो कोई पार पामतुं नथी, एने अग्नि तपावी शकतो नथी, एने वायु सुकवी शकतो नथी, एने पाणी सोडवी शकतुं नथी, एने कशी आकृति नथी, एने कशुं रूप नथी, एने कशो रंग नथी, एने आंख दे-

खती नथी, एने मन पोहोंची शकतुं नथी, एने वाणी पोहोंची शकती नथी, एने प्राण पोहोंची शकता नथी अने तेने काल पण आधीन थई रहे छे एवुं ए ब्रह्म छे. एने ओळखवा माटे वेद उपनिषद पुराण सदायकाळ जाग्रत छे. श्रीभगवाने अर्जुनने कह्युं छे केः—

नयद्भासयतेसूर्यो नशशांकोनपावकः ।
यद्गत्वानंनिवर्तंते तद्धामपरमंमम ॥

जेने सूर्य प्रकाश आपतो नथी, जेने चंद्रमा प्रकाश आपतो नथी अने जेने अग्नि प्रकाश आपतो नथी, तथा जेने पामीने पाछुं पडवुं नथी पडतुं, ते मारूं परम धाम छे अर्थात् सूर्य चंद्र अने अग्नि जेनी सत्ताथी प्रकाशे छे एवुं स्वप्रकाश छे, अने जेने पाम्या पछी एटले ओळख्या पछी जन्म मरण रेहेतां नथी, तेज मारूं एटले परमेश्वरनुं उत्तम पद छे.

आनां विवेचनमाटे अहीं जो उतारो करिये तो तेनो अंत न आवे एटलुं लखवानुं थाय. तत्व मात्र विचारिये तो सर्वनुं एकज आवी रहे छे. जेनी जेटली शक्ति अने अनुभव ते प्रमाणे ब्रह्मनां विवेचनमां प्रवर्त थया हशे, परंतु वेद-उपनिषद आदि एज तेनुं खरूं ज्ञान करावनार छे. सर्वव्यापकपणानेलीधे हजारो हाथ, हजारो पग, हजारो आंख्यो, हजारो माथां, हजारो मोढां, अने हजारो कानवाळुं केहेवाय छे. सर्वने उत्पन्न करनार ने नियममां राखनार, जेनुं रूप चितव्यामां न आवे एवुं, मायाथी पर, अने महातेजस्वी स्वयंप्रकाश छे, ते ब्रह्म नानामां नानुं ने मोटामां मोटुं छे.

यतोवाचोनिवर्तंते अप्राप्यमनसासह ।

जेने पहोच्याविना वाणी मनसहित पाछी वळेछे.

इत्यादि उपनिषद्नां वाक्यो पण तेनी महत्ता जणावी आपे छे. ए पदने ओळखवुं ए कांई सेहेज वात नथी. अनेक प्रकारनां उत्तमोत्तम साधनोथीज तेने ओळखवाना अधिकारी थवाय छे. महान् पुरुषो, विषयमार्गमां दोरायां नजरां मनने ईश्वरनी भक्तिथी अने वैराग्यथी वश करे छे, यम अने नियमआदि योगना मार्गथी चित्तने एकाग्र करे छे, ईश्वर उपर श्रद्धा राखे छे, ईश्वरनी कथाओ सांभळे छे, सुख-दुःखमां सरखुं मन राखे छे, कीडाथी मांडीने ब्रह्मा पर्यंत सर्व प्राणियो उपर समदृष्टि राखे छे, सदैव वैराग राखे छे. पोतानो धर्म दृढ पाळे छे, ईश्वरेच्छाथी जे मळे छे तेमांज संतोष राखे छे, कोईनो दुष्ट संग करता नथी, विवेक-विचार कर्या करे छे. क्षमा दया धीरज तितिक्षा अने शांति आदि

उत्तम गुणोने पाळे छे, कोईने पीडा पमाडतो नथी, सर्वने पोतानी समान देखे छे. परनी पीडाथी हृदयमां पीगळी जाय ले अने आ पंचभूतना देहमां अने तेने पाछळ लागेलां स्त्री-पुत्रादिकमां के धन-धाममां ममता के स्नेह नथी. त्यारेज ते ब्रह्मपदने ओळखवाना पात्र थाय छे. माटे आपणे पण अनेक साधनयुक्त थई निर्मळ अंतःकरणे ए स्वरूपने ओळखवुं के, जेने ओळख्या पछी कशी बीक रहेती नथी. हवे ते ओळखीने प्रवेश करवो एटले एज के ए ब्रह्मनी साथे निजस्वरूपनी एकता करवी. पूर्वनां पुण्यनी प्रबलताथी, सत्वगुणी मनोवृत्तिथी, अने निर्मल बुद्धिथी सत्पुरुषद्वारा ब्रह्मपदमां एकता थतां विलंब लागतो नथी. जे समये ब्रह्मपदने ओळख्युं ने ओळखीने तेमां प्रवेश कर्यो ते समये

सर्व संशय टळी जाय छे अने अनेक तत्वथी थयेलो देह मिथ्या समजाय छे. ज्यांसुधी तेम नथी थतुं, ज्यांसुधी शरीरनो धर्म पोतामां मनाय छे, ज्यांसुधी देह स्त्री पुत्र धन आदिमां ममत्व रहे छे, ज्यांसुधी विषयोविषे अंतःकरण फर्या करे छे. ज्यांसुधी दया दान ध्यान ईश्वराराधन भक्ति श्रद्धा अने समता आदि करातां नथी, ज्यांसुधी राग-द्वेष तजाता नथी, ज्यांसुधी सुख-दुःख टळतां नथी, ज्यांसुधी कुलधर्म तथा ज्ञातिधर्म पळातो नथी, ज्यांसुधी विवेक अने वैराग्य अंतःकरणमां आवता नथी, ज्यांसुधी मन अने इंद्रियो वश थई शकतां नथी, ज्यांसुधी असत्य तजायुं नथी, ज्यांसुधी परदारा परद्रव्य अने परद्रोहथी पराङ्मुख थवायुं नथी, ज्यांसुधी आशा-तृष्णाना अंकुर उग्या करे छे, ज्यांसुधी

असंतोष चारेकोरे अथडाव्या करे छे, ज्यांसुधी काम क्रोध लोभ मोह मद अने मत्सरने मार्या नथी, ज्यांसुधी पूर्वपुण्यनो उदय थयो नथी, ज्यांसुधी साचो सत्संग थयो नथी, ज्यांसुधी साचां शास्त्रोनुं श्रवण थयुं नथी, ज्यांसुधी आस्ता अंतरमां आवी नथी, ज्यांसुधी संसारमांथी पार उतरवा उत्कंठा थई नथी, ज्यांसुधी दुःसंगति गई नथी अने ज्यांसुधी हृदयचक्षुनी आडुं आवी गयेलुं अज्ञानरूप पडळ टळ्युं नथी, त्यांसुधी ब्रह्मपदने ओळखातुं नथी अने तेनी अने आत्मस्वरूपनी एकता पण थई शकती नथी. माटे सद्विचार ने सद्विवेकथी ते पदने ओळखी तेने पामवाना प्रयत्नमां तत्पर थवुं जोइए. जो आपणे आपणी मेळे उद्यम करशुं तो तेमां सहाय आपनारां सत्शास्त्र अने सत्पुरुषो पण

पृथ्वीमां अनेक छे, ते आपणने उत्तम मार्गे चडावी आप्या विना रहेशे नहि. माटे ते उत्तम मार्गे चाली आ अमूल्य मनुष्यजन्म सफळ करवो, केम के फरीफरीने आवो वारो आववो घणो कठण छे.

देवऋण, ऋषिऋण अने पितृऋण उतर्या विना काचां अंतःकरणे वगडामां जई राख चोळी जटा बांधी बेसवाथी के अनेक काम्य कर्मो करवाथी ब्रह्मपद ओळखातुं नथी, के तेनी साथे आत्मस्वरूपनी एकता थती नथी. जो निर्मळ अंतःकरण अने सत्‌शास्त्रनो संग होय तो स्वाश्रमधर्म पाळतां अने व्यवहारमां रेहेतां अनेक साधनोए ते पदनी प्राप्ति थाय छे. ए पदनी प्राप्ति थया पछी जे कांई व्यवहार थाय छे ते उत्तमोत्तम अने बाधरहित थाय छे अने तेम

छतां कोई पण जातनुं बंधन थतुं नथी ए उत्तम बोधनो चमत्कार छे. प्रतापी पृथुराजाए बोध थया पछी राज्यासन भोगव्युं हतुं, ब्रह्मनिष्ठ जनकराजाए बोध थया पछी राज्यासन भोगव्युं हतुं. मर्यादा पुरुष रामचंद्रजीए ज्ञान थया पछी पृथ्वीनुं पालन कर्युं हतुं. कृष्णना सखा अर्जुने ज्ञान थया पछी सैन्यनो संहार करी राज्यसंपादन कर्युं हतुं. आम उत्तम बोधथी व्यवहार पण श्रेष्ठ थाय छे, ने तेथी बंधन पण थतुं नथी. आमां पण दोषदृष्टि कोई करे तो ते मूर्खतानुं काम छे. केम के एवा ज्ञानियोमां दोषदृष्टि करवी एज मूळ अज्ञाननुं कारण छे. सारांश आपणे एवो लेवानो छे के ब्रह्मपदना बोधथी ने तेनी आत्मस्वरूपसाथे एकताथी जन्म-मरणनो फेरो टळे छे, ने व्यवहार तथा परमार्थ सुधरे छे.

जोके संसारथी बीक पामी जता रेहेनारा घरबार अने सगां कुटुंबीने तजी वनमां चाली नीकळे छे, ते तेना विचारप्रमाणे संसारनो त्याग कर्यो समजे तोपण ज्यां जाय त्यां संसारनो त्याग थतो नथी, मनथी त्याग थाय तोज तेनो त्याग समजवो. तोपण घरबारमां रही संसारनो अनुभव करतां बोध लेवो अने कल्याणनुं साधन करवुं ए कांई थोडुं आश्चर्यकारक के कठण काम नथी. खरो संसारनो त्याग तो ज्यारे ज्ञान थईने जन्म-मरण मटे त्यारेज समजवो; केम के जन्म-मरण लीधां करवां पडे एज संसार छे. ते शिवाय बीजो कांई संसार अनुभवमां आवतो नथी.



***नलिनीदलगतजलवत्तरलं**
तद्वज्जीवनमतिशयचपलम् ॥
क्षणमपि सज्जनसंगतिरेका
भवति भवार्णवतरणे नौका† ॥

अर्थ.

कमळनां पानमां पडेलुं पाणीनुं टीपुं जेवुं म-
नोहर छे अने जेवुं ते चपल एटले क्षणवारमां-
नाश थई जनारुं छे, तेनी पेठे जीवन पण मनो-

* हवे जीववानो कोईने भरोसो नथी, माटे जेम बने तेम जलदीथी संसारसागर तरवामाटे सत्संग करवानुं कहेछे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† जेवुं मनोहर छे पडेलुं जल कमलना पानमां,
तेवुं मनोहर अति चपळ जीवन समजवुं मानमां;
क्षणवार पण जे सज्जनोनो संग लेश कराय छे,
ते एक भवसागर उतरवा वाणरुपे थाय छे.

हर छे अने घणुंज चंचळ गतिनुं अर्थात् क्षणमां नाश थइ जनारुं छे; माटे क्षणवार पण जो सत्पुरुषोनी संगति थई होय, तो ते संगति संसाररूप समुद्रने तरी जवामां वहाणरूप थायछे.

टीका.

मीठां पाणीनां तळावोमां कांठानी नजीकमां कमळो उत्पन्न थाय छे. ए कमळनां पानमां वखते तळावनुं के झाकळनुं पाणी पडे छे. तेनो लेशभाग ते पानमां रहि जवाथी जेवो कोइ मोतीनो दाणो होय तेवी तेनी आकृति अने स्वच्छ शुद्ध स्फाटिकमणि होय, तेवो तेनो रंग देखायछे अने तेथीज ते मनमां अतिप्रिय लागे छे. साचां मोती जेवुं तेम स्फाटिकमणि जेवुं ते पाणीनुं टीपुं देखवामात्र छे, पण परिणामे क्षणवारमां तेने पानउपरथी खरी पडतां वार लागती नथी.

सुंदर देखातां फटकीयां (मीणीयां) मोतीने तो कंइपण फूटतां वार लागे, पण पाणीनां मोतीने तो कंइ पण वार लागती नथी. दीठुं न दीठुं के जरा पवननो लेरखो लागतां के कंइ स्पर्श थतांवेंत खरी पडी नाश पामे छे. आपणुं जीवन पण तेवुंज छे. कोइ एवी जातनो तो तेमां मोह रहेलो छे के ते आपणने सर्व करतां प्रिय लागे छे कोइ मूर्ख के कोइ समजु होय तेने सर्वने जीववुं बहु गमे छे. कोइ थोडा विवेकना माणस पासे जइने आपणे बेसीये अने तेनी वृद्धावस्था छे अने तेथी थतां दुःख जोइए, तोपण तेनामां जीववानी आशा कंइपण ओछी थयेली देखिये नहीं. पोतानी हयाती सर्वप्राणीयोने प्रिय छे. जो जीवन होय तोज आ पंचभूतनो देह पवित्र काम करी शके छे, नहि तो ते एक लाकडां जेवो ने नकामो थइ

पडे छे. हयातीमां जे कांइ थाय छे ते जीवनथी थाय छे. ईश्वरेच्छाथी एवुं मनोहर जीवन पण जेम पाणीनुं बिंदु क्षणमां नाश थइ जनारुं छे, तेम क्षणमां नाश थइ जनारुं छे. पाणीनां बिंदुने पवननो लेरखो क्षणवारमां हतुं न हतुं करी नाखे छे, तेम काळरूप पवननो झपाटो जीवनने हतुं न हतुं करी नाखे छे. जेम पाणीनुं टीपुं दृश्य होवाथी तेनुं मनोहरपणुं अने नाश बन्ने दृष्टिथी देखिये छिये, तेम जीवन कांइ दृश्य वस्तु नहि होवाथी तेनुं मनोहरपणुं के नाश देखातो नथी; पण तेना मनोहरपणानो ने नाशनो अनुभव आपणाथी अने बीजानाथी विचारिये तो सहजवारमां थाय छे. जो जीवन पाणीनां टीपांनी पेठे क्षणवारमां नाश थइ जाय तेवुं न होत, तो आजे दुनियामां माणस विपरीत परिणामो

जुवे छे, ते जोवानो संभव रहेत नहि. नाशवाळी तो सर्वे वस्तुओ छे. जेटली वस्तुओ छे तेटलीनी हयाती जेम जेम वखत जतो जाय छे तेम तेम क्रमे करी ओछी थतीज जाय छे, ए तो साधारण नियमज छे. आम छतां पण जीवनना संबंधमां ते ओछुं थतुं जतुं पण अमुक काळ सुधी रही शकशे, एवी खातरी करी शकाती नथी. आजकाल कळाकौशल्यनो अने बुद्धिबळनो वधारो सीमा वगरनो थइ गयो छे. जे जे बनावो आपणे जुना इतिहासोमां सांभळीये छिये, ते ते सर्वे आजना बुद्धिवानोए बनावेला जोइए छिये. मात्र आज सुधी एवो कोइ विद्वान् बुद्धिमान् नथी थयो के जेणे जनारुं जीवन रोकी राख्युं होय, अथवा गयेलुं जीवन पाछुं लइआवी आप्युं होय. आगगाडियो अने आगबोटो, तेने

चलावनारां वराळयंत्रो, कापडना संचा अने तेमने चलावनारां महाराक्षसी वराळयंत्रो, हवाना दीवानी युक्तियो, विजळीना दीवानी युक्तियो विजळीथी तार मारफते संदेशो पोचाडवानी युक्तियो, तेज अने ओषधिथी छबी पाडवानी युक्तियो, जेने आधारे दूरना बे माणसो नजीक बेठा होय ने वातो करे तेम वातो करे तेवा तारनां यंत्रो अने बीजा अनेक यंत्रो एवा तो आपणे वर्तमानकाळमां जोइए छिये के जुना इतिहासोनी वातो तो भूलीज जइए छिये. हस्तक्रियानां एवां एवां कार्यो आज बने छे के जेने जोइने आपणने एम थयाविना रहेज नहि, के आ वस्तु माणसनी बनावेली रखे न होय. आगळना बळिया पुरुषो जळने वश करता, वायुने वश करता, तेजने वश करता, ने

टुंकामां कहीये तो सघळा ईश्वरी चमत्कारने वश करता आपणे सांभळ्या छे. पण आजे तो तेवा पुरुषोनां कृत्योने आपणे प्रत्यक्ष देखिये छिये. आवा महाउदयना वखतमां पण कोइ एवो पुरुष नीकळ्यो छे, अथवा निकळवानो छे के जेणे कोइ पण प्राणीने जीवन अर्पण कर्युं होय? विचारी जोशो तो जीवन आपी शके एवुं दुनियांमां कोइ नथी. पण एटलुं छे के कोइ प्राणीनां जीवनने नाश थवाना निमित्तरूप थनारा तो आम तेम घणा रखडे छे. जुओ के जीवन आ प्रमाणे केवुं अतर्क्य छे अने ते साथे ते केवुं मोघुं ने उपयोगी छे. घणा खेदनी वात छे के तेना प्रमाणनेमाटे आपणी पासे कशुं प्रमाण नथी. एना निश्चयमाटे मोटा बुद्धिवानोनी बुद्धि बेहेर मारी जाय छे, विचारवंतोना विचार विह्वळ

थइ जायछे, डाह्या लोकोनुं डहापण डुबी जाय छे अने विद्वानोनी विद्या वांझणी थाय छे. आ हाडकां चामडांना देहरूप मंदीरमां ईश्वरेच्छाथी एवी रीते ते गोठवायुं छे के तेनी शक्तिने आधारे अनेक प्रकारना व्यवहार करी शकाय छे, छतां तेनी गोठवणविषे कशी माहिती मळी शकती नथी. पाणीना टीपांने नाश थवानो संभव छे ते जाणीये छिये, परंतु तेना करतां पण जेनो ओछो भरोसो राख-वो जोइये एवां जीवनना संबंधमां कशुं आपणे जाणता नथी. ज्यारे ज्यारे आपणे जेने सोणामां मायुं दुखवानो पण संबंध न होय तेवां माणसने आंख वींचीने उघाडिये तेथी पण थोडा वखतमां जीवनथी विखुटा पडेला जोइए छिये, त्यारे क्ष-णवार आपणने वैराग्य उत्पन्न थइ तेना चंचळ-

पणां (क्षणमां नाश थइ जवापणुं) नो अनुभव थाय छे, पण आ वात आपणे पाछी व्यवहारमां पडी जइए छिये त्यारे भूली जइए छिये अने बळद जेम गाडीनुं धोसरुं उपाडी तेने खेड्या करे छे, तेम आपणे व्यवहारनुं धोसरुं उपाडी तेने शक्ति प्रमाणे खेडिये छिये. आपणुं जीवन छुटी जशे तो आपणे शुं करशुं, शुं कर्युं अने शुं करवानुं छे, ए विचार बीलकुल सूजतो नथी. ईश्वरे विचारवा अंतःकरण आप्युं छे तेम छतां सारासारनो विचार न थाय ने जीवन व्यर्थ चाल्युं जाय तो पछी अनेक दुःख भोगववाने योग्य थइए एमां कंइ आश्चर्य जेवुं नथी सिंहनां मोढामां हरण पड्युं होय, बीलाडीना मोढामां उंदर पडेलो होय अने गरुडनी चांचमां सर्प आवेलो होय ने तेनुं जीवन

जेम संदेह भरेलुंछे, तेम माणस आदि सर्वे प्राणियो काळना मोंढामां पडेला होवाथी तेनुं जीवन संदेह भरेलुं छे. आयुष्यनो नाश एज जीवननो नाश केहेवाय. जीवननी हयातीमाटे जोके कशो पण भरोसो नथी, तोपण ते जो वधारे समय सुधी भोगवाइने तेमां कोइ कल्याण करनारां काम शरीरथी, वाणीथी के मनथी करी शकय, तो ते अति वखाणवा योग्य अने हजारो हीरानी कींमतने पण हठावे तेवुं कीमती छे. ए जीवनना जोरथीज आ अपवित्र देह पवित्र केहेवाय छे. गयेलुं जीवन पछीथी करोडो सत्कर्म करवामां आवे के सोनामोरोना भरेला भंडारो खरचवामां आवे तो पण पाछुं मळतुंज नथी. ए जीवनना गुणमां पण पार नथी तेम तेना अवगुणमां पण पार नथी. पण ए चंचळ जीवन भोग-

ववाने आपणे पात्र थया होइए तो ते एवी रीते भोगववुं के जेथी ए जीवन सफळ केहेवाय अने कोइ पण काळे अनेक संसार संबंधी दुःखना पात्र न थवाय. क्षणवार पण सज्जनोनी संगति जो एवां जीवनना वखतमां थाय तो ते क्षण पण एवो उत्तम थाय छे के आ संसाररूप सागर तरवामां ते वहाणरूप बने छे. कीडाथी मांडीने मनुष्य पर्यंत अनेक अवतारो छे. ए अवतारो कर्मना योगे लेवा पडे छे. प्रारब्धयोगथी मनुष्यजन्म मळे छे, ए जन्म जो जाण्याविना जतो रह्यो तो पाछा चोराशी लक्ष अवतारनां असह्य दुःखो भोगववां पडे छे. आटलामाटे जीवितने सफळ करवा सत्पुरुषनी संगति करवी कही छे. उपरथी आ-छां स्वच्छ वस्त्र पेहेरता होय, प्रतिक्षणे मुछ

मरोडता होय, सुवर्णादिकनां अनेक आभूषणो घालता होय, चांखडियो उपर चडीने चालता होय, प्रारब्धयोगथी लक्ष्मीथी थनारां सुखनो आनंद लेता होय, कदी उदारता देखाडवा दान पण देता होय, मीठा मीठा प्रसाद लेता होय, माणसोनां मनने गमे तेवी विविध वातो केहेता होय, निर्जन जग्यामां के पवित्र स्थळमां रेहेता होय, मनुष्यमां मोटुं मान मेळवता होय, चस्मां चडावता होय, मनगमता मोवाळा राखता होय, विचित्र प्रकारना वेश पेरता होय छडी अने छत्री साथे राखता होय, उचां आसन उपर उभीने रागडा ताणता होय, भाषण भणी जता होय, मोटा नातवरा करता होय, फूलेकां चडावता होय, भेळा मळी चहा पीता होय के राख चोळी जंगलमां जइ बेसता होय एवा पुरुषो

सत्पुरुषनी गणनामां होय एम विश्वास राखी शकातो नथी. सत्पुरुषनी उपरथी आछाइ जोवानी नथी, पण तेनां अंतःकरणनी निर्मळता ने सद्गुण जोवाना छे. सत्पुरुषोना पवित्र गुणो तेनां उपरनां बेडोळपणाने के सहजमलिनपणाने अत्यंत शोभा आपे छे. सत्पुरुषो परने थतीं पीडा पोते सहन करी शकता नथी, बीजांनां दुःख देखी दिलमां बहु दुखाय छे, कोइपर ते करडी नजर करता नथी, दया दृष्टिथी सर्व उपर जुवे छे, शक्ति प्रमाणे सर्वना सारामांज पोतानां तन, मन अने धन वापरे छे,[1] सर्वने सारे मार्गे चडावे छे, ईश्वरमां एक लक्ष राखे छे, सत्कर्म निरंतर कर्या करे छे, कामने कोरे करे छे, क्रोधने धकेली मेले छे,

---

१ परोपकाराय सतां विभूतयः ! सत्पुरुषनी विभूति परोपकारमाटे छे.

लोभने भगाडी मेले छे, मदने दूर करेछे, मत्स-
रनुं मोढुं जोता नथी, आशाने एक कोरे राखेछे,
तृष्णाने तरछोडी मेलेछे, संतोषथी संप राखे छे,
वैराग्यथी वेहेवार राखे छे, विवेकने वेगळो करता
नथी, क्षमाने मान आपे छे, दयाने दिलमां राखे छे,
शांतिनो शणगार धरे छे, तितिक्षामां तत्पर रहे
छे, पुण्य ने परोपकारमां अपूर्व प्रीति राखे छे,
नीतीमार्गमां चाल्या जाय छे, मनने स्वाधीन
राखे छे, इंद्रियोने आधीन थता नथी, संसारनां
मानी लीधेलां क्षणिक सुखमां सुख लेखता नथी,
विषयोने विष सरखा जाणेछे, व्यहार अने प-
रमार्थमां बंधन न करे एवा बोध लेछे ने आपे-
छे, सर्व प्राणीने पोता समान लेखे छे, शरीरनुं
क्षणभंगुरपणुं जाणे छे, काळनी उतावळी गतिने
ओळखे छे, धर्म अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार

पुरुषार्थेने अनुक्रमे सिद्ध करे छे, ईश्वरनां स्वरूपने ओळखी ले छे, संपत्ति मळे तो तेथी हरखाता नथी, विपत्ति पडे तो तेथी पीडाता नथी. उदासी रहे तो पण जगत्‌नां कल्याणनां साधनो उपर उदासी रेहेता नथी अने टुंकमां कहिये तो सर्व सद्‌गुणोना धामरूप, सर्व पुण्यना पात्ररूप अने सर्व जगत्‌ने सन्मार्गे चलावनार ने सुख आपनार सत्पुरुष छे. आवा पुरुषो घेर घेर बारणे बारणे मळवा के प्रसिद्धिमां आववा कठण छे. जो सत्पुरुषोनी संख्या असंख्य थति होय, तो आजे दुनियांमां आटलो दुराचार, आटली दुष्टता आटलुं क्रूरपणुं अने आवुं कपटपणुं प्रसरी जवानो संभव रखायज नहीं. भूमंडळनां भूषणरूप सत्पुरुषो वणाज थोडा छे, ए अभिप्रायथी एक अनुभवी कहे छे के:—

ये जाते व्यसने निराकुलधियः
संपत्सु नाऽभ्युन्नताः
प्राप्तेनैव पराङ्मुखाः
प्रणयिनि प्राणप्रयोगैरपि ॥
ह्रीमन्तः स्वगुणप्रकाश-
नविधावन्यस्तुतौ पंडिता-
स्ते भूमंडलमंडनैकतिलकाः
संतः कियंतो जनाः ॥

काइ महासंकट आवी पडे तो जेनी बुद्धि आकुळव्याकुळ थती नथी संपत्ति आवी पडे तो जे मदोन्मत्त थइ जता नथी, काइ स्नेही आवे तो प्राण आपवा सुधीनां काममां पण जे पाछो पग देता नथी, पोताना गुण प्रकाश करवामां पण जे लाज पामे छे, अने पारका गुण गावामां जे महापंडित बने छे, ते भूमांडळनां मुख्य घरे-

णारूप सत्पुरुषो केटलाक छे? अर्थात् तेवा पुरु-
षो घणा नथी.

आ महाप्रपंचथी भरेलां जगत्‌मां महान् पु-
रुषो थोडा छे, ए वात निःसंदेह छे तथापि ए
थोडा पुरुषो पण मनुष्योने घणो लाभ करे छे.
कोई अनुभवी सत्संगी सत्पुरुषने वखाणे छे के,–

ये दीनेषु दयालवः
स्पृशति यानल्पोऽपि न श्रीमदो
व्यग्रा ये च परोपकारकरणे
हृष्यंति ये याचिताः ॥
स्वस्थाः संति च यौवनोन्मद-
महाव्याधिप्रकोपेऽपि ये
तैस्तंभैरिव सुस्थिरैः
किल भरक्रांता धरा धार्यते ॥

जे दीन प्राणीउपर दयाळु छे, जेने जरापण

लक्ष्मीनो मद स्पर्श करतो नथी, जे बीजानो उपकार करवामाटे अति चंचळ छे, जेनी पासे याचना करी होय तो राजी थाय छे अने जे जुवानीरूप छकेलो मोटो व्याधि कोप्या छतां पण स्वस्थ रहे छे, ते अचळ स्थंभ जेवा सत्पुरुषोथीज मोटा भारथी पीडाएली पृथ्वी धारण कराय छे. अर्थात् आवा पुरुषोना आधारेज आ पृथ्वी रही छे.

सत्पुरुषोने आधारेज पृथ्वी रहे छे एमां नवुं गंभीरता भरेलुं छे, केम के दुनियामां दुराचार, दुराग्रह अने दुःस्वभाव पृथ्वीने उथलपाथल करी नाखे तेटलां भरेल छे, पण सत्पुरुषोना बोधनी अने सत्संगनां प्रमाणमां थोडी असर पण पृथ्वीने उथलपाथल थती अटकावे छे. अर्थात् सत्पुरुषोना प्रतापेज लोको केटलाक स-

हुणी अने सौजन्य भरेला क्यांइ क्यांइ जोवामां आवे छे.

जेओ घणा भाग्यशाळी होय अने जेओए पूर्वे कंइ सुकृत करेलुं होय तेवाओनेज सत्पुरुषनो सत्संग थाय छे. जेओ दुर्भाग्य होय ने पुर्वे कंइ सुकृत न कर्युं होय तेमने पेहेलांथी सत्पुरुषोनो संग थवोज बहु कठण छे, ए वात अनुभवसिद्ध छे. आवा पुरुषो पण पोतानां भलानेमाटे अनेक उपायो निष्पक्षपातपणे करे छे, पण पोतानां उत्तम कृत्यमां जोइए तेवा पार पडी शकता नथी ए घणी दिलगीरीनी वात छे सत्पुरुषोनी पंक्तिमां अमे छिये एवुं धारीने केटलाक लक्ष्मीना मदथी मदेला, केटलाक जुवानीना मदथी मदेला अने केटलाक माणसोना मदथी मदेला बुद्धिना बारदान पुरुषो अभि-

माननो अगणित भार माथे उपाडी आम तेम आथडे छे. एवा लोको भले पोताना मनमां मानी बेसे, परंतु सत्पुरुषना जेवुं थवुं ए देवताओथी पण बनतुं नथी तो मनुष्य ते कोण मात्र छे? तरवारनी धार उपर के अग्निज्वाळामां सुवुं ए कटण छातीवाळाने कदि सेहेलुं छे, पण सत्पुरुषना जेवा आचरणथी वर्त्तवुं ए कोइ दिवस पण सेहेलुं नथी. सत्पुरुषनां सदाचरणनी गंभीरता जोई आश्चर्य पामेला श्रीभर्तृहरि वर्णवे छे केः—

'प्रिया न्याय्या वृत्तिर्मलिनमसुभंगेऽप्यसुकरं
त्वसंतो नाभ्यर्थ्याः सुहृदपि न याच्यः कृशधनः
विपद्युच्चैः स्थेयं पदमनुविधेयं च महतां
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्' ॥

न्यायनी रीते वर्त्तवुं ए प्रिय लागवुं, प्राण जता होय तोपण नठारुं काम करवुं ए पाप-

रूप जाणवुं, असत्पुरुषो पासे अने निर्धन एवा सगा के संबंधी पासे याचना न करवी, विपत्तिनेविषे ऊंचा प्रकारथी रहेवुं अने मोटा.मोटा पुरुषो जे मार्गे चाल्या होय, ते मार्गने अनुसरीने चालवुं, एवी रीते आ अतिकठण तरवारनी धार जेवुं तीखुं व्रत सत्पुरुषोने कोणे बताव्युं हशे.*

आपणे विचारिये तो जाणि शकीये के खरेखरज जे आचरणो अहीं लख्यां छे, ते तरवारनी धार जेवां कठण छे; केमके आजे खरेखरी न्यायनी रीतिये वर्त्तवानुं प्रिय माननारा, प्राण जाता होय तो पण नठारुं काम करवामां पाप-

---

* अर्थात् सत्पुरुषो स्वभावथीज एवा सदाचरणवाळा थाय छे, एटले एमने बीजो कोण उपदेश करनार संभवे? कोइ पण संभवे नहीं.

बुद्धि बांधनार अने विपत्तिमां ऊंचीस्थितिमां रहेनार तथा मोटा पुरुषो जे सारे मार्गे चाल्या होय, ते सारे मार्गे चालनारा आ पृथ्वीपर केटलाक छे? हशे तो मात्र आंगळिए गणीये तेटलाज. जो सत्पुरुषनां आचरण सेहेलां होय, तो आटली थोडी संख्या संभवेज नहीं. स्वाभाविक नीची गतिवाळुं पाणी मोभेथी नेवेज आववुं जोइए, ए पाणीने मोभे चडाववामां पार पडवुं जेम मुश्केल छे, तेम स्वाभाविक रीते नीचे मार्गे चालनारा जगत्ना सघळा लोकोने सत्पुरुषनां व्रतरुप उंचे मार्गे चडाववामां पार पडवुं एथी मुश्केल बीजुं कांइ नथी.

सत्पुरुषना व्रतविषे एटलुं बोलीने नथी अटक्या. बीजा श्लोकमां पण भर्तृहरि कहे छे केः—

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते संभ्रमविधिः
प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं नाप्युपकृतेः॥
अनुत्सेको लक्ष्म्यां निरभिभवसाराः परकथाः
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ॥

छानी रीते दान[1] आपवुं, कोइ घेर आवे तो तेने, जेम कोइ न आवे एवुं माणस घेर आव्युं होय तेवां आश्चर्यसहित सत्कार करवो, कोइनुं सारुं कर्युं होय तोपण ते कही देखाडवुं नहि, कोइ उपर उपकार कर्यो होय तो ते सभाना मध्यमां कही देवो नहि, लक्ष्मी होय ते छतां मदोन्मत्त न थइ जवुं, बीजाने कोइ रीते हानि न थाय ते रीते बीजानी वात करवी इत्यादि. आ अतिकठण तरवारनी धार जेवुं

---

१ दान अनेक प्रकारनां छे ने ते सघळां पुरुषोथी अपाय छे.

તીક્ષ્ણ વ્રત સત્પુરુષોને કોણે બતાવ્યું હશે?

આ ઉપરથી અને આવાં બીજાં ઘણાં પ્રામાણિક પ્રમાણો ઉપરથી આપણે નકી જાણીને અનુભવી શકીયે છિયે કે સત્પુરુષોના જેવા સદાચરણી થવું એ બહુ દુર્લભ વાત છે; કેમકે એ તો જગત્માં પ્રત્યક્ષ અનુભવમાં આવ્યું છે કે પોતાને કાંઇ પણ દાન આપવું હોય તો દશ પાંચ માણસો ભેળા કરીને આપે એવા અને પોતાનાં વખાણ કરાવે એવા, ઘેર કોઇ માણસ આવ્યું હોય તેનું સન્માન કરે એવા કોઇ કોઇનું પ્રિય કરાઇ ગયું હોય તો જેનું પ્રિય કર્યું હોય તેને ને બીજા સમાજને મોઢે કહી દેખાડે તેવા, બીજા નિરપરાધિને પરાભવ થાય તેવી તેની ચડ રાખીને નિરંતર વાતો કરનારા, ધનનાં જોરથી, જનનાં જોરથી, તનનાં જોરથી અને યૌવનનાં જોરથી

मदोन्मत्त थइ जनारा, आपणे केटला केटला नथी दीठा ने नथी सांभळ्या ! महा भयंकर अने वात सांभळतां पगनी धूळ नीकळी जाय एवां युद्धनेविषे माहा बळिया पुरुषो तरवारनी धारथी जरा पण भय राख्याविना पोतानुं मृत्यु अंगीकार करी सामे पगले लडे छे. एवा अनेक जातिमां घणा नीकळे छे, परंतु सत्पुरुषोना सदाचारना जेवा सदाचार शीखवा आचरणरूप तरवारनी धार उपर सुवानुं कबुल करी उत्तम पद पामवानी इच्छा राखनारा सर्व स्थळेथी भाग्येज मळी आवशे. केवी विश्वनी घटमाळ छे ! !

पोतानां पवित्र आचरणथी भरपूर एवा सत्पुरुषोमाटे विद्वानो वखाण लखी गया छे. आ टुंका लेखथी पण सत्पुरुविषे जाण्युं एटले हवे नीचेना लेख उपरथी ते महात्माओनी संगतिनुं

फळ केवुं छे ते जाणवाने प्रसिद्ध पुरुष भर्तृहरि शुं कहेछे ते हवे वांचीए.

'जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ॥
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्त्ति
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥

(कहो के सत्पुरुषनी संगति शुं शुं नथी करती ? अर्थात् सघळुं करे छे.—बुद्धिनुं जडपणुं हरीलेछे, वाणीमां सत्यताने सिंचे छे, मान ने मोटाइ आपे छे, पाप सर्व दूर करे छे, चित्तने प्रसन्न करे छे अने सघळी दिशाओमां कीर्तिनो फेलावो करे छे.)

बुद्धिनुं जडपणुं जाय एटले सत्यासत्य अने हेय उपादेयनो विवेक थइ असत्यनो त्याग थाय छे ने सत्य वस्तुनुं ग्रहण थाय एटले सघळा सदा-

चार ने सद्गुणनुं पात्र थवाय छे. ए शुं सत्सं-
गतिनो थोडो लाभ केहेवाय ? आ पछी अनुक्रमे
सत्यपणुं, मान, मोटाइ, प्रसन्नता अने कीर्ति एनी
मेळे चाल्यां आवे छे. पूर्वनां कांइ पुण्य विना
सत्पुरुषोना जेवां आचरण थतां नथी एम अमे
आगळ लख्युं छे, तेवाज अभिप्रायथी एक अ-
नुभवी विद्वान् सत्संगतिविषे कहे छे के.—

गंगेवाऽघविनाशिनी जनमनः—
संतोषसच्चन्द्रिका
तीक्ष्णांशोरपि सत्प्रभेव
जगदज्ञानांधकारापहा ॥
छायेवाखिलतापनाशन—
करी स्वर्धेनुवत्कामदा
पुण्यैरेव हि लभ्यते सुकृतिभिः
सत्संगतिर्दुर्लभा ॥

गंगानी पेठे पापनो नाश करनारी, माणसोनां मनने राजी करवामां सारी चंद्रिका जेवी, सूर्यना कीरणोनी पेठे जगत्नां अंधारांने (अज्ञानने) मटाडनारी, छायानी पेठे सर्व तापने[१] टाळनारी अने कामदुधा गायनी पेठे जे कामना[२] थाय ते पूरी आपे एवी दुर्लभ सत्संगति छे जे सारां कर्म करनारा होय तेनेज पुण्यवडे मळे छे. अर्थात् तेविना बीजाओने मळती नथी.

विचार करीये तो केटला बधा गुणो सत्संगतिमां रह्या छे ते जणाइ रहे छे. एथी पण विशेष गुण एमना नीचेना अमुल्य श्लोक रत्नथी जणाशे.

---

१ आधिना, उपाधिना अने व्याधिना सघळा ताप.
२ सत्संगथी सारीज कामना थाय अने ते कामनाने सत्संगति पूरे.

'कल्पद्रुमः कल्पितमेव सूते
सा कामधुक्कामितमेव दोग्ध ॥
चिंतामणिश्चिन्तितमेव दत्ते ।
सतां हि संगः सकलं प्रसूते' ॥

(कल्पवृक्ष जे कल्पना करिये तेज आपे छे, कामदुधा गाय जे कामना करिये तेज आपे छे, अने चिंतामणि जे चिंतवन करिये ते आपे छे; पण सत्पुरुषनो संग तो ए सघळुं आपे छे.)

विचारिये के आथी बीजुं दुनियामां शुं वधारे छे? कंइ पण नथी. कल्पद्रुम कल्पना करिये ते आपे, कामदुधा कामना करिये ते आपे, अने चिंतामणि चिंतवन करिये ते आपे एनो प्रत्यक्ष अनुभव करवानुं आ कलिकाळमां आ जगत्मां असंभवित छे, पण आ त्रणेने हलकां पाडनारी सत्संगतिनो अनुभव तो प्रत्यक्ष करवो होय तो

पण विरल स्थळे थइ शके एवो छे. माटे आ लाभ चूकवो न जोइए. छेवट जे मोटामां मोटो छेवटनो गुण सत्संगतिनो छे, ते तो मूळमांज श्री शंकराचार्ये दर्शावी आप्यो छे के क्षणमात्र पण सत्संगति थाय तो ते आ संसारनो सागर तरवाने वाणरूप थायछे. आपणे वांच्युं के जीवन तो पाणीना टीपां जेवुं छे. तेनो पळवार पण भरोसो राखी शकातो नथी. त्यारे हवे ज्यांसुधी चलण छतां पण अमूल्य जीवन आपणा हाथमां छे त्यांसुधी तेने शामाटे वृथा जवा देवुं जोइए! बाळक छोकरांने साकर आपिये तो ते नांखी दइने कोलसो खावानी इच्छा राखेछे, तेम आपणे न करवु जोइए. छोकरुं अणसमजु होयछे तेथी साकर तजीने कोलसो खाय पण ज्यारे ते समजु थायछे त्यारे कोलसो तजी दइ साकर-

तुंज ग्रहण करेछे; केम के ते वखते तेने साकर-
ना गुणनुं ज्ञान थायछे. तेम आपणे पण आपणुं
जे अज्ञान छे ते अनेक साधनोथी मेली दइए
तो पछी दुनियाना दुष्ट प्रपंच अने विषयादिक
तरफ जे वृत्ति जायछे ते पाछी वळीने सदाचार
अने सत्संगति तरफ वळेछे. माटे आ वेळा भू-
लमां न जवा देवी. 'अणीनो चूक्यो सो वरस
जीवे' ए केहेवत प्रमाणे जो आ तक आपणे
खोशुं तो पाछी तेवी तक क्यांथी मळशे? एम
न जाणवुं के आपणे मोटा थइ गया अथवा ह-
लकां कुळमां अवतर्या माटे आपणे सत्संगतिना
अधिकारी नथी. ज्यारथी जाग्या त्यारथी सवार
समजवुं. जो खरी उत्कंठा हशे तो क्षणवारना
खरा बोधथी ने संगतिथी जरूर कल्याण थवानुं.
माटे मनने पाछुं हठवा न देवुं. आ काम आपणुं

पोतानुं अने आ शरीरथीज थइ शके तेम छे. आटला दिवस अज्ञानमां गया ते हवेथी ज्ञान थतां वृथा गया एम जणाशे तो पण ते वातनी चिंता मेली देवी अने वृथा गयेला दिवसोनुं जेम हवे पछी भोगववानां जीवनमां साटुं वळी जाय, तेवुं प्रयत्न करवुं, जेथी आ अमूल्य जीवननुं अमूल्यपणुं सचवाय, अने फरीने कोइ पण क्लेशनुं पात्र न थवाय.



* कामं क्रोधं लोभं मोहं
त्यक्त्वात्मानं पश्यत कोऽहम् ।
आत्मज्ञानविहीना मूढाः
पच्यंते ते नरकनिगूढाः † ॥७॥

अर्थ.

कामने, क्रोधने, लोभने अने मोहने त्याग करी हुं कोण छुं एम आत्माने जो. जेने आत्मज्ञान नथी ते मूढलोको नरकमां पडया सडया करे छे.

---

* हवे अज्ञानी पुरुषो नरकमां पडेछे माटे अज्ञान वधारनार अने ज्ञानना प्रतिबंधक काम–क्रोधादिक अंतःशत्रुने दूर करी स्वरूप ज्ञानने माटे कहेछे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† तजि मोह मेली लोभ मेली क्रोध मेली कामने.
निजरूपने हुं कोण छुं एवे विचारे पामने;
निजरूपने नहि ओळखे ते लोक मूर्ख गणायछे.
ते मूढ लोको नरकमांहि पड्या पड्या पीडायछे.

टीका.

सर्व सत्कर्मोथी खेसवी नाखनारा अने पोतानां रूपने भूलावी नाखनारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद ने मत्सर ए छ मोटामां मोटा शत्रुओ छे. मद ने मत्सर ए प्रथमना चारनी आगळ कशी गणतीना नथी अने तेनी अंतर्गत गणाइ शकेछे. माटे अहीं चारनांज नाम आप्यां छे. आ चारमां मुख्य काम छे. ए एकलो कामज आखा जगत्ने ऊंधुं वाळी दे एवो नठारो छे तो चार साथे मळे त्यारे तो शी वात करवी रही? जेटला अनर्थो छे तेनुं मुळ एक काम छे. कामथी कामनावाळुं थयेलुं मन नानाप्रकारना विषयना भोग भोगववामां ललचायछे. विषयभोग भोगववामां ललचायेलुं मन पछी विवेकनी सामुं लेश पण जोतुं नथी. काम होय ते साथे

तेनी अर्धांगना रति पण साथेज होय. काम अने रतिनुं जोडुं कदीपण जुदुं पडतुं नथी. ए जोडांने आधीन थयेला जीवनी कोइ दिवस सारी गति संभवती नथी. विषयरूप विषथी कडवां थइ गयेलां अंतःकरणमां यमनियमादिकनुं स्मरण पण थवुं कठण पडेछे, तो पछी सन्मार्गनी वात तो क्यांथीज सुजे? जेणे मोटा मोटा प्रख्यात पुरुषोने ऊंडा खाडामां उतारी संसारना चक्रमां चालता कर्या छे, एवो दुष्ट काम बीचारा कलियुगना प्राणीने शुं न करे? जेओनां नाम लइने आपणे आज पवित्र केहेवाइए छिये तेवा प्रतापी पुरुषोनां वृत्तांतने पण क्रूर कामे मेलां कर्यां छे. आ संसारमां जे जे जन्म लइने दुःख सहन करवां पडेछे ते अने हजु पण नहीं समजाय तो करवां पडशे ए मात्र कामना क्रुर

कटाक्षथीज. काम एवो तो लालचु छे के जो आपणे तेने लेशमात्र अंतरमां आश्रय आपीये तो ते पोतानुं पराणे पड जमावी दई आपणने उलटा पोतानी वश करी मेलेछे. विद्वत्ता अने विवेक कामनो लेश भास थतांज उडी जाय छे. एनां पुष्पनां केहेवातां बाण एवां तो तीखां छे के तेनो आश्रय लेनारा देव, दानव अने मानवने पोताने वश करी मरजी मुजब चलावी अनेक कुकर्मना गांठडा बंधावेछे. लोढानुं एक बाण शत्रुए मार्युं होय तो मात्र थोडी वेदना थइने थोडे दिवसे रुझाइ जाय अथवा बहु वाग्युं होय तो मृत्यु थाय, पण आ कामनां बाण तो गुप्त रहीनेज मनुष्यने चाकडे चडावेछे. चाकडे चडेलुं मनुष्य गमे तेटलुं दुःख वेठतुं होय अने गमे तेवी हानि पामतुं होय तोपण ते वातनुं तेने भा-

न नहि रेहेतां जे कांई थायछे ते उत्तमोत्तम काम थायछे एमज समजेछे. आम करतां करतां अहींनां केटलांक महासंकटो वेठीने मनुष्य शरीर पड्या पछी अनेक प्रकारनी पशुपक्षीआदियोनिमां अवतरी अनेक दुःख भोगववां पडेछे के जेनो अंत क्यारे आवे ते कही शकातुंज नथी. आवा उत्तम पदनो नाश करनार कामने आधीन थयेलुं मन अनेक कामना करेछे ने ते ते कामना पूरी पाडवामाटे प्रयत्न करेछे. जो कोईपण कामनाने कांइ विघ्न नडे तो तरतज कामनो भाइबंध क्रोध आवी माणसने कांधे चडी बेसेछे. कामनां पडळ चडेलुं मनुष्य सारो मार्ग देखतुं नथी, तेमां क्रोधनो अंधापो आवे पछी शी मणा रहे ! कराळ क्रोधे महा बळिया अने प्रतापी पुरुषोने वश करीने अतिक्रूरताना

पात्र बनावी दीधा छे. मोटा मोटा पुरुषो क्रोधना आवेशमां अंध थइ पराभव पामेला सांभळ्या छे ने देखिये पण छिये. काम होय त्यां क्रोध होयज ए वात निःसंदेह छे. संसारनो त्याग करी जंगलमां जइ वसनारा मोटा योगियोए कामनो त्याग कर्यो केहेवाय छे ते वात सत्य छे पण तेवाओने पण क्रोधनो आवेश वखते रही जायछे के जे आवेशथी तेओ धारेली उत्तम सिद्धिने घणी मेहेनते पण पोचता नथी. ए मानो शकायछे के संसारनो त्याग कर्या पछी ने जंगलमां जइ वश्या पछी कांइ क्रोधनो अंश रहेछे, ते कोइ पण जातनी अंतःकरणमां इच्छा के कामना होय तेमां कांइ हानि पोचवाथीज रहेछे, कंइपण जो इच्छा गमे तेवी उत्तम होय तोपण जो ते अंतःकरणमां

आवे नहीं तो पछी क्रोध थवानो संभवज नथी. ज्यांसुधी मनमां ममता बंधाती होय त्यांसुधी मनमांथी क्रोध जतोज नथी, अने तेथी पर्णकुटी बांधी वसनाराओने क्रोध संसारीनी सरखा करी मेली पोताना पाशमां पकडी संसारसमुद्रमां गळकां खवरावेछे. क्रोध ज्यां जायछे त्यां तेनी स्त्री हिंसा पण तेनी साथेज रहेछे. कायिक वाचिक अने मानसिक ए त्रण जातनी हिंसा केहेवायछे. शरीरथी थाय ते कायिक, वाणीथी कराय के करावाय ते वाचिक अने मनथी कराय ते मानसिक हिंसा केहेवाय. एवो कोइपण देव, दानव के मानव नहि होय के क्रोधने आधीन थया पछी उपरनी त्रणमांनी एके हिंसाने आधीन ते थयो न होय. हिंसाने आधीन थयेला प्राणीनी पछी सारे मार्गे चडवानी आशाज

शानी राखवी ! कामी अने क्रोधी माणसना ए-
ना ए कान सारी बोधनी वात सांभळवामां बेहेरा
बनेछे, कामी अने क्रोधी माणसनी एनी ए आंख
मारुं देखवामां आंधळी थायछे, कामी अने
क्रोधी माणसनां एनां ए बीजां इंद्रियो सारी
क्रिया करवामां लूलां ने पांगळां थायछे. अने
कामी अने क्रोधी माणसनुं एनुं ए हृदयचक्षु वि-
नय-विवेक-विचारमां फूटी जायछे. आ उपरथी
आपणे समजी शकशुं के ज्यांसुधी काम के क्रोध
आपणी पासे आव्यां नथी* त्यांसुधीज आपणे
सद्विचार करी तेने वश करी शकशुं. काम ने

* काम क्रोध क्यांइ बीजेथी नथी आवता, एतो
शरीरनी साथेज छे. ते विकार पामे एटले आव्या स-
मजवां. जेम रोगमात्र शरीरमां छे पण ज्यांसुधी विकार
पामीने प्रसिद्ध थाय नहि ने शमी रहे त्यांसुधी रोग ना
कहेवाय तेम.

क्रोधनुं पड जाम्युं एटले लोभ पण तेनी साथे आवीने मळी जायछे. लोभ आवीने वश्यो के पोतानी स्त्री तृष्णाने तैयार करेछे. जे जे कामनाओ अंतरमां थाय तेने तृष्णा पोषण आपती जायछे. मोटा मोटा मनोरथ करावनारो लोभ नीचने त्यां नोकरी करावेछे, न बोल्वानुं बोलावेछे, न करवानुं करावेछे, न सांभळवानुं संभळावेछे, अने कुलजातिनुं अभिमान भुलावे छे. एनी साथे तेनी स्त्री तृष्णा भळी एटले तो आशाना तरंगमां माणस एवुं तणायछे के जीवतांसुधी तेने हाश करीने बेसवानो समय आवतोज नथी. आवी स्थितिमां कल्याण ते शुं केहेवाय अने सारो मार्ग ते शुं केहेवाय एम समजावुं ए स्वप्नमां पण संभवतुं नथी. चोरी आदिना मोटा अपराधो लोभनी लालचथीज थाय-

छे. गमे तेमां सारां लक्षणने लोभ भूलावी देछे. आ प्रमाणे काम क्रोध अने लोभनुं प्रबळ थयुं के पछी मोह पण पाछळ रेहेतो नथी. आखुं जगत् जन्ममरणने आधीन थइ अनेक दुःख सहन करेछे ते मोहजथीज. मोह थयो एटले ख-रांखोटानुं भान रेहेतुं नथी. हुं शुं करुं छुं अने आ सारु छे के नठारुं ते वात सुजतीज नथी. जेटला पदार्थ जेटला विचार अने जेटली क्रिया-ओ अकल्याण करनारां होयछे. तेज कल्या-ण करनारां जणायछे. जेवो कामनो अने जे-वो क्रोधनो अंधापो छती आंखे आंधळा करी नांखी संसारना आंधळा कुवानां अनेक दुःखो सहन करावधानां कारणरूप थायछे तेवोज मो-हनो अंधापो पण थायछे. काम, क्रोध ने लो-भ विकार पामे के मोह पछी दबाईने रेहेतोज

नथी. एकबीजा ए दोषो एवा संकळाएला छे के एकनुं कांई प्रबळ थयुं तो बीजाने भेळो लेतोज आवे. लोके अनुक्रमे एक एकनुं कारण छे एम बहुवार अनुभवायछे तोपण ए नियमथी उलटुं पण क्वचित् जोवामां आवेछे खरुं. उपरना एकेका दोष जन्म मरणना फेरानां अनेक दुःखने अपाववामां पूर्ण छे तो चारेय भेळा थाय पछी शी ओछ रहे? आ चारेयने तजीदेवा ए मनुष्य प्राणीनुंज काम छे. जो ईश्वरेच्छाथी पशु के पक्षीनो पराधीन देह मळयो होत तो आपणे शुं करी शकत? पण सारुं थयुं के मनुष्यनुं शरीर मळयुं छे अने तेनी साथे विवेकबुद्धि मळी छे. ज्यांसुधी विवेकबुद्धिनुं कामादिक उपरना चार चोरे हरण नथी कर्युं ते पेहेलां ए उगता चोरने एवा दबावी देवा के फरीने जी-

वतांसुधी माथुं उचुं करेज नहीं. आ काममां जो भूल खाधी तो अमूल्य मनुष्यजन्म निष्फळ गयो एम समजवुं, केम के पछी तो आपणमां ने पशुमां कशो फेर रह्यो नहीं. व्यवहारमां नाना सरखा शत्रुने पण वश करिये छिये त्यारे आ तो सदायना मोटा शत्रुओने केम वश न करवा जोईए? ए वश थया होय तो व्यवहारमां पण सहु मित्र थईनेज रहेछे. कामने, क्रोधने, लोभने, अने मोहने तजी देवा जोईए. (विकार पामवा न देवा जोईए.) कदी तेम नज थई शके एम कोई धारे तो तेनेमाटे पण सुखरूप उपायो कंई थोडा नथी. काम कामना करावतो होय तो विषयभोगादिकनी नहि करतां तेथी विरक्त रही निरंतर संसारनां दुःखमांथी छूटवानी ने उत्तम पद मेळववानी करवी. क्रोध

रीस करावतो होय तो संसारना अनेक दुःखद प्रपंच उपर अने तेनां अनर्थकारक कारण उपर करवी. लोभ तृष्णा रखावतो होय तो सत्समागमनी, सारासमयनी, सत्कर्म करवानी, संसारनां दुःखथी छूटवानी अने उत्तम पद मेळववानी राखवी. मोह विह्वळ करी नाखतो होय तो ईश्वरनुं स्वरूप अने पोतानुं स्वरूप ओळखी श्रद्धा अने अभ्यासथी एवुं वैराग्यसहित ज्ञान मेळववुं के शरीरनी बेभान अवस्था थई जाय. जो ए चार दोषो तजाता न होय तो तेने आ प्रमाणे सामीरीते जोडवा. त्रण दोष बरोबर जोडाई शकेछे पण चोथो मनमानती रीते जोडातो नथी पण जोडाया जेवोज समजवो.

आटलुं करीने पछी हुं कोण छुं एम विचारी पोताना आत्माने ओळखवो.* कामादिक ज्यांसुधी

---

* व्यवहारमां पण पोते पोतानुं स्वरूप जाणवुं जोइए, हुं कोण मावापनो पुत्र छुं, मारी प्रतिष्ठा केवी छे, हुं

वश थया न होय त्यांसुधी आत्माने ओळख-
वानां बधां साधन अधुरां समजवां. पोते पोतानुं
रूप ओळखवुं ते आत्माने ओळख्यो केहेवाय.
इंद्रियो, प्राण, मन, बुद्धि, अहंकार, त्रण गुण
अने पंचभूतथी थयेलो देह हुं नथी पण ए मारा
छे एम जाणवुं. देह इंद्रियादिक जे कांइ दृश्य
छे ते सघळां जड छे. एने चलावनार जे शुद्ध
चैतन्यरूप ते मारुं रूप छे. लांबो, टुंको, पातळो,
जाडो, काळो के गोरो ए पण देह छे. हुं तो
निर्विकार असंग, अक्रिय अने अखंड छुं. दे-
हइंद्रियादिकने बाद करतां जे कांइ अवशेष
चैतन्य रहेछे ते हुं छुं. आ प्रमाणे पोतानुं

कोनो आश्रित छुं, मारो शो धर्म छे, मारे केम वर्त्तवुं
जोइए, इत्यादि विचार करी पोतानां सारां कुळजाति
प्रमाणे शोभे तेम चालवुं तथा बोलवुं ते पोतानुं रूप
जाण्यानुं लक्षण छे.

शुद्ध स्वरूप ओळखी लेवुं.* ज्यांसुधी कामक्रो-धादिकथी ने रागादिकथी मन भर्युं होय त्यां-सुधी पोतानां स्वरूपने ओळखवानी ज्ञान पण सांभरती नथी, पण ज्यारे मन ए दोषने त्यागी निर्मळ थयुं त्यार पछी पोतानुं शुद्ध स्वरूप जेम अरीसामां मोढुं साफ देखाय तेम जणाइ रहे छे. जेओ पोतानां रूपनुं खरुं ज्ञान नथी पाम्या ते, हुं कर्त्ता, हुं भोक्ता, हुं सुखी, हुं दुःखी,

* स्वरूप ओळखवुं ए वात कांइ सेहेली नथी. शमदमादिक साधनोथी अंतःकरण निर्मळ थाय अने त्यार पछी सत् शास्त्रनुं श्रवण थाय ने तेने समजावनार बरोबर तेवो योग्य महात्मा मळे त्यारे ओळखायछे. पछी कोइने थोडा समयमां ओळखायछे ने कोइने वधारे समये ओळखायछे. पोपटनी पेठे, में मारुं स्वरूप ओळख्युं छे एम बोलवुं ए कांइ खरुं ज्ञान केहेवाय नही. खरुं रूप ओळखनारनी स्थिति अलौकिकज होयछे.

एम मानी रातदिवस हर्षशोकमां बुड्या रही वारंवार जन्म मरण धारण करेछे. जेने पोतानां रूपनुं खरुं ज्ञान नथी तेने ममता पण एवी गळे वळगेछे के तेना भारथी दबाएलुं माणस संसारना आंधळा कुवामांथी बहार नीकळवानो विचार पण करी शकतुं नथी. ईश्वरनुं अने पोतानुं स्वरूप नहि ओळखनारा पुरुषो मूढ एटले अकलविनाना केहेवायछे, अर्थात् ढोर जेवा कहिये तो कांइ भारे पडतुं नथी, केमके ढोरने पण अकल होती नथी. ए मूढ पुरुषो पछी, आपघात करनाराओ जेम आ लोक ने परलोकनां महा दुःख भोगवे छे तेम आ लोकनां ने परलोकनां नरकादिकनां दुःखो भोगवेछे. जेटलो दोष मोतविना बीजां साधनोथी शरीर पाडनाराने लागेछे तेटलो अथवा तेथी विशेष दोष

पोतानुं स्वरूप नहि जाणनारने लागवो जोइए; केम के स्वरूपने न ओळखवुं ए पण एक जातनो आपघात थयो अने तेथी ते कर्मप्रमाणे तेने यथायोग्य नरकमां सज्या करवानी शिक्षा न्यायथी विरुद्ध कही शकाय नहीं. नरक अनेक केहेवाय छे. तो पण तेमानां मुख्य तामिस्त्र, अंधतामिस्त्र, रौरव, महारौरव कुंभीपाक, कालसूत्र, असिपत्रवन, सूकर, अंधकूप, कृमिभोजन, संदंस, सप्तसुर्मि, वज्रकटक, शाल्मली, वैतरणी, पूयोद, प्राणरोध, विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन अवीचि, अने अयःपान ए २१ तथा क्षारकर्दम, रक्षोगणभोजन, शूलप्रोत, दंदशूक, अवटनिरोध, पर्यावर्तन अने सुचीमुख, ए मळीने २८ नरक नाम रूप अने लक्षणसहित शुकदेवे वर्णवी देखाड्यां छे. * एनां दुःखोनो विचार करतां रुवाडां

* भागवतना पंचमस्कंधमां छे. स्थळना संकोचे ते अहीं उतार्यां नथी. वळी कोइ बीजा प्रसंगमां ते उतारी सर्वने विदित करशुं.

उभां थई जाय एवां ते भयंकर लागेछे. जो मनमां आवां नरकनां असह्य दुःखो जोवानी इच्छा न होय तो काम क्रोधादिकने दबावी दइ पोतानुं खरुं स्वरूप ओळखीने न्याय अने सदाचारने मार्गे चाल्या करवुं जेथी उत्तमोत्तम कल्याणनी प्राप्ति थाय. जो आ वात विसरी गया तो जरूर रुंवाडे रुंवाडे लाखो वींछीनी वेदनाजेवां दुःख आपनारां नरकना भोगी आपणे थइ चूकवाना अने उत्तम पद पामवामाटे अनेक पुण्यथी मेळवेलो मनुष्यदेह वृथा थवानो. आ अनेक दुःखे अने पुण्ये मळेलो अमूल्य मानवदेह वृथा थाय ए जेवी हानि बीजी एके पण नथी. आज जन्म, आज जाति, आज अवस्था, आज समय अने आज घडी पोतानां कल्याणमाटे विचार करवानो छे एम समजवुं जोइए. पछीनी शी खबर अने शो भरोसो?

आवा उत्तम मनुष्यदेहमां एज देहथी करवानुं कर्त्तव्य छे ते जो न थयुं तो पछी क्यारे थशे? शुं उंटना अवतारमां अनेक रेतीनां मेदानमां तीक्ष्ण तडकामां माथे भार उपाडी भुख्यां तरश्यां मुसाफरी करतां के आंखे पाटा बांधी घाणीए फरतां कर्त्तव्य सुजशे? शुं बळदना अवतारमां खरे मध्याह्ने हळ खेंचतां के बेसुमार गाडीमां भरेलो भार माथे लाकडियो चाबखा पडतां भुख्यां तरश्यां रात दहाडो खेंचतां के घाणिये आंखे पाटा बंधावी आंटा फरतां कर्त्तव्य सुजशे? शुं घोडाना अवतारमां एकश्वासे गाडियोने लई जतां माथे पडता चाबखा खमतां, बूटमां जडेला खीलानी अणियोना प्रहार खमतां, जे मळे ते खाईने पेट भरतां ने अरधु कांकरावाळुं जोगाण खातां कर्त्तव्य सुजशे? शुं गर्दभना अ-

वतारमां दाणानी के मीठांनी छांटो उपाडी दूर देशमां मुसाफरी करतां, डुंगरोउपर हदथी ज्यादे भार उपाडी लई जतां के कुंभारने घेर राखमां लोटतां भूंकतां भूंकतां कर्त्तव्य सुजशे? शुं कुतरांना अवतारमां घेरघेर बारणे रोटलाना कटकामाटे भटकतां, चारेकोरथी लाकडीपाणाना प्रहार खातां के विष्टानुं भक्षण करी शेरीयोमां खाड खोदी सुई रेहेतां कर्त्तव्य सुजशे? शुं भुंडना अवतारमां रुष्टपुष्ट बनी गारामां लोटतां ने तेने खातां के कोई निर्दय शिकारी मळे तो तेना हाथमां पकडाई लोढानी तपावेल सळियेंथी नठारी रीते तडफडियां खातां प्राण खोतां कर्त्तव्य सुजशे? शुं बकरांना अवतारमां झाडपालो चरतां के कोई निर्दय भक्षक मळ्यो तो वगरमोते बराडा पाडतां हथियारथी प्राण खोतां

ने काळ सरखा मारनाराओने जोई कंपतां कंप-
तां विचार सुजशे? शुं कागडाना अवतारमां
मांसना कटका के पित्तकफना लोंदा उपाडी
आमतेम उडतां के कोई क्रूर हिंसक मळ्यो तो
गोळीना मारथी तडफडी प्राण खोतां कर्त्तव्य
सुजशे? शुं उंदरना अवतारमां बिलाडी मळे तो
तेना पंजामां पकडवाथी मोत वखतनी चिचिया-
टी करतां के गाडीनां पैडांतळे चगदाई छुंदेछुं-
दा थई जतां कर्त्तव्य सुजशे? सुज्ञलोको ! आ-
वा चोराशी लाख नाना मोटा दुःखना डुंगर
भोगवावनारा अवतारो छे. तेमांथी मनुष्यना अ-
वतारविना बीजा कोई अवतारमां कर्त्तव्य सुज-
वानुं नथी. कर्त्तव्य सुजवानां साधनवाळा देह-
मां नहि सुजे तो पछी जेमां कर्त्तव्य सुजवानुं
कशुं साधन नथी एवा देहमां तो क्यांथीज सु-

जशे: माटे निश्चयथी समजवुं के पशुनी पेठे मात्र आहार मैथुन वगर जेने कांई बीजुं सुज्युं नहि तेणे कांई पण कर्युं नहीं अने तेनो हीरानी किंमतने हठावनार मनुष्यदेह निरर्थक थयो.

*अंगं गलितं पलितं मुंडं
दन्तविहीनं जातं तुंडम् ।
करधृतकम्पितशोभितदंडं
तदपि न मुंचत्याशापिंडम् † ॥८॥

---

* हवे घडपणथी देह खडभडी जाय तो पण आशा छूटती नथी ए कहेछे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† तन साव शिथिल थयुं शिर श्वेतकेश थई गया,
मुखरूप मंदिरमांहिथी सहु दांतदेव पडी गया;
धारण करी तें लाकडी शोभित अने कंपित करे,
आशातणा तुं पिंडने तोपण नथी तजतो अरे ॥ ८

अर्थ.

अंग गळी गयुं, माथे पळी आवी गयां, दांत वगरनुं मोढुं थई गयुं अने हाथमां शोभिती थरथरती लाकडी लीधी, तोपण हजी आशानो पिंड मेलतो नथी.

टीका.

बाल्यावस्था अने युवागवस्था प्रारब्धयोगथी जो निर्विघ्न निकळे तो ते पछी क्रम क्रमे वृद्धावस्था प्राप्त थायछे. ए वृद्धावस्थामां क्रमे करीने सर्व अवयवोनी शक्ति शिथिल थई जायछे. बाल्यावस्था ने युवावस्थामां इंद्रियो जे शक्ति धरावेछे ते शक्ति पण क्रमे करी घटती जायछे. छेवट मोढामांथी लाळ पडेछे, अनाज दांत न होवाथी बराबर चवातुं नथी, नाक चूवेछे, आंखमांथी पाणी पडेछे, काने थोडुं संभ-

ळायछे, आंखे थोडुं देखायछे, उच्चार बराबर थई शकता नथी, स्मृति ओछी थई जायछे, शरीर भारे थई जायछे, चामडीमां कडचली पडी जायछे, अंगनुं लोही सुकाइ जायछे, पथारिये पड्युं रेहेवुं पडेछे, उठवुं होय तो लाकडी लेवी पडेछे, मांथुं हाथ ने पग थरथर्या करेछे, पूर्वावस्थाना जेवी बुद्धि पण रेहेती नथी, सारुं सारुं खावानी इच्छा थायछे, अफीणनुं बंधाण थायछे, घरनां माणसो अणसमजु होय तो प्रथमना जेटलुं मान आपतां नथी, कंइक बोलतां सहु बटकुं भरी उठेछे, कुतरांनी पेठे घरनां माणस के घरनां न होयतो बहारनां माणस बटकुं रोटलो आपे ते खावो पडेछे, पोतानुं मान नहि रेहेवाथी पेटमां बळेछे, लुगडां पेहेरवा पूरां मळतां नथी, सुवाने शय्या पण (नठा-

री प्रजा होयतो) मळती नथी. रामनुं नाम सां-
भरतुं नथी, जीभनो लवारो वधेछे, वखते म-
ळमूत्रथी वस्त्र बगडी जायछे, शरीर गेळथी
गंधायछे, आगली अवस्था सांभरी आववाथी
रडायछे, एवी दशामां पण आशारूप पिंड के
जेमां अनेक मनोरथनां बीज भर्यां छे ते छोडा-
तो नथी ए आश्चर्य जेवी वात छे. घणा लोको
कहे छे के 'आजे आवी जुवानीनी अवस्थामां
कल्याणनो मार्ग गोतवानुं कांइ काम नथी; आ
अवस्थामां तो स्त्री, धन, माल अने मान मेळव-
वामां तत्पर रेहेवुं जोइए. रामरटण करवाने तो
वृद्धावस्थाज छे. आम विचार करनारा एटलुं
पण नथी जाणता के वृद्धावस्था आवशे के न-
हि आवे एनो पेहेलांथी शो भरोसो? कलिका-
ळमां निमिषमात्रमां कलैया कुंवरो दुशमननी

पण छाती फाटी जाय एवी रीते यमराजाने घेर
जायछे अने पाछळनां संबंधियोने वगर मोते
अधमुवां करता जायछे, एतो जाणे केम जाण-
ताज न होय तेम खाईपीने पेटपर हाथ फेरवी
पलंगपर पोढी रहेछे ! कदी जाणता हशे तो
जेटली वार देखे के सांभळे तेटली वार स्मरण
रेहेतुं होय तो कोण जाणे ! ए स्मरण पण पा-
छुं संसारना प्रपंचमां अने स्त्रीपुत्रादिकनां सुख
मां मोही रहेला मानवियोने क्षणवारमां जतुं
रेहेछे. अने वृद्धावस्थामां आपणे कल्याणनुं
साधन करशुं एम मानी बेसनाराने एम नथी
थतुं के ते अवस्था केवी होयछे. भोगजोगे क-
दी ए अवस्थाने पोचाय तो तेमां केवी स्थिति
मनुष्यनी थायछे ते उपर दर्शाव्युं छे तेथी ज-
णाई आवशे. आम थवाथी बाळपण जुवानी अ-

ने घरडपण ए त्रणे अवस्था फोकट जायछे अने आ मानवनो देह वृथा थायछे.

बाळक जाणे के मारुं बाळकपण अने तेमां भोगववाना भोग सदाय एमज रेहेशे. जुवान जाणे के मारी जुवानी अने तेमां भोगववाना भोग सदैव एमज रेहेशे अने वृद्ध जाणे के मारी वृद्धावस्था अने तेमां भोगववाना भोग एमज रेहेशे; परंतु काळनो नियम एवो छे के कोइ पण पदार्थ एनी ए स्थितिमां रेहेतोज नथी. भोग अने अवस्था कदी टुंके काळे नाश पामे के कदी लांबे काळे नाश पामे पण अविचळ तो कांइ रेहेवानुं नहि. कोइपण अवस्थामां कोइ सद्विचार के कल्याणनुं साधन थयुं होय तो ते अविचळ रहेछे. आयुष्यनी अवधिने नहि जाणनारा बुद्धिमानो 'आज शुं के आगळ करशुं'

एम थारेछे अने लांबी आशानी दोरीये लटका-
या करेछे. फांसीनां लाकडांनी दोरीए लटक-
नारा पापीओनो तो तरत छुटको थइ जायछे
पण आशारूप दोरीने वळगी रहेलानो आ पार
के ते पार छुटकोज थतो नथी. बाल्यावस्था पण
वीते, युवावस्था पण वीते अने वृद्धावस्था पण
वीते तो छेवट जे रह्युं ते मृत्यु केहेवाय. ए मृत्यु
थतां पण आशा सूक्ष्म शरीरने पोताना कब-
जामां राखी अनेक दुःख आपेछे, माटे एवी
आशाने अळगी करवी जोइए. आशानी बेन
तृष्णाथी तपेलाए कह्युं छे के.—

भ्रांतं देशमनेकदुर्ग-
विषमं प्राप्तं न किंचित्फलं
त्यक्त्वा जातिकुलाभिमान-
मुचितं सेवा कृता निष्फला ॥

भुक्तं मानविवर्जितं
परगृहेष्वाशंकया काकव-
त्तृष्णे जृंभसि पापकर्म-
निरते नाद्यापि संतुष्यसि ॥

अनेक प्रकारना गढवडे पेसी न शकाय एवा देशमां फर्यो पण कांइ फळ मळ्युं नहि, जेवुं जोइए तेवुं जातिनुं अने कुलनुं अभिमान मेलीने फळविनानी सेवा करी, शंकावडेकरीने मान मेलीने पारके घेर खाधुं, तोपण हे पापकर्ममां लागी रहेली तृष्णा ! हजी तुं वधारे वधारे थती जायछे ने सन्तोष पामती नथी !

सारांश ए के तृष्णा घणीज नीच आचरण करावनारी छे अने तेने आधीन थइ तेवां आचरण कर्या छतां पण प्रतिदिन वधती जायछे. कोण जाणे कोनो तेने आशीर्वाद छे के वृद्ध

तो थतीज नथी के जेथी नाश थइ जवानो संभव होय. मात्र विचारवान् होयछे ते तेने पोता पासेथी दूर करी मेलेछे. जेओए आशा तृष्णा दूर नथी करी तेमणे कांइपण कर्युं नथी अने जेओए तेने तजी छे तेमणे सघळुं कर्युं छे.

तेनाधीतं श्रुतं तेन तेन सर्वमनुष्ठितम् ।
येनाशा पृष्ठतः कृत्वा नैराश्यमवलंबितम्॥

जे पुरुषे आशाने पाछळ मेलीने निराशपणानुं ग्रहण कर्युं तेज सघळुं भण्यो, तेणेज सघळुं सांभळ्युं अने तेणेज सघळुं कर्युं.

गमे तेटलो विद्यानो अभ्यास कर्यो होय, गमे तेटलां शास्त्रोनुं श्रवण कर्युं होय अने गमे तेवां सारां कर्म कर्यां होय पण ज्यांसुधी आशाने मेली न होय त्यांसुधी ते सघळुं वृथा छे केमके एक आशा ए बधांने निष्फळ करी नाखे छे. भागवतमां पण लख्युं छे के,—

यादुस्त्यजा दुर्मतिभिर्जीर्यतो या न जीर्यते ।
तां तृष्णां दुःखनिवहां शर्मकामो द्रुतं त्यजेत् ॥

नठारी बुद्धिवाळाओए जे तजाती नथी अने शरीर घसातां पण जे घसाती नथी ते दुःखने वेहेनारी तृष्णाने कल्याणनी इच्छावाळा पुरुषे त्याग करवी.

ज्यांसुधी मति नठारी होय त्यांसुधी तृष्णा तजाती नथी माटे तृष्णाने तजनारनी मति सारी जोइए. सारी मति सम्पादन करीने 'शरीर घसातां पण ते नथी घसाती तथा अति दुःख देनारी छे' एम तेने ओळखीने कल्याणने विरोध करनारी समजी तजी देवी. जे समजीने तजे छे तेने सेहेल छे ने न समजीने तजता नथी तेने तजवी कठण छे. कोइ केहेशे के आशातृष्णाने तृप्त करवाथी ते आफुडी शमी जाशे पण तेम बनतुंज नथी. एने तृप्त क-

रवा जतांज सघळुं अमूल्य आयुष्य वृथा जाय छे, ने पछी आपणे शरीरे अने इन्द्रियोए अशक्त थया के कांधे चडी बेसे छे. जेम मुंडा लोको मांकडांने नचावे तेम ते पछी आपणने नचावे छे. माटे तजाय तो तो ते ज्यांसुधी तृप्त न थइ होय त्यांसुधी सेहेलथी तजाय, नहि तो पछी ते माटे भरोसो खोटो.

शरीरने उत्पन्न थवा काजे बीज रोपाय त्यांथी तेने नाश थवानां कारणो पण साथेज होय छे. प्रारब्धयोगथी गर्भमां ने गर्भमांज नाश थइ जाय, अथवा जन्मीने नाश थइ जाय, अथवा जन्म्या पछी थोडे दिवसे के थोडे वर्षे नाश थइ जाय, अथवा कुमार अवस्थामां नाश थइ जाय, अथवा पौगंड अवस्थामां नाश थइ जाय, अथवा किशोर अवस्थामां नाश थइ जा-

य, अथवा युवावस्थामां नाश थइ जाय, अथवा प्रौढावस्थामां नाश थइ जाय, अथवा वृद्धावस्थामां नाश थइ जाय. एम नाश थवानुं तो थइमांथी उत्पत्तिनी साथे छे पछी न थाय तेनो मेळ नहिं. पण थवानो तो निश्चयज छे. एम छतां चेताय नहि ए आश्चर्यनी वात छे. अनेक विघ्नो सहन करीने अने मोतना सपाटामां नहि आवीने वृद्धावस्था दीठी होय तेम छतां जो वीतेलुं वय सफळ करवानो विचार न आवे तो एटलेसुधी लांबां चालेलां आयुष्यनुं शुं फळ? क्षणमात्रमां कराळ काळ कोळियो करी जाय अने फरीने प्रारब्धप्रमाणे वळी कोइ दुःखरूप देह धारण करी संसारमां भटकवुं एज छेवट भोगववानुं रहेछे. एम न थवाने माटे सारां शास्त्रोनो अने सारा पुरुषोनो निर्मळ चित्तथी बोध सांभळवो जोइए.

बोधनी वात संभळाय क्यांथी ने सुजे केम? दश वर्षना बाळक तरफ नजर करिये तो, काळनी गति अने प्रारब्धयोगने नहि जाणनारुं तेनुं मन अनेक विद्या भणी तेमां पास थइ अनेक इनाम इल्काब अने पगार मेळववाना विचाररूप प्रवाहमां तणातुं होय छे; पंदर वर्षना बेसती जुवानीना बाळक सामी नजर करिये तो, विद्यामां प्रवीण थइ कांइ सारी चाकरी मेळवी के वेपारधंधे लागी सुन्दर स्त्री परणी संसारना भोग भोगववाना विचारमां तेनुं काळनी गति अने प्रारब्धयोगने नहि जाणनारुं मन तणातुं होय छे; कोइ भरजुवानी वाळा पुरुष तरफ नजर करिये तो, वधारे द्रव्य मेळवी अने प्रजा उत्पन्न करी तेने लाड लडाववाना अने वधारे वधारे सुख मेळवतां जवाना विचारमां तेनुं का-

ळनी गतिने अने प्रारब्धने नहि जाणनारुं मन तणातुं होय छे; तेमज कोइ सर्व सारी स्थितिने पोंचेला वृद्धनी तरफ नजर करिये तो, बे चार गाडियो घेर होय तो बीजी वधारे राखीने, पैसा सारी पेठे भेळा कर्या होय तोपण कांइ तेनी संख्यामां वधारो करीने तथा दीकरादीकरीओने परणावीने सुखी थइ खाटलामां पड्या पड्या खावाना विचारमां तेमनुं कालगतिने अने प्रारब्धने नहि जाणनारुं मन तणातुं होय छे. उपरनां सर्वे पात्रो पोते पोतानी आशा प्रमाणे कदिक फळ मेळवे छे ने कोइ वचमांथीज तुटी पडे छे, पण जे क्रम दुनियानो आशा माटे बंधाणो छे ते तुटतो नथी. व्यवहारमां आशा न होय तो सारी स्थिति न थाय एम केटलाक माने छे तेमां मात्र संमजणफेर छे. जे

फळ मेळववानुं होय तेनेमाटे योग्य प्रयत्न तो कर्ये जावुं, पण तेमां खोटा तुरंगोथी वखतने खोवो नहीं. परमार्थविचारमां एटलुं विचारवानुं छे के प्रारब्धयोगथी जे जे सारी के माठी स्थिति आवे ते भोगववी अने संतोष राखीने व्यवहारनां काम साथे पोताना कल्याणनुं साधन पण करतां रेहेवुं ए गृहस्थने घटे छे. केमके बीजा संसारना विचारोमां गयेलो काळ फोकट छे पण सद्विचारमां गयेलो काळ सफळ छे. माणसो जाणे छे के अमुक भोगनो पदार्थ ईश्वर आपणने आपे तो ठीक अने आप्या पछी एम जाणे छे के हवे ते अमर रहे तो ठीक, पण ते वात धारी उतरती नथी; अने केटलीक वखत तो इच्छा घणी थाय ने ते माहेलुं कंइ पण मळे नहीं. आना करतां ईश्वर पासे एवो पदार्थ माग-

वो के जेनो नाश न थाय, अने तेवो पदार्थ मळ्या पछी तेनो एवो उपयोग करवो के फरीने आपणे पण संसारनुं दुःख खमवुं पडे नहि. आ बधुं बनवानुं साधन मनुष्यशरीर छे, तेमां पण जो कांइ बुद्धिनी विकलता होय के अंगनी खोट होय तो शरीर नकामुं थाय छे; पण प्रारब्धयोगथी शरीर, सर्व इंद्रियो अने अवयवोथी पूर्ण होय अने विचारयोग्य बुद्धि थाय त्यांसुधी जीवतुं होय तो आ शरीरथी जे करवुं होय ते थइ शके छे. माटे युवावस्था होय तो पण सारा सद्गुणो संपादन करी गुणवृद्ध थवुं, सारी विद्या संपादन करिने विद्यावृद्ध थवुं, सदुद्यम करी धन मेळवीने धनवृद्ध थवुं अने मोटां मोटां देशोन्नतिनां कामो करीने मानवृद्ध थवुं ए ज्यां सुधी काळे क्रूर दृष्टि करी नथी अने जराए

जीर्ण कर्या नथी त्यांसुधीज बनवानुं छे. पण ए
मघळुं करीने करवानुं करी चूक्या एम मानी
बेसवुं नहि. करवानुं करी चूका एम त्यारे जा-
णवुं के ज्यारे फरीने संसारनां दुःख जोवां न
पडे एवुं निराशीपणुं प्राप्त थाय ने संतोषमां
दिवस जाय. जेओने घेर मोटा मोटा हाथीओना
झुलवाथी तेना मदगंधथी सघळी जग्या छवराइ
रही हती, जेओनां पदकमलमां खंडिया रा-
जाओ अनेक भेटो लावीने मेलता, जेओने लक्ष्मी
जेवी सुंदर स्त्रियो पतिव्रत पाळीने परमेश्वरनी
पेटे सेवती, जेओना प्रतापी पुत्रो महासमर्थ अने
शूरवीर हता, जेओनी राज्यलक्ष्मी कुबेरनी स-
मृद्धिने पण हसी काहाडे तेवी हती अने जेओ
क्षणवारमां जळने ठेकाणे स्थळ अने स्थळने ठे-
काणे जळ करी नांखे एवा शूरवीर हता, तेओ

महाप्रतापी आर्य राजाओ पण सुखरूप राजपाटने दुःखरूप गणी दुःखेथी पण न खमी शकाय एवो कुटुंबनो स्नेह छोडी, केमेय त्याग न करी शकाय एवा वैभवने तजी दइ, सघळं बंधनकारक समजी अंतःकरणमांथी आशाना अंकुरने उखेडी नांखी पुण्यरूप अरण्यमां वल्कल पेहेरता ने वनफळ खाता वश्या हशे ते शा माटे ! विचार करीने जोशुं तो फरीफरीने माताना गर्भमां आवीने दुःख सहन नहि करवानेमाटे अने अखंड पदने पोचवाने माटेज. माटे आपणे पण बनते प्रयत्ने तेवी आशा केम न राखवी जोइए ! सदाचरणमां चाली सद्गुण ग्रहणकरी संसारनां अनेक दुःखथी अने तेनां बंधनथी छुटवानी आशा करवी ते उत्तम आशा केहेवाय अने ते शिवाय संसारनां सुखनी अने ईंद्रियोना देवता

उठी जाय ने उभुं न थवाय एवुं अशक्त शरीर थाय त्यांसुधी पण जीवीने छोकरानां छोकरां रमाडवानी आशा करवी ए अधम आशा केह-वाय.. उत्तम आशा जन्म सफळ करावेछे अने अधम आशा निष्फळ करावेछे. माटे केमेय न तजाती होय तो अधम आशाने ठेकाणे उत्तम आशाने बेसारी देवी जोइए. एम नहि करतां जे अधम आशाने वळगी रहेछे, ते प्रारब्धयो-गथी धनवान् थया होय तोपण रातदिवस रझ्या करेछे, सुखेथी उंघता नथी, संसारना सर्वे भो-गोनो ते उपभोग लइ शकता नथी, हुं ने मारुं एवी ममतामां हायवोय करेछे अने एम करीने मनुष्यपणाने अहर्निश लजावेछे. देशी परदेशी विद्या भणीने विद्वान् वदता होय, व्यापार करी धन मेळवीने लक्ष्मीवान् वदता होय, आव्या

गयानुं सन्मान करीने विवेकी वदता होय अने सघळी रीते मोटा भाग्यशाळी केहेवाता होय, ते पण जो आशाना पाशमां बंधाया होय तो तेनुं विद्वानपणुं, धनिकपणुं, विवेकीपणुं अने भाग्यशाळीपणुं तणाइ गया बरोबर छे. कह्युं छे के-

तेधन्यापुण्यभाजस्ते तैस्तीर्णःक्लेशसागरः।
जगत्संमोहजननी यैराशाऽशीविषी जिता॥

जेणे जगत्‌ने मोह पमाडनारी आशारूप सर्पिणीने जीतेली छे, ते आ जगत्‌मां धन्य छे, तेज पुण्यने भोगववावाळा छे, अने तेज क्लेशरूप दरियाने तरी गया छे.

आ वात सत्य छे. केमके ए सर्पिणी ज्यांसुधी वळगेली होय त्यांसुधी धन्यताने पात्र थवातुं नथी, पुण्य भोगवनार थवातुं नथी, अने क्लेशरूप सागरने तरी शकातो नथी. आटलामाटे

ते आशाने जीतवा प्रयत्न करवुं ए बुद्धिमाननुं काम छे. ज्यारथी जाग्या त्यारथी सवार एम समजीने जे करवानुं होय तेमां विलम्ब न करवो जोइए. जन्मीने अनेक छळकपटथी प्राणने पोषण आपीने आ माटीनां पुतळांने पुष्ट कर्युं जवुं एज मनुष्यदेहनुं कर्त्तव्य नथी, परंतु जेटलो वखत समजण आव्या पछी आ देह रहे तेटलो वखत पुण्यरूप कर्म करी फरीने संसारनां दुःखने पात्र न थवुं पडे तेज कर्त्तव्य छे; के जे बीजां शरीरोमां थतुंज नथी.



***सुरमंदिरतरुमूलनिवासः**
शय्याभूतलमजिनं वासः।
सर्वपरिग्रहभोगत्यागः
कस्य सुखं न करोति विरागः॥९॥†

अर्थ.

जे वैराग्यमां देवताओनां मंदिर अने झाडनां मूळो ए रेहेवानुं ठेकाणुं छे, पृथ्वी ए सुवानो पलंग छे, मृगचर्म ए पेहेरवानुं वस्त्र छे अने सर्व परिग्रह अने भोगनो त्याग थयेलो छे, ते वै-

* वैराग्य होयतो मोहमटे माटे वैराग्यने वर्णवे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† वसवुं सदा तरुवरतळे ने देवनां मंदिरविषे
मृगचर्मकेरां वस्त्र पेरी पोढवुं पृथिवीविषे;
तजवा विषयना भोग ने सर्व परिग्रह प्रेमथी,
एवुं अरे वैराग्य सुख कोने कहो करतुं नथी?

राग्य कोने सुख नथी करतुं? अर्थात् सर्वेने सुख करे छे.

टीका.

अढळक धन खरचीने उभी करेली सात माळनी महेलातो के जे आकाशने अडती होय, सुंदर बारीबारणां चोतरफ मेलेलां होय, चंद्रमानी किरणोजेवा धोळा कळिचूनाथी धोळेली होय, रंगबेरंगी आनंदने आपे एवां पशुपक्षी आदिनां चित्रो चित्रेलां होय, धोळा रंगना उलेचो माथे बांधेला होय, भातभातना अरिसा अने चकचकित कपाटो गोठवेलां होय, बिलोरी काचनां झुम्मरो अने हांडियो दीवा करवावास्ते टांगेलां होय, घडिआळना मनोहर खटकारा थया करता होय, अनेक प्रकारनां कत्रिम फळ फूल पशु पक्षी अने वाजांओ मनने हरण करतां

होय, सुंदर पलंग मखमलनी तळाइओथी पाथरी ने उपर दुधनां फीणजेवा धोळा ओछाड ओछाडेला होय, सुंदर खाटना खटकाराओ मनने डगावी नांखता होय, फरता बागबगीचांना पुष्पोनो सुगंध चाल्यो आवतो होय अने पाणीना फुवाराओ आगळ छुटता होय तथा प्रियजनो तेमां आनंदथी वसतां होय एवी महेलातो पण वैराग्य पामेलाना मनने कंइ पण आनंद आपती नथी. केमके तेओ जाणे छे के ते सर्व बंधनकारक अने नाशवान छे. एओने तो जेमां रात दिवस धूप दीप अने नैवेद्य आदिथी प्रतिमाओनां पूजन थतां होय, सत्वगुण पसरी रहेलो होय, अने परमेश्वरनां नाम शिवाय बीजो कशो शब्द काने पडतो न होय एवां देवताओनां भव्य मंदिरो तथा निर्जन वनमांहेना मोटा वृक्षो आनंद आपे

छे. तेवां मंदिरो के झाडनां मूळोमां तेओ इच्छा प्रमाणे वसे छे अने त्यां वसवुं उत्तमोत्तम जाणे छे अने अतुल्य आनंदने पामे छे.

शीशमनां के सुखडनां लाकडांना विचित्र कोरणी करी पलंग बनावेला होय, ते उपर अतलसनां ओशीशां अने मशरुनी तळाइओ पाथरी होय, चांदनी सरखा सफेत ओछाड ओछाडेला होय, माथे मच्छरदानी नाखेली होय अने चोतरफथी मंदमंद वहातो पवन सुंदर सुगध लइ आवतो होय एवी शय्या वैराग्य पामेलां मनवाळाने जरा पण रुचती नथी. एओने तो आखा जगत्ना भारने उपाडनारी पृथ्वी के जेनी उपर कोइ ठेकाणे सुंदर रेती पथराएली होय, कोइ ठेकाणे लीली घ्रो उगेली होय, के कोइ ठेकाणे झीणी धूळ पथराएली होय अने

ज्यां खुल्ली हवा आव्या करती होय ते अत्यंत प्रिय लागेछे. सोनारुपाथी जडेली शय्या पण तेनी आगळ तेने कशा हीसाबनी नथी.

भातभातनां हीरागळ वस्त्रो, अनेक तरेहनां खीनखावनां वस्त्रो, सुतराउ झीणां तथा जाडां वस्त्रो के जे वस्त्रोना पाघडी, अंगरखां, खेस, कुडतां अने बीजा अनेक पेहेरवाना मनगमता घाट बने छे तेवां अमूल्य वस्त्रो पण वैराग्य पामेलाना मनने रुचतां नथी. एमने तो मात्र काळियार मृगनुं चर्म एज उत्तमोत्तम वस्त्र लागेछे अने तेथीज ते संतोषवान रहे छे. हीरा अने मोती जेमां टांगेला होय एवां जरियन वस्त्रो पण तेमना मनने मोह पमाडतां नथी.

तेमज एक देह अने तेने पाछळ लागेलां स्त्रीपुत्रादिकनां पोषणमाटे अने पोताने भोग भो-

गववाने माटे अज्ञानियो जेम अनेक प्रकारना शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंधवाळा पदार्थो ग्रहण करेछे अने तेने तेमां आसक्त रही भोगवे छे, तेम जे वैराग्यवान् छे ते ग्रहण करता नथी ने तेओने भोगववानी आशा पण होती नथी. जेम विष्टाने त्यागे तेम तेओए सघळा विषयभोग त्यागेला होय छे.

आ बधुं वैराग्यथी थायछे. आ वैराग्य सर्वेने एटले जेने प्राप्त थयो होय तेने आनंद उपजावे छे; केमके खरांखोटांनुं ज्ञान थइने वैराग्य थाय छे अने वैराग्य थयो एटले भूतना भडकाजेवा खोटा जगत्‌ना पदार्थोमां कदी पण ज्ञानीनी वृत्ति वळती नथी अने तेमने ते आनंद आपता नथी. मात्र शरीर रहे त्यांसुधी तेने कंइ आधार जोइए तो उपर प्रमाणे रहेवाने झाडनां मूळ अने

देवताओनां मंदिर, सुवाने पलंगरूप पृथ्वी, पेहेरवाने वस्त्ररूप हरणनुं चामडुं अने बाकी बधुं त्याग करवाने माटेछे. संसारमां आसक्त रेहेनाराओ आघडिये आपणी दृष्टिमां सुख भोगवता लागे पण ते मात्र जादुनी पेठे देखवा मात्र छे. जो विचार करीने जोइए तो एतो बिचारा महादुःख भोगवेछे ने हयात शरीर पड्या पछी कोण जाणे पाछां केवां दुःख भोगवशे ने तेनी शी गति थशे? जेओ वैराग्य पाम्याछे तेओ उत्तम स्थितिने भोगवे छे अने हयात शरीर पड्या पछी पण तेमने जन्ममरण नहि होवाथी तेओ कशां दुःखने भोगवनार नथी. जेओने मारो संग ने बोध होय अने पुर्वनां कंई पुण्यनो उदय थाय तेमनेज खरांखोटांनुं ज्ञान थइ वैराग्य प्राप्त थायछे अने वैराग्य प्राप्त थया पछी

कशुं दुःख के बंधन अंतःकरणमां रेहेवुं संभवतुं नथी. संसारमांथी जेनुं मन उठेलुं होय एवा मोक्षाधिकारीने केवुं रटण रहे छे तेविषे नीचेनां भर्तृहरिनां वाक्यउपरथी जणाशे.

कदावाराणस्याममरतटिनीरोधसिवसन्
वसानःकौपीनंशिरसिनिदधानोंजलिपुटं ।
अयेगौरीनाथत्रिपुरहरशंभोत्रिनयन
प्रसीदेत्याक्रोशन्निमिषमिवनेष्यामिदिवसान्

गंगाजीने किनारे रेहेतो, कौपीनने धारण करतो, बे हाथेथी पगे लागतो अने हे गौरीनाथ! हे त्रिपुरहर ! हे शंभो ! हे ! त्रिनयन ! प्रसन्न थाओ एम बोलतो हुं दिवसोने क्षणनीपेठे क्यारे निर्गमन करीश ?

जेओए साचुंजुठुं जाण्युं छे अने जेओने संसारनां दुःखथी त्रास छूटे छे तथा जेओने कशी

ममता नहि रेहेतां पोतानां कल्याणनी इच्छा छे तेओने ए प्रमाणे घरबार अने सुखभोग जे क्षणिक छे तेमांथी वृत्ति उठीने पुण्यरूप अरण्यमां अने तीर्थाटनमां जाय ए वात समचित अने शोभिती छे. जेओए प्रेमथी पृथ्वीनां पालन करेलां अने जेने भोग सर्व प्राप्त हता एवा महाराजाओ पण पुण्यरूप वनने मान्य करी ममता छोडी चाली नीकल्या छे ते पण सत्य मार्ग समजीने अने फरीने दुःखरूप जन्ममरण न करवाने माटेज अने ते पण जो अंतरमांथी खरो अंकुर हतो तोज. संसारमां सघळुं दुःखरूप देखाय अने सत्यासत्यनुं भान थाय एटले वैराग्य स्फुरे छे. सघळा आनंद करतां वैराग्यनो आनंद अधिक छे अने बीजां सघळामां भय रहेलोछे परंतु एमां कशो भय नथी माटे ते निर्भय छे. भर्तृहरिए वैराग्यनां निर्भयपणांविषे कह्युं छे के.—

भोगेरोगभयंकुलेच्युतिभयंवित्तेनृपालाद्भयं
मौनेदैन्यभयंबलेरिपुभयंरूपेजराया भयम् ।
शास्त्रेवादभयंगुणेखलभयंकायेकृतांताद्भयं
सर्ववस्तुभयान्वितंभुविनृणांवैराग्यमेवाभयं

भोगनेविषे रोगनो भय छे, कुळनेविषे हलकुं थइ जवानो भय छे, द्रव्यनेविषे राजानो भय छे, मूगापणांनेविषे दीनपणुं आववानो भय छे, बळनेविषे शत्रुनो भय छे, रूपनेविषे जरानो भय छे, शास्त्र भणवाविषे वादविवाद करवानो भय छे, गुणनेविषे खळ पुरुषनो भय छे, अने शरीरनेविषे काळ थकी भय छे; एम सर्व वस्तु पृथ्वी उपर माणसोने भयवाळी छे, परंतु वैराग्य एज एक अभय एटले भय वगरनुं छे.

भोग भोगववाथी हीन मिथ्या के अतिमात्र योगनेलीधे रोग थायछे तेथी तेमां रोगनो भय

प्रत्यक्ष जणायछे. व्यवहारनां अनेक कार्यमां कंइ ज्ञातिबंधनथी उलटुं कार्य थयुं तो तेथी अथवा बीजां कोइ तेवां हलकां कार्यथी, उचुं कुळ केहेवातुं होय तो नीचुं केहेवायछे तेथी तेमां हलकुं थइ जवानो भय प्रत्यक्ष देखायछे. प्रयत्ने मेळवेलुं द्रव्य कोइ राज्यना गुनाहमां आवी जवाथी राजा दंडीने लइ जायछे ने तेथी तेमां राजाथकी भय थवापणुं प्रत्यक्ष देखायछे;* मूगुं रहेवाथी कोइ कांइ आपे नहि अने पोतानी योग्यता कोइ जाणे नहि तेथी निर्धनपणुं थवानो संभव छे, एटले तेमां दीनपणुं प्राप्त थवानो भय प्रत्यक्ष जणाय छे; द्रव्यनुं शरीरनुं के माणसोनुं बळ होय तो कोइ वखत लडवुं पडे ने तेमां प-

* चोर चोरी पण जाय, खरचाइ पण जाय एवा वे भय पण द्रव्यने वळगेला छे.

राजित थवुं पडे तेथी तेमां शत्रुनो भय प्रत्यक्ष जणायछे ; गमे तेवुं रूप होय पण घडपणे ते बदलायावगर रेहेतुं नथी तेथी तेमां जरानो भय प्रत्यक्ष जणायछे; शास्त्रोनां अध्ययनथी कोइ वखते समोवडियो मळे ने शास्त्रार्थ करवा बेसे तो तेमां हरावी दे तेथी तेमां वादविवाद करवानो भय प्रत्यक्ष देखायछे ; अनेक प्रकारना सद्गुणो होय पण ते जेनामां तेवा सद्गुण न होय तेवा खळ पुरुषो गुणने दोषरूपे देखेछे ने गुणीने सुखे रेहेवा देता नथी तेथी तेमां खळनो भय प्रत्यक्ष छे ; अने आ पंचभूतनां पुतळांरूप शरीरने मृत्युसमय आव्यो के क्षणवार पण रेहेतुं नथी, एक मटकुं न मराय तेटला वखतमां तेनो नाश थइ जायछे तेथी तेमां काळनो भय प्रत्यक्ष छे. आम संसारमां जेटली वस्तु जोइशुं

ते सर्वेनी उपर कांइ कांइ पण भय रहेलो ह-
शेज. जे भयवाळी वस्तु होय ते माणसने निर्भय
केम करी शके ? ज्यारे वैराग्यनो भाव उत्पन्न
थायछे त्यारे पछी भोगादिक अने तेनाविषे संभवे
एवा भयआदि कशुं स्फुरतुं नथी. ज्यांसुधी वै-
राग्य न थयुं होय त्यांसुधीज भय छे. वैराग्य
थया पछी सदा निर्भय दशामां वृत्ति रहेछे.
आवुं सदैव निर्भय राखनारुं वैराग्य जेओ खरा
भाग्यशाळी, खरा विवेकी अने खरा मुमुक्षुओ
होयछे तेने प्राप्त थायछे. एवा मननांने गमे तो
कोलसो होय के गमे तो सोनानो कटको होय,
गमे तो विष होय के गमे तो अमृत होय, गमे
तो शत्रु होय के गमे तो मित्र होय, अने गमे
तो भारे वैभवोथी भरेलां घरबार होय के गमे
तो जेमां टाढतडका पड्या करे तेवुं जंगल होय,

ते बधुं तेने एक सरखुं देखायछे. आम छतां पण तेओ अपतिव्रता स्त्रीना जेवां चंचळ मननो विश्वास नहि राखवाना हेतुथी सदैव वैराग्यने वधारनारां वनमां के पुण्यरूप तीर्थोमां पोतानी पवित्र वृत्तिने दोडाव्या करेछे. भर्तृहरि कहेछे के

गंगातीरेहिमगिरिशिलाबद्धपद्मासनस्य
ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिनायोगनिद्रांगतस्य ।
किंतैर्भाव्यंममसुदिवसैर्यत्रतेनिर्विशंकाः
संप्राप्स्यंतेजठरहरिणाः शृंगकंडूविनोदं ॥

गंगा नदीने कीनारे हिमगिरिनी शिला उपर जेणे पद्मासन बांधेलुं छे, अने ब्रह्मनां ध्यानना अभ्यासनी विधिवडे योगनिद्रा पामलो एवो हुं, तेने, शुं एवा दिवसो आवशे के जे दिवसोमां वृद्ध हरणो शंका वगरना थइने पोतानां शीगडांनी खरज मटाडवानो विनोद पामे,

अर्थात् मारी एवी अविचळ समाधिवाळी स्थिति क्यारे थाय के जेम झाडना थडमां के पथ्थरपर पोतानां शींगडां हरणियांओ घसीने पोतानी खरज मटाडेछे तेम मारां शरीर उपर घसीने मटाडे.

आ प्रमाणे उत्तम लक्ष वैरागी पुरुषोनुं रहेछे.

संसारनां बंधनथी छुटवानां द्वाररूप आ मनुष्यनो देह कोइ पुर्वनां पुण्यथी प्राप्त थायछे. प्राप्त थया पछी पूर्वना संस्कार सारा होवानेलीधे सारां शास्त्रोनो ने सारा पुरुषोनो संग थाय छे. ए संगममां जन्ममरणमां अने व्यवहारमां तथा बीजा पश्वादिकना अवतारमां केवां केवां दुःख छे तेनुं श्रवण थइ तेनी सत्यता उपर दृढ विश्वास बेसेछे. ए विश्वास बेठा पछी तेवां दुःख फरीने न खमवां पडे एवी इच्छा थवाथी मन

तेवा तेवा उपायो शोधेछे. जगत्मां जेटला ना-
मरूपवाळा पदार्थो छे तेटला बधा आधि व्याधि
अने उपाधि करनारा छे एटलुंज नहि पण तेमां
आसक्ति थवाथी अति दुःख थायछे एम निश्चय
थवाथी आखा संसारमां दुःखबुद्धि थायछे. दुः-
खबुद्धि थवाथी संसारना व्यवहारो अने सघळां
सुखो अग्निनी ज्वाळा जेवां त्रास उपजावनारां
जणाय छे अने तेथी ते जरा पण रुचतां नथी.
आवी रीते मन संसार तरफ बेसतुं नथी तेनी
साथे पोताना वर्णनो ने आश्रमनो धर्म पाळवामां
आवतो होय, तथा पुण्य पामवाना हेतुथी कृ-
च्छ्रचांद्रायण आदि व्रतो करवामां आवतां होय
तेथी अने ईश्वर प्रसन्न थाय एवा प्राणी मात्र उपर
दया राखवा आदि गुणोथी निर्मळ रहेलुं अं-
तःकरण वैराग्य उपर वळे छे. वैराग्यमां

प्रवेश थयेलुं मन संसारना विषयभोग सामुं कदी जोतुं नथी. ए क्रमे के बीजा कोई पण क्रमे अथवा तो कोइ पण कारणे पोतानो वर्णाश्रम धर्म पाळवो तथा चांद्रायण आदि तप करवां तथा ईश्वर प्रसन्न थाय तेवा दया आदि गुण राखवा, ए सर्वेए सहित थयेलो वैराग्य उत्तम गति अपावनारो थाय छे.—वैराग्यविषे भगवान् शंकराचार्य कहे छे के.—

ब्रह्मादिस्थावरांतेषुं वैराग्यंविषयेष्वनु ।
यथैवकाकविष्टायां वैराग्यंतद्धिनिर्मलं ॥

ब्रह्मा आदिथी ते छेक स्थावर पर्यंत जेटला विषयो छे तेनेविषे कागडानी विष्टानीपेठे ग्रहण करवानी इच्छा रहे नहीं तेनु नाम निर्मळ वैराग्य केहेवाय.

ब्रह्मांडथी मांडीने छेक खडनां थुंबडां सुधीना जे जे विषयो होय तेनी उपर जेम श्वाननी

के गर्दभनी विष्टाउपर अथवा उलटी करी ना-
खेलां अन्नउपर वृत्ति जाय नहि तेम वृत्ति जाय
नहीं, एवी निर्मळ वैराग्यमां स्थिति रहेछे. एवी रीते
स्थिति थवी ए बहु कठण छे. साचांखोटांना
विवेक वगर ए वैराग्य थइ शकतु नथी. प्रत्येक
पदार्थविषे विचार करी सत्यने अने असत्यने
जाणवुं ए विवेक केहेवाय. ज्यांसुधी सत्य के
असत्य जाण्युं न होय त्यांसुधी सत्यनुं ग्रहण
अने असत्यनो त्याग थइ शकतो नथी अने वै-
राग्यनुं अधिकारी थवातुं नथी अने सदैव दुःख-
नोज अनुभव करवो पडे छे. साचांखोटांनी समु-
जणथी ज्यारे मोक्षना द्वाररूप वैराग्य प्राप्त थाय
छे त्यारे पछी अंतःकरण नियममां रहेछे,
अनेक प्रकारना विषयोपर दोडवाने बदले
आत्मकल्याणना विचारमां वळगे छे, तथा पांच

कर्मेन्द्रि अने ज्ञानेंद्रियो पण नियममां रहीने विषयोपर दोडती नथी. आवी रीते अंतःकरण अने इंद्रियो वश थवाथी शम तथा दम सचवाइने शद्बादिक विषयोथकी एनीमेळे निवृत्ति थायछे. शद्बादिक विषयो असत्य, बंधनने आपनार अने दुःखरूप छे एम ओळखाइने तेथी निवृत्ति थइ होय तेनुं नाम उपरति केहवाय. शम, दम अने उपरति पछी तितिक्षा थायछे. जे कांइ दुःख आवे ते अथवा कोइ दुःख दे ते सहन करी लेवुं ते तितिक्षा केहवाय. जेने तितिक्षा थइ होय तेनाथी बीजाने कदी दुःख थतुं नथी. वैराग्यथी जेम शम, दम, उपरति अने तितिक्षा संपादन थाय छे, तेमज ते थया पछी अथवा तो सर्वनी साथे श्रुत्यादिक वाक्योनेविषे, सत्पुरुषोना सद्बोधने विषे अने परमा-

त्मानेविषे श्रद्धा उत्पन्न थाय छे अने ईश्वरनुं अने पोतानुं स्वरूप ओळखवानी इच्छा थायछे. एवीरीते वैराग्य थवाथी अने शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा अने आत्मा-परमात्मानुं स्वरूप जाणवानी इच्छारूप साधनोथी संसारमांथी छूटवानी वृत्ति थाय छे. एवी वृत्तिमांथी अनेक वैराग्यादि साधनोनो प्रवाह चालु रेहेतां शास्त्र तथा सत्पुरुषद्वारा बोध थइ परमपद पमाय छे.

वैराग्यथी ने बीजां साधनोथी पोताना सद्विचारमां गुंथाइ रहेला पुरुषो प्रसन्न थइने फर्या करे छे. संसारमां कोइ तरफथी थतां दुःख-सुख के मानापमानने ते लेश पण गणता नथी. आवी रीते वैराग्य सर्वने आनंद आपनार छे. जगत्मां दरेक पदार्थो एवा छे के ते जेना स्वाधीनमां होय तेनेज सुख उपजावे छे, पण

वैराग्य तो एक छतां जे जे ग्रहण करे छे तेने तेने भिन्न भिन्न थइने अत्यंत सुख आपे छे. वैराग्यनुं सुख निरवधि छे केमके तेथी सघळो भय टळी जायछे. ते शिवाय जेटलां मोटां स्वप्न जेवां संसारनां सुख छे ते भयभरेलां होवाथी दुःखरूप छे अने ते ज्यांसुधी वैराग्य न थयुं होय त्यांसुधीज मधलाळनीपेठे मीठां जणाय छे पण वैराग्यथी ज्ञान थतां पछी सघळां सुखप्रत्ये दुःखबुद्धि थइ जाय छे. आवुं सुखरूप वैराग्य के जे सर्वेने सुख आपे छे तेने ग्रहण करवुं जोइए. संसारने तजी चाली नीकळनारनी वात जुदी छे परंतु जेओने गृहस्थाश्रममां रही संसारनो व्यवहार चलाववो होय अथवा प्रारब्धयोगथी चलाव्या वगर चालतुं न होय तेने पण वैराग्यादि साधनोथी जेटली सेहेलाई थाय

छे तेवी बीजा कशाथी थती नथी. एक विनय विवेक ने विरागवाळो पुरुष व्यवहार चलावतो होय ते, एक विनय विवेक के विराग वगरना पुरुषना करतां हजार गणे दरज्जे सारो ने पीडा नहीं थाय तेवो चाले छे. आम सर्वे प्रकार वैराग्य स्तुतिपात्र अने ग्रहण करवा योग्य छे माटे ते उपर लक्ष खेचावुंज जोइए; केमके संसारना दुःखरूप ताप दूर करवामां ते सुखना सागररूप छे.



* शत्रौ पुत्रे मित्रे बंधौ
मा कुरु यत्नं विग्रहसंधौ ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं
वाञ्छस्यचिराद्यदिविष्णुत्वं॥१०॥†

अर्थ.

शत्रुओनेविषे क्लेश करवामां प्रयत्न न कर अने पुत्र मित्र तथा कुटुंबीनेविषे संधि करवामां

---

* समान पणुं ए मोहने मटाडनार छे माटे वैराग्यने बतावीने तेना अंगरूप हवे शत्रौ पुत्रे ए श्लोकमां सर्वमां समान थवाने सूचवे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† पुत्रो अने मित्रो अने संबंधिमां तुं संपनुं,
न करीश शत्रुविषे प्रयत्न कदापि कोय कुसंपनुं;
इच्छे कदी जो विष्णुपदने पामवाने तरत तो,
तुं सर्व ठेकाणे रहे सरखां हृदयथी वरततो. १०

प्रयत्न न कर. जो तरत विष्णुपद पामवाने इच्छा करतो होय तो सर्व ठेकाणे सरखां चित्तवाळो था.

टीका.

पोतानां धन, माल, प्रतिष्ठा अने प्राणने हरी लेनार जे होय तेने संसारमां शत्रु कहे छे. एवा शत्रुने साथे क्लेश करवो अने तेनो पराभव करवो एवी रीति जगत्‌मां प्रसिद्ध छे. जओ पोताना कल्याणनां सर्वे साधनोनो नाश करावनारा खरा शत्रुओ छे तेने तो कोइ ओळखी पण शकतुं नथी. जेओ ओळखी शके छे तेओ तो तेमने शत्रुने बदले मित्ररूप देखे छे एटले ते तेमने दवला केम लागे? काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद अने मत्सर ए महाबळवान् शत्रुओ सर्वने माथे छे. ए शत्रुने कोइ जीतवाने इच्छतुं

नथी ने ते सेहेलाइथी जीती पण शकाता नथी. लोको संसारना शत्रुओने कदि तावे करे तोपण ज्यांसुधी पोताना शरीरना शत्रु तावे न थया होय त्यांसुधी ते वृथा छे. संसारना शत्रुने वश करनार माणस कदी हुं पराभवथी छुटो थयो एम माने तोपण ज्यांसुधी शरीरना शत्रु नथी जीताया त्यांसुधी अनेक पराभवमां पडवानुं निरंतर छे एम समजवुं. कामादिकनी साथे इंद्रियो पण शरीरमांहेना प्रबळ शत्रुओ छे. उघाडी तरवार लइने उभेला लाखो शत्रुनी फोजने कदि कोइ जीती शके परंतु पोतानां शरीरमांनी इंद्रियोने जीतवा वखते तेनुं शूरातन गळी जाय छे. विचारवुं जोइए के त्यारे शरीरना शत्रुओ केवा बळिया छे? मणिरत्नमाळाना कर्त्ता कहे छे के **'केशत्रवः संति निजेंद्रियाणि'** (शत्रु कोण छे?

पोतानी इद्रियो छे तेज शत्रुछे.) आ वात अनुभवथी साव साची जणाइ रहे छे. जेणे कामादिक छ-विकार ने इंद्रियोने जीती छे तेना शत्रुओ एनी-मेळे जीताइ जाय छे. घरमां अने बहार एम बेय जग्यापर जो आग लागे तो चंचळ माणसो तरत पेहेलवेली घरनी आग ओलवीने पछी बहारनी ओलववा प्रयत्न करे छे. पण आ वातनो नियम तेओ सर्व ठेकाणे एकसरखो नथी राखता. शरीरमां रहेला कामादिक शत्रुओ घरनी आग जेवा छे अने संसारना व्यवहारथी थयेला मनुष्यशत्रुओ बहारनी आग जेवा छे. माटे पेहेलां शरीरना शत्रुओने नरम पाडी नाखवा जोइए. जेओ शरीरना शत्रुओने नरम पाडनार छे तेमने पछी बहारना शत्रुओज उत्पन्न थता नथी. कामादिक विकार मनमां थाय छे,

इंद्रियो सर्वे मनने आधीन छे माटे मुख्यतो मन छे एज शत्रु छे माटे तेनेज वश करी लेवुं जोईए. जेटलां साधनो होय तेटलां साधनो मनरूप शत्रुने वश करवाने कामे लगाडवां जोईए. सारांश ए समजवानो छे के कल्याणनी इच्छावाळाए द्वेषथी कोइनीसाथे क्लेश न करवो अने ते मन वश थवाथी थतोज नथी.

संसारमां मित्रो अनेक कारणथी थाय छे. केटलाक स्वार्थथी थाय छे, अने केटलाक पूर्वना संस्कारथी कांइ सहज प्रसंग थतां थाय छे. कांइ कारणसर करेला अने स्वार्थथी थयेल मित्रो खरा मित्रोनी गणनामां गणावा योग्य नथी. खरा मित्रो जे थाय छे, तेतो सारे मार्गे चडावे, दोषने ढांकी दे, गुणने प्रकाश करे अने दुःखसुखमां भाग ले. आ प्रपंचरूप संसारमां एवा खरा

मित्रो मळवा कठण छे. परिणामे तेवा मित्रोमां पण मित्रपणानी संभावना करवी ए दुःखकारक छे; माटे तेनी साथे स्नेह रेहेवानुं प्रयत्न करवुं नहीं.

धर्मनां काम करवा माटे पाणी ग्रहण करेली पत्नीमां पोताथकी जे पुरुषप्रजा थाय छे ते पिताने पुं नामना नरकथी तारे छे माटे तेने पुत्र केहेवाय छे. जे आज्ञा माननारा अने सेवा करनारा आस्तिक पुत्र होय ते तो सुख आपनार थाय छे. परंतु तेथी उलटा होय तो महाताप उत्पन्न करनारा थाय छे. सत्पुत्र होय ते पण परिणामे संसारमां बंधन करावे छे माटे तेनी साथे स्नेह रेहेवानुं प्रयत्न न करवुं.

तेमज पोताना गोत्रमां थयेला संबंधियो होय ते बंधु केहेवाय छे, एओनी साथे पण संधिनुं प्रयत्न राखवुं ते बंधनकारक छे माटे तेम न करवुं.

मित्र, पुत्र अने संबंधी, संसारमां सुख आपनारां छे; परंतु विचार करतां ते पण दुःख आपनारां थइ पडे छे. तो पण तेमनी साथे लोको स्नेह वधारता जाय छे. संसारमां खरा मित्रो, खरा पुत्रो अने खरा संबंधियो जे केहेवाय छे तेनाथी पण परिणामे खरुं मित्रपणुं, खरुं पुत्रपणुं अने खरुं बंधुपणुं जणावनारा जे जे गुणो के सदाचरणो शरीरमां रहेल छे तेनी उपर अवश्य प्रेम राखवो जोइए. पुत्र, मित्र के संबंधीमां बंधायलो प्रेम शरीर छूटतां अविवेकी माणसने अति बंधन आपनार थइ पडे अने गुणो उपर थयेलो प्रेम शरीर छूटतां कल्याण करनारो थाय छे. सद्विचार ए सन्मित्रनीपेठे व्यवहारसंबंधी अने परमार्थसंबंधी सारो मार्ग देखाडे छे. सत्य ए सत्पुत्रनीपेठे नरकमां पडतां अटकावे छे.

दया आदि अनेक गुणो सारां संबंधियोनीपेठे संसारमां सुख उपजावी परमार्थना मार्गनां साधनरूप थाय छे. माटे जो प्रीति राखवी एम इच्छा होय तो क्यां तेउपर नथी रखाती? पण लोको ते वातने तो समजताज नथी. सारां शीलने संभारताज नथी, दयाने देखताज नथी, विवेकने वेगळो राखे छे, पवित्रपणाने परहरे छे, शांतिने तरछोडी नाखे छे, सत्यने सामुं जोता नथी, दमने दाटी मेले छे, शमने नसाडी मेले छे, श्रद्धाने धकेली मेले छे, अने वैरागने वेतो करे छे. एम सघळां सदाचरणो जे पुत्र, मित्र अने बंधु करतां वधारे सुख आपनारां परिणामे थाय छे तेमने तो कोइ संभारतुं पण नथी; अने मात्र मित्र, पुत्र अने बंधुमांज प्रीति रेहेवानुं प्रयत्न करे छे; परंतु तेनी प्रीति माटे पण प्रयत्न करवुं ए पण केवळ थोडी समजणनुं कारण छे.

शत्रु साथे कुसंप थवानुं प्रयत्न न करवुं अने मित्रादिकनी साथे संपने थवानुं प्रयत्न न करवुं तेमां सार ए नीकळे छे के रागद्वेष अंतःकरणमांथी काढी नाखवा; केमके संधिविग्रह ए रागद्वेषथी थनारा छे. ए रागद्वेष उत्तमपद पामवानां साधनोमां विघ्न करनारा थई पडे छे, माटे तेने मेलीने अंतःकरण शुद्ध करवुं.

जेने तरत विष्णुपद पामवानी इच्छा होय तेणे आम रागद्वेष मेलीने सर्व ठेकाणे समान चित्त राखवुं जोईए. परमपद पामवानुं जे साधन छे ते समचित्तपणुं कांई सहज नथी. ने सहज होय तो महा दुर्लभ परमपदने पमाडनार केम थाय? सर्वत्र शब्दथी आखी त्रिलोकीमां नामरूप जे कांइ छे ते सर्वनेविषे समानदृष्टि राखवापणुं सिद्ध थाय छे. रागद्वेषथी रहित थयेलां अंत-

करणमां पोतानां स्वरूपनो अनुभव करी पोताम-
य आखां जगत्‌ने जोवुं ए समानदृष्टि केहेवाय.
समानदृष्टि जेने थइ होय ते, ते उत्तमपदने पो-
चेलोज छे एम समजवुं. जेओनी ममता गइ न
होय, जेओनां काळजां कामे कोरी खाधां होय,
जेओने क्रोधे आंधळां करी मेल्या होय, जेओने
लोभे अधवचमां लटकावी राख्या होय, जेओने
मदे दबावी दीधा होय, जेओने मोहे हरावी दीधा
होय, जेओने मत्सरे संहारी नांख्या होय, जेओ
तृष्णाना तरंगमां तणाता होय, जेओ आशाना
पाशमां सपडाई गया होय, जेओ हिंसामां हु-
शियार थया होय, जेओ चोरीमां चतुर होय,
जेओ अन्यथाकाममां कुशळ होय, जेओ रागना
गारामां गुची गया होय, जेओ द्वेपना डुंगरमां
दटाइ गया होय अने टुंकामां जेओ सर्वे दुर्गु-

णथी भरेला होय, तेओने समचित्तपणुं क्यांथी आवे अने समचित्तपणुं न आवे तो पछी उत्तमपदनी प्राप्ति पण केम थई शके? भलेने वनमां वसी फळफूल खाता होय के टाढतडकानां दुःखो सहन करता होय, पण तेवा त्यागीओ पण समदृष्टि थयाविना अधवचेज रहे छे. कोइ विषय कोई अधिकारी होय तेने तरत अंतःकरणमां उतरी जाय छे ते वात नोखी छे, परंतु साधारण नियम एवो छे के जे कांइ शीखवुं होय तेने माटे प्रथमथी अभ्यास जोईए. नठारुं अभ्यासविना आवडे छे अने सारुं जे शीखवानुं छे ते अभ्यास करतां पण मांड मांड आवडे छे; माटे समचित्त थवा माटे पण प्रथमथीज अभ्यास जोईए. ए अभ्यासने अविद्याथी थयेलो मोह थवा देतो नथी. मायानी रचना केवी छे ते कांइ

कही शकातुं नथी. मनुष्य ज्यांथी जन्मीने समजणुं थवा मांडे छे त्यारथी आ हुं अने आ मारुं एवी ममता बंधावा लागे छे. आ मारुं शरीर, आ मारां संबंधी, आ मारी स्त्री, आ मारी प्रजा, आ मारुं धन, आ मारी मिलकत, आ मारा नोकर, आ मारां पशु, आ मारां पक्षी, आ मारुं घर, . आ मारी धरती, आ मारी सत्ता अने आ मारो हुकम एवो दृढ निश्चय अभ्यासथी थइ गयेलो होय छे एटले तेवी ममतामां चाल्या जता दिवसो जाणवामां आवता नथी. पण परिणामे तो कोइ कोइनुं नथी. धन, धाम, धराआदि सघळा पदार्थो अभ्यासथी ममत्व बंधायुं होय छे तेथी मारा छे एम लागे छे. तेते पदार्थोनो वियोग थाय के नाश थाय तोपण तेमांथी खोटुं ममत्व मटी जतुं नथी एज मायानो महिमा. श्रीभर्तृहरि कहे छे के,—

आदित्यस्यगतागतैरहरहःसंक्षीयतेजीवितं
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिःकालोनविज्ञायते।
दृष्ट्वाजन्मजराविपत्तिमरणंत्रासश्चनोत्पद्यते
पीत्वामोहमयींप्रमादमदिरामुन्मत्तभूतंजगत् ॥

सूर्यना उदयअस्तथी निरंतर आयुष्य ओछुं थतुं जाय छे ते जाणवामां आवतुं नथी; घणां कामरूपी भारथी भारे लागे तेवा जगत्‌ना व्यापारोथी काळ चाल्यो जाय छे ते जाणवामां आवतुं नथी, अने जन्म जरा विपत्ति अने मरणने देखतां छतां पण त्रास उपजतो नथी, एनुं कारण एज के मोहथी भरेली प्रमादरूप मदिराने पीवाथी जगत् उन्मत्त थइ गयुं छे.

एक आंख वीचीने उघाडिये तेटली वारमां पण जेटली सूर्यनी गति थाय छे तेटलुं आयुष्य ओछुं थाय छे. एम ने एम जेटला जेटला दिवसो

उल्लंघन थता जाय छे तेटला तेटला आयुष्यमांथी ओछा थता जाय छे; पण आपणे तो उलटुं एमज जाणिये छिये के दिवसो जेम जता जाय तेम आपणे आयुष्यमां वधता जइए छिये; निरंतर अनेक प्रकारनां संसारव्यवहारनां कामोमां क्यां दिवस उगे छे के क्यां अस्त थाय छे के केटलो काळ सार्थक थयो ते कशुं जाणता नथी, पण उलटुं एमज जाणिये छिये के एवी रीते संसारव्यवहारमां माथुं पण उचुं न थइ शके एम काम करवाथी आपणो वखत आपणे जाण्यो छे; पोताना जन्मथी मांडीने जरा अवस्थासुधी अवस्थाने, विपत्तिने, अने थवानां मरणने जोइने आपणने भय नथी थतो पण उलटुं क्रमे क्रमे अवस्था पामतां पामतां राजी थतुं जवाय छे अने विपत्ति के मरण आपणेमाथे छेज नहि एम निर्भय थइने

फरिये छिये; ए बधुं मोहथी थाय छे. खोटुं होय तेम छतां खरुं लागे तेनुं नाम मोह केहेवाय. आ मोह आखा जगत्मां व्यापी रहेलो होय त्यां लोको पोतानुं हित केम विचारी शके? मोह होय त्यांसुधी ममता मटे नहीं, ममता होय त्यांसुधी रागद्वेष मटे नहीं, रागद्वेष होय त्यांसुधी संधिविग्रह मटे नहीं अने समचित्तपणुं थाय नहीं. पूर्वपूण्य ने शास्त्रना तथा सत्पुरुषना संगथी मोह निवृत्त थाय छे, परंतु तेने माटे अभ्यास पेहेलेथी पाडवो जोइए. जेम मोटो रोग होय तेने माटे ज्यारे घणा दिवस ओसड खवाय त्यारे ते रोग जाय तेम अनेक काळना मोहने मटाडवा माटे घणा काळसुधी अभ्यास करवो जोइए. एम करतां धीरे धीरे समचित्त थइ जवाय. अज्ञानियो जे पदार्थोनेमाटे रागद्वेष

राखे छे तेवा पदार्थों के विषयो निरंतर नाश-
वान् छे ते उपरथी रागद्वेष राखवो ते वृथा छे
एम ते ते पदार्थों जणावी आपे छे, तेम छतां
पण अज्ञानथी आंख उघडती नथी. स्त्री, पुत्र,
घरबार, अने बीजा मोहना पदार्थो जे वखते
काळना योगथी नाश थाय छे ते वखते तेमां
बंधायेला राग (प्रीति) थी बहु पीडा थाय छे.
ए पीडा न थवानुं ओसड ए छे के ते ते पदार्थो
के विषयो जेओ रागद्वेप उत्पन्न करनारा छे ते
पोताने न तजे ते पेहेलां पोते मनथी तेने तजी
देवा; केमके आमेय ते जवाना तो छेज. राग-
द्वेष, सुखदुःख के संधिविग्रह करनारा पदार्थो
के विषयो, अंतःकरणथी तजाइने तेनो वियोग
थाय ते दुःखदायक थतो नथी, परंतु तेमां आ-
सक्ति होय ने ते ते पदार्थो के विषयो पोतानी

मेळे जता रहे तो ते वियोग अति दुःखदायक थाय छे. भर्तृहरि कहे छे के.—

अवश्यंयातारश्चिरतरमुषित्वापिविषया
वियोगेकोभेदस्त्यजतिनजनोयत्स्वयममून् ।
व्रजंतःस्वातंत्र्यादतुलपरितापायमनसः
स्वयंत्यक्ताह्येतेशमसुखमनंतंविदधते ॥

विषयो घणा काळ साथे रहीने अवश्य जता रहेनारा छे तो जता रहे तेमां अने आपणे तेनो बुद्धिथी त्याग करवो तेमां शो फेरछे के माणस पोतानी मेळो तेने मेलतो नथी. विषयो एनी मेळे जता रहे के आपणे बुद्धिथी तेने छोडी दईए ते बेयनुं नाम वियोगज केहेवाय तो पण तेना फळमां फेर छे ते ए के, जो ते पोतानी मेळे जता रहे छे तो मनने अतिपरिताप करावे छे अने आपणे तेनो त्याग कर्यो होय तो अति सुख आपे छे.

संसारमां पोतानी पासे अढळक धन होय ते-मांथी थोडुंक चोर चोरी जाय के कोइने त्यां राख्युं होय ते घाली जाय तो मनमां बहु परिताप थाय छे, परंतु पोताने हाथे सघळुं धन खरची नाख्युं होय के आपी दीधुं होय तो कशो परिताप थतो नथी तेम विषयोनुं पण छे. परंतु मोहथी तेम थइ शकतुं नथी माटे ए मोहने मटाडवा माटे सारां शास्त्रनो ने सत्पुरुषोनो संग राखवो अने अभ्यास करवो. ए अभ्यासथी क्रमेकरी आ शत्रु अने आ मित्र एवो भेद मटी रागद्वेष गया एटले समदृष्टिपणुं प्राप्त थयुं केहेवाय. जेओ समदृष्टिने पाम्या होय छे, तेओने सुखदुःख कशुं मनमां आवतुं नथी, प्राणीमात्रने तेओ पोतानी पेठे जुए छे, देहना धर्मने अनुसारे परनां दुःखथी दुखाय छे ने परनां सुखथी राजी थाय

छे. एओने संसारना भोगो प्राप्त होय तो पण बंधनकारक थता नथी मनने तेओए एवुं तो कबजे राखेलुं होय छे के एकसरखुं उत्तम मार्ग उपर चाल्युं जाय छे. सघळा व्यवहार करतां छतां पण तेमनुं लक्ष उत्तमपद पामवा तरफ होय छे. गोडबजाणिया पगमां शींगडां बांधीने बे वांसना मध्यमां बांधेला नाडाउपर नाचे छे पण तेनुं लक्ष कुशल रीते ए दोरी एक छेडेथी बीजा छेडासुधी वटी जवा उपर होय छे. तेम समदृष्टिवाळानुं लक्ष ईश्वरनां पदने पोंचवा तरफ रहे छे. जेने फरी फरीने जन्म-मरणनां दुःखो खमवानी इच्छा न होय, जेने पशुपक्षियादिकना दुःखरूप अवतारोनो फरीने अनुभव लेवो न होय, जेने दुर्लभ मनुष्यजन्मनुं साफल्य करवुं होय, जेने सर्वदा सुख संपादन

करवानी उच्छा होय अने जेने भवाटवीनां दु:ख देखी डर लागतो होय तेणे समजण आवे त्यांथी कामक्रोधादिकने जीती इंद्रियोने आधीन राखी मनने वश करी एवो अभ्यास करवो के समचित्त थइ ईश्वरनां पदविषे लक्ष बंधाइ जाय. जाणवाने बुद्धि ईश्वरे आपी छे तेनी एज सार्थकता छे केमके फरी फरीने पाछो तेवो संयोग थवो कठण छे. जगत्मां अनेक साधनो कदि ईश्वरना पदने पामवानां हशे परंतु ते साधनो करतां क्रमे क्रमे समचित्तदशा जे प्राप्त थाय छे ते सर्वोत्तम साधन छे, के जेनेमाटे सिद्ध लोको वनमां वसी वननां फलफूल खाइने पोताना हितमाटे संसारनो त्यागकरी अभ्यास करे छे. जो अंतःकरणमांथी खरी इच्छा होय तो गमे ते दशामां ने गमे ते वर्णाश्रममां आ उत्तमपद

पामवानुं साधन करी शकाय छे. संसारनां अनेक सुख संपादन करवामां जे पोताने अनुकूळ रहे तेनी साथे स्नेह थाय छे अने जे ते सुखमां विघ्न करनार होय छे तेनी उपर द्वेष थाय छे. आ नियम मनुष्यमां छे तेमज नथी, पण पशुपक्षियोमां पण प्रसिद्ध छे. एक कुतराने पण पोतानी डबमां अने पोतानां कुरकुरियां, तथा पोतानी स्त्रीउपर प्यार होय छे अने बीजा जे पोतानां कुरकुरियांने मारनार, स्त्रीने हरीजनारने अन्न खाई जनार होय छे ते साथे कजीयो थाय छे. विचारवुं जोइए के त्यारे माणसमां ने तेमां शो फेर ? मनुष्य सारुं नरसुं समजी रागद्वेष तजीदे तो तेमां फेर खरो, परंतु रागद्वेष न तजे तो पशुपक्षियो करतां पण ते हलकां केहेवाय; केम के खरुंखोटुं समजवुं ए माणसनो धर्म छे. पशु-

पक्षियोने तेटलुं समजवाने ईश्वरे ज्ञानशक्ति आपी नथी. एक कोई कुशळ नाटकाचार्य होय ते पात्रोने जे जे वेश आपे ते ते तेमणे बरोबर भजाववो जोइए, तोज तेनुं पात्रपणुं योग्य केहेवाय अने तोज तेने उत्तम लाभ मळे. तेमज आ जगत्रूप नाटकना नाटकाचार्य ईश्वर जीवोने जे जे अवताररूप वेश आपे ते ते अवताररूप वेश बरोबर भजाववो जोईए, तेविना उत्तम लाभ थतो नथी. सर्व सद्गुणथी संपन्न थइ सारुंनरतुं समजी नरतुं तजीने सारुं ग्रहण करी ईश्वर प्रसन्न थाय तेवे मार्गे चाली जन्ममरणना फेराथी छुटीने ईश्वरना पदने पोचवा प्रयत्न करवुं ए मनुष्यावतारनुं काम छे, अने मारांतारांमां मुझाई रही खाइ पीने उन्मत्तनीपेठे फरवुं ए पशुआदिनुं काम छे. मनुष्य थइने पण पशुनी क्रिया करे

तो पशु करतां पण तेनो उतरतो अधिकार ग-
णाय छे, माटे योग्य तो तेज केहेवाय के ईश्वरे
प्रसन्न थइ मनुष्यावतार आप्यो छे तो तेने घटे ते
प्रमाणे रागद्वेष आदि तजीने समचित्त थइने वि-
ष्णुपदने पामवाने प्रयत्न करवुं. ए शिवाय
बीजुं कशुं शुभ प्रयत्न आ संसारमां के आ अ-
वतारमां छे नहीं.



* त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णु
व्यर्थं कुप्यसि मय्यसहिविष्णुः।
सर्वं पश्य हि मायाजालं
सर्वत्रोत्सृज भेदज्ञानं ॥ ११ ॥†

अर्थ.

ताराविषे, माराविषे अने बीजा सर्वनेविषे एक विष्णु छे. अदेखो थइने मारी उपर वृथा रीस करे छे. खरेखर सर्व मायानी जाळने जो. चारेकोरथी भेदज्ञानने तजी दे

---

* त्वयि मयि० ए श्लोकथी पण समानपणाने तजवानो प्रकार कहे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† हुंमां अने तुमां अने अन्यत्र एकज छे हरि,
कोपे वृथा माराविषे असहनपणुं अंतर धरी;
प्रत्यक्ष मायाजाळरूपी जगत जो शुभ पेरथी,
आ हुं अने आ अवर एवी समज तज चोफेरथी. ११

टीका.

खडनां थुबडांथी मांडीने ब्रह्मापर्यंत जे कांइ नामरूपात्मक जगत् छे तेमां चारेकोर विष्णु व्यापी रहेल छे. जेम आकाशविना कोइपण भाग खाली नथी तेम ईश्वरविना कोइ पण भाग खाली नथी. जगत्नो अभाव संभवे परंतु तेमां रहेला ईश्वरना व्यापकपणांनो अभाव संभवे नहीं. पशु, पक्षी, अने मनुष्यादि प्राणीमात्र सर्व ए ईश्वरनी सत्ताथी सघळुं सामर्थ्य धरावे छे. ए ईश्वरनी सत्ताविना एक घासनुं तणखलुं पण उडी शकवा समर्थ नथी. सूर्य ए ईश्वरनी सत्ताथी तपे छे, वायु ए ईश्वरनी सत्ताथी वहायछे, जळ ए ईश्वरनी सत्ताथी वहे छे, समुद्र ए ईश्वरनी सत्ताथी मर्यादा मेलतो नथी, पृथ्वी ए ईश्वरनी सत्ताथी सर्वने धारी रहे छे, अने अग्नि ए ईश्वरनी

सत्ताथी सर्व बाळी देतो नथी. जे कांइ छे तेमां सर्वव्यापक विष्णु रहेल छे. एनी सत्तानी बहार कंइ छेज नहीं. श्रीभगवान् भगवद्गीताना ७ मा अध्यायमां अर्जुनने कहे छे के:—

मत्तःपरतरंनान्यत्किंचिदस्तिधनंजय ।
मयिसर्वमिदंप्रोतं सूत्रेमणिगणाइव ॥

हे अर्जुन ! मारा थकी बीजुं कांइ पण छे नहि. आ सर्व जगत् सूत्रमां पारानीपेठे मारेविषे परोवायेलुं छे.

तेज प्रमाणे दशमा अध्यायमां पण कहे छे के

अहमात्मागुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्चमध्यंच भूतानामंतएवच ॥

हे अर्जुन ! हुं आत्मा सर्व प्राणियोना अंतःकरणमां रह्यो छुं, तेम सर्व प्राणियोनो आदि मध्य अने अंत हुंज छुं.

तेमज वळी पंदरमा अध्यायमां पण वर्णवेछे के

सर्वस्यचाहंहृदिसंन्निविष्टो ।

मत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंच ॥

हुं सर्वना हृदयमां रहेलो छुं अने मारा थकी स्मृति, ज्ञान अने ज्ञाननो अभाव थाय छे

वळी अढारमा अध्यायमां दर्शावे छे के.—

ईश्वरःसर्वभूतानां हृद्देशेर्जुनतिष्ठति ।

हे अर्जुन ! ईश्वर सर्व प्राणियोना हृदयस्थानमां रहे छे.

आवां अने बीजां अनेक वाक्योथी श्रीकृष्णरूप पात्रद्वारा महाकवि व्यासजीए परमेश्वरने एक सर्वव्यापक वर्णव्या छे. श्रुति, स्मृति अने पुराणोमां पण तेज प्रमाणे ईश्वरनो महिमा गायो छे. श्रीमद्भागवतमां जुदां जुदां पात्रद्वारा श्रीव्यासजीए ईश्वरनुं सर्वव्यापकपणुं

देखाडी आप्युं छे. दितिप्रत्येनां कश्यपऋषिनां वचनथी हिरण्यकशिपुना पुत्र प्रल्हाद महा भगवद्भक्त थया हता. एक दिवसे पुत्र भणवा जेवडा थया एम समजी तेना पिताए प्रह्लादने गुरुने घेर भणवा मोकल्या. गुरुए घणुंए दैत्यकुलने छाजतुं भणाववा मांड्युं पण ते कशुं भण्या नहीं, केमके तेने माताना उदरमांथी नारदमुनिनी कृपावडे ज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं. पोते तो कशुं भण्या नहि परंतु बिजाओ जे दैत्यना छोकराओ भणता हता तेनुं अज्ञान जोइ दया आवतां ते सघळाने पण पोताना जेवुं ज्ञान आपवाने तत्पर थया. गुरु घरथी बहार गया ते समये जे पोताने ईश्वरसंबंधी ज्ञान हतुं ते ज्ञान तेणे दैत्यना छोकराओने आप्युं छे ते स्थळे पण श्रीप्रह्लादजीए कह्युं छे के.—

हरिःसर्वेषुभूतेषुभगवानास्त ईश्वरः ।

सर्व प्राणीयोनेविषे नियममां राखनार हरि भगवान् रह्या छे.

विशेष वर्णन करतां फरीने पण कह्युं छे के.—

सर्वेषामपिभूतानां हरिरात्मेश्वरः प्रियः ।

सर्व प्राणीओना भगवान् नियममां राखनार, आत्मा अने प्रिय छे.

आ प्रमाणे घणा प्रमाणोथी आदि कवि व्या-सजीए ईश्वरने सर्वव्यापक वर्णव्या छे. जे स-मये हिरण्यकशीपुए स्थंभमां प्रहार कर्यो ते स-मये भक्तनुं रक्षण करवा सारुं जड स्थंभमांथी लीलाविग्रहरूप नृसिंहावतारथी परमेश्वरे पोता-नुं सर्वव्यापकपणुं देखाडी आप्युं छे.

जे समये ब्रह्माए गोपालने अने वाछडांने हरी लीधां त्यारे पोतानुं सामर्थ्य बताववा श्री-

कृष्ण ते गोपाल अने वाछडारूप अने जे जे पदार्थो तेनी पासे हता तेरूप थइने कोईने खबर न पडे तेम एक वर्ष सुधी रह्या छे, ते ठेकाणे पण परमेश्वरे पोतानुं सर्वव्यापकपणुं तथा जे कांई छे ते ईश्वररूप छे एम देखाडी आप्युं छे. आ शिवाय पण **सर्वं विष्णुमयं जगत्।** (सर्व जगत् विष्णुमय छे) तथा **सर्वात्मा सर्वगः पुमान् ।** (परमेश्वर सर्वना आत्मा अने सर्वमां रहेला छे) इत्यादि वाक्य ईश्वरने सर्वव्यापक अने एक छे एम वर्णवे छे. आवां वाक्योथी अने अनुभवथी व्यापक एक ईश्वर मनवाणी तेने नथी पोचतां छतां जाणवामां आवे छे परंतु ए जाणवुं कांइ सेहेलुं नथी. कोइ महापुण्यनी प्रबलताथीज ते ज्ञाननो उदय संभवे छे. श्रीभगवाने पण अर्जुनने भगवद्गीताना ७ मा अध्यायमां कह्युंछे के–

नमांदुष्कृतिनोमूढाः प्रपद्यंतेनराधमाः ।
माययापहृतज्ञाना आसुरंभावमाश्रिताः ॥

मायावडे जेनुं ज्ञान नाश थयुं होय एवा अने असुरना भावने पामेला नठारां कर्म करनारा मूढ अधम पुरुषो मने पामता नथी.

अधम नरो ईश्वरनां स्वरूपने ओळखी पण शकता नथी त्यारे ते स्वरूपने पामी न शके ए वात संभवित छे. ईश्वरनुं स्वरूप ओळख्याविना पोतानुं अने पारकुं एवो भेद टळतो नथी. महाकरुणावाळा आचार्य करुणादृष्टिथी सर्व ठेकाणे एक विष्णुने जाणवाने उपदेश करे छे; केमके ए प्रमाणे जाणवाथी आ हुं अने आ तुं एवो भेद देखवामां आवतो नथी. आ शरीर पंचमहाभूतनुं पुतळुं छे तेने हुं छुं एम मानी जे अभिमान करवुं तथा पारकी ईर्ष्या करवी ते महाबंधनका-

रक अज्ञान छे अने ते आत्मानां एकपणांथी साव खोटुं छे. माटे सर्वव्यापक विष्णुने ओळखी रागद्वेषने तजी देवा एवो उत्तम बोध अहिं लेवानो छे. **आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पंडितः** (पोतानी पेठे सर्व प्राणीओनेविषे जुवे छे ते पंडित छे.) सर्वव्याक ईश्वरनुं ज्ञान थयाविना पोतानुं स्वरूप ओळखातुं नथी, केमके त्यांसुधी भेदबुद्धि रहे छे. जे समये ईश्वर सर्वव्यापक होवाथी हुंमां छे एवो बोध थयो के सर्वमां छे एम बोध तेज क्षणे थवाथी पोतानी समान आखुं जगत् देखाय छे. आ प्रमाणे ज्यांसुधी ज्ञान न थयुं होय त्यांसुधी सघळी पंडिताइ मिथ्या छे.

मायानी जाळरूप सर्व जगत् छे, तेने जोवुं अर्थात् अनुभवथी जाणी लेवुं एम अहीं उपदेश छे. जादुगरलोको अनेक प्रकारनुं जादु करे छे.

कोइ वार एक आंबानी गोठलीमांथी तरत मोटुं वृक्ष बनावी दइ तेमां फळ आवेलां पण देखाडे छे; कोइ वार कांकरामांथी रुपैयो करी देखाडे छे; कोइ वार रुपीयामांथी ठीकरुं करी मेले छे; कोई वार कागळना पडियामां भजीयां तळे छे; कोइ वार पासे पडेली वस्तु दूर गई होय एवो भास करावे छे; अने कोई वार अनेक प्रकारना मोह उत्पन्न करे एवी रचना के जे संभवे पण नहि तेवी देखाडे छे. आ सघळुं जेम देखवा-मात्र छे पण सत्य नथी तेम आ जगत् पण दे-खवामात्र छे, कांई सत्य नथी. ज्यांसुधी ज्ञान न थयुं होय त्यांसुधीज साचुं छे एम आभास थाय छे. जादुगरना खेल ज्यांसुधी जाणवामां न होय त्यांसुधी खरेखरा लागे, पण जाण्या पछी ते देखवामात्रज छे एम आपणने सिद्ध थाय

छे. जगत् पण ज्ञान थया पछी देखवामात्र अने असत्यज भासे छे. आपणे ज्यारे सुता पछी स्वप्नावस्था पामिये छिये त्यारे अनेक प्रकारना व्यवहार, नानाप्रकारना पदार्थो अने अनेक प्रकारनी संभवे पण नहि एवी रचनाओ जोइए छिये. कोइ वार आपणे संसारव्यवहार चलाविये छिये, कोइ वार कोइ घातकी प्राणीथी मरण पामिये छिये, कोइ वार पाताळमां जइए छिये, कोइ वार स्वर्गमां जइए छिये, कोइ वार राजा तो कोइ वार भीखारी थइए छिये, कोइ वार तो पक्षीनीपेठे पांखो थवाथी ऊंचा उडिये छिये, कोइ वार महा बंधनमां आवी पडिये छिये, कोइ वार अति स्वतंत्रता भोगविये छिये, कोइ वार भोजन पण करिये छिये ने कोइ वार महाशोकनुं कारण नजरे जोवाथी पोक मेलीने रोइए छिये;

परतुं ज्यारे पाछी जाग्रत अवस्था प्राप्त थाय छे त्यारे आपणे नकी जाणिये छिये के क्षणवारमां स्वप्नमां जे कांइ जोयुं ते साव असत्य अने ते अवस्थामां देखवामात्रज हतुं. आ प्रमाणे जगत् पण देखवामात्रज छे. जे वखते बोध थाय छे ते वखते ते वातनो खरेखरो अनुभव थाय छे. आवां मायानी जाळरूप जगतने जे जाणे छे तेने ते जगत् कशुं बंधनकारक थतुं नथी. उनाळामां सूर्यना किरणो पृथ्वीपर पडीने ज्यारे सारीपेठे तपे छे त्यारे ते स्थळे छेटेथी बहोळुं पाणी भरेलुं होय तेवो भास थाय छे, तेने झांझवानां पाणी कहे छे. ए पाणी तो मात्र नामनुं केहेवाय छे परंतु अरण्यमां वसनारां हरणो तापथी तरश लागतां शांत थवाना हेतुथी ते झांझवानां पाणी तरफ दोडे छे. पण तेथी शुं वळे ? गमे एटलुं दोडे तोपण तेने

छेवट तडकानी तपेली पृथ्वीनी उनी वराळ शिवाय कांइ मळतुं नथी. आथी बीचारां पशुओ अति हेरान थइ दुःखदायक दशा भोगवे छे. तेमज नाना प्रकारना विलास अने पदार्थोथी भरपुर आ जगत् झांझवानां पाणीनीपेठे अजाण मनुष्यने सत्य भासे छे तेथी पेलां पशुओनीपेठे अति दुःखदायक दशा भोगवे छे. जो खरुं ज्ञान थाय के आ जगत् झांझवानां पाणी जेवुं असत्य ने देखवामात्र छे तो पछी कशुं बंधन थतुं नथी. मोह उत्पन्न करीने जगत् खोटुं छतां बंधन करे छे माटे तेने जाळ जेवुं लेखवामां आवे छे. आ वात साचेसाची अने योगीओए अनुभव करेली छे एवो हेतु दर्शाववा आचार्यजीए हि शब्दनी योजना करेली जणाय छे.—

जगत् असत्य ने देखवामात्र इंद्रजाळ सरखुं

छे तेम छतां तेना विद्वानोए बे विभाग पाडेला छे. एक ईश्वरनुं रचेल जगत् छे अने बीजुं जीवनुं रचेल जगत् छे. पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश, ग्रह, नक्षत्र, पशु पक्षी, झाड, वनस्पति, देव, दानव, मानव, आदि जे कांइ देखवामां आवे छे ते ईश्वरनुं रचेल जगत् छे. ए ऐश्वरी जगतना पदार्थोमांथी जीव पोताना उपभोगना पदार्थोनी जे विशेष कल्पना करे छे, ते जीवनुं रचेलुं जगत् केहेवाय छे. जेम पिता पुत्रीने उत्पन्न करे छे अने तेनो भर्ता थाय ते तेने भोगवे छे, तेम ईश्वर जगतने उत्पन्न करे छे ने जीव तेने भोगवे छे. नाना प्रकारना पदार्थोने भोगवतां तेमां जे ममता जीव बांधे छे अथवा कोइ पदार्थने रचे छे ते जीवनुं रचेल जगत् केहेवाय. ईश्वरनुं रचेल जगत् महाप्रलयने समये नाश थाय छे अने

जीवनुं रचेल जगत् क्षण वारमां नाश थइ जाय छे. ईश्वरनुं रचेल जगत् एवुं चमत्कारिक छे के तेमांनो एक पदार्थ होय तेमांथी तेवो ने तेवो बीजो पदार्थ एनी मेळे उत्पन्न थाय छे. जीवनां रचेल जगत्ना पदार्थोमांथी तेवा ने तेवा बीजा पदार्थ वगर बनाव्ये बनता नथी. पुरुष ए एक ईश्वरनो बनावेल जगत्नो पदार्थ छे परंतु तेज पुरुषने जीवे जुदा जुदा रूपमां बनावेलो (मानी लीधेलो) जोइए छिये. कोइ केहेशे के ते मारो पिता, कोइ केहेशे के मारो भाइ, कोइ केहेशे के मारो जमाइ, कोइ केहेशे के मारो साळो, कोइ केहेशे के मारो पुत्र, कोइ केहेशे के मारो पति, कोइ केहेशे के मारो धणी, कोइ केहेशे के मारो नोकर, कोइ केहेशे के मारो शत्रु अने कोइ केहेशे के मारो मित्र;

एम एक ईश्वरे उत्पन्न करेला पुरुषने सहु
जुदो जुदो मानी लेछे. तेमज एक ईश्वरे
बनावेली स्त्री छे तेने कोइ केहेशे के मारी
माता, कोइ केहेशे के मारी बेहेन, कोइ केहेशे
के मारी पुत्री, कोइ केहेशे के मारी पत्नी, कोइ
केहेशे के मारी वहु, कोइ केहेशे के मारी
भाभी, कोइ केहेशे के मारी सासु, कोइ केहेशे
के मारी मामी ने कोइ केहेशे के मारी माशी;
एम एक स्त्रीने सहु जुदी जुदी मानी ले छे. आ
प्रमाणे जे जुदी जुदी रीते जुदा जुदा संबंधथी
मानवामां आवे ते जीवनुं रचेलुं होवाथी जीवनुं
रचेल जगत् केहेवाय. जीव कांइ जुदुं रचवाने
समर्थ नथी, पण ईश्वरनुं रचेल छे तेमां केवळ
कल्पनामात्रथीज ते विचित्र रचना करे छे.
विचार करतां जणाशे के जेटलुं ईश्वरनुं रचेल

जगत् छे ते बंधनकारक के दुःखकारक नथी, परंतु जीवनुं रचेलुं जे जगत् छे ते बंधनकारक छे. आनुं कारण ममत्व छे. एकज पदार्थ जेमां ममता बांधी न होय ते नाश पामे तो तेथी दुःख थतुं नथी, परंतु तेज पदार्थ जेमां ममता बांधी होय ते नाश पामे तो अतिदुःख थाय छे. कोइ एक स्त्री मरण पामे तो ईश्वरनी करेली तो एकज मरण पामे छे पण जीवनी करेली जेटला जीवोए जुदी जुदी मानी होय तेटली मरण पामे छे अने जेटला जुदी जुदी कल्पना करनारा होय छे तेने ते प्रमाणे जुदुं जुदुं दुःख थाय छे. आ प्रमाणे जीवनुं अने ईश्वरनुं रचेल जगत् एम बे विभाग पाड्या छे. जीवनुं करेलुंज जगत् बंधन आपनार छे. ईश्वरनुं करेलुं बंधन नथी आपतुं. सारांश ए के ऐश्वरी मायाथी रचायेला पदार्थो-

मां जेटलुं खोटुं ममत्व अने खोटी कल्पना करवामां आवे छे ते दुःखनो हेतु ने बंधनकारक छे, माटे ईश्वरनुं जगत् अने जीवनुं जगत् ए बेय जाणीने तेमां बंधनकारक शुं छे ते पण जाणवुं जोइए. सहु कोइ पोताना सुखनेमाटे उपाय शोधे छे माटे ते उपाय आ मार्गेथी मळे छे. सघळुं नाशवाळुं छे, ममता खोटी छे, झांझवानां पाणीनी पेठे देखवामात्र छे, अने ममत्व राख्याथी बंधन करे छे एम ज्यारे जाणवामां आव्युं त्यारे पछी विशेष बंधन के विशेष दुःख रेहेतां नथी. ज्यांसुधी जगत्ना पदार्थोमां ममत्व होय त्यांसुधी ईश्वरना जगत्मां जीवनां जगत्नो भेळ थवाथी ते जाळरूप छे अने ममत्व टळ्युं एटले पछी ईश्वरनुं जगत् कशुं बंधनकारक नथी. पण आश्चर्यनी वात ए छे के जेम ईश्वर जगतने

उत्पन्न करे छे तेम जीव पण जगतने उत्पन्न कर्याविना रेहेतो नथी. ईश्वर जेम पोताना रचेलां जगतमां लोटपोट थइ रह्यो छे तेम जीव पण पोतानां रचेलां जगतमां लोटपोट थई रहेछे. तेमां फेर एटलो छे के ईश्वर जगतना दुःखथी के आविर्भाव तिरोभावथी हर्षशोक पामी बंधातो नथी अने जीव तो पोताना कल्पी लीधेला जगतना दुःखथी के आविर्भावतिरोभावथी हर्षशोक पामी कोशेटाना कीडानी पेठे बंधाई पोते पोतानी मेळे दुःख पामे छे. आटला माटे जगत छे ते मायानी जाळ छे ते वात जाणीने तेथी बंधन न थाय तेनेमाटे चेती जवुं एवो आचार्यजीनो हेतु जणाय छे, केमके जगतने जाळरूप जाण्याविना अने जे कांइ छे ते ईश्वररूप छे तथा परमेश्वर सर्वव्यापक छे ते.

जाण्याविना अने ईश्वर सर्वमां होवाथी कोइ उपर पण कोप करवो ते पोता उपरज कर्या बरोबर छे तेवुं जाण्याविना सुखनी के कल्याणनी प्राप्ति थवी संभवती नथी.

आजकाल मोहरूप मदिरा पीने मदोन्मत्त बनी गयेला लोको जगत्नुं रूप नहि जाणीने अने ईश्वर सर्वव्यापक छे तेने नहि ओळखीने आ हुं, आ मारुं, आ बीजानुं, एवो भेद राखी रह्या छे. भेदना प्रकार अनेक छे. ज्यां जोइए त्यां जगतमां सर्व स्थळे सर्वमां भेदबुद्धिनो प्रसार थयेलो जोवामां आवे छे. सर्वव्यापक जगदीश्वर नामरुपवगरना अने एक छतां तेने नामरूपवाळा अने अनेक तरेहथी लोको भेदवाळा ठरावे छे. भेदवाळा ठरावीने पण पोतपोताने गमे तेम मानी मनमां समजी बीजा साथे रागद्वेष न राखता हो-

य तो घणुं सारु पण तेम न थतां अति क्लेशनां अने दुःखनां झाड उगाडे छे. व्यवहारमां एक पदार्थ जेने पोतानो मान्यो होय तेने जोवाथी राजी थाय छे ने नाश थवाथी खेद करे छे. सघळां प्राणियोमां पंचभूत अने प्राण सरखा छे तोपण संबंध अने स्वार्थ प्रमाणे तेमां ममत्व राखे छे अने ए ममत्वने लइने जेनी उपर ममत्व न होय तेने तिरस्कारनी नजरथी जुवे छे. आपणने जेवुं दुख थाय छे तेवुं सर्वने थाय, आपणने जेवी सुखनी इच्छा होय तेवी सर्वने होय, आपणे जेवी जीववानी आशा राखिये तेवी सहुए राखे, आपणे जेम ऐश्वरी मायाना चमत्कारनो नमुनो छिये तेम सर्व पण छे एम भेददृष्टिवाळा देखताज नथी. एक रझळतो भीखारी पोतानी भुखनी शांति करवामाटे आंधळो होवाथी लाकडी,

टेकतो कोइ एक काळी चामडीना कोकणस्थ पासे जइ उभो रह्यो. थोडी वार उभीने भीखारीए अन्न माग्युं ते समये पेला कोकणना रेवाशीए पोताना हाथमां अरधी सळगेली बीडी हती ते तेनी उपर फेंकी, जथी ते गरीब भीखारी दाझ्यो अने तेनां लुगडांमां काणां पडयां. पण शुं करे? एवा गरीब बिचारा कोइ आळ करे तोपण पेटनेमाटे सहन करे छे. आ आंधळो कोइए जाणीने मारी छेड नथी करी एम जाणी फरीने अन्ननी याचना करवा लाग्यो जेथी गोधाना जेवी गरदनवाळा ते कोकणना रेहेवाशीए ए आंधळाने 'चालो शीधो आपावुं' एम कहीने एक करडकणो कुतरो बेठो हशे तेनी उपर पग आवे तेम तेने चलाव्यो. आथी करीने पेलो कुतरो तेने करड्यो ने आंधळा साधुनो पग

लोहीलोहाण थइ रह्यो. आ तमासो जोइ कोकणनो रेहवाशी तमासो जोइने कोई राजी थाय तेम राजी थयो अने पेलो साधु तेने आशीर्वाद दइ चालतो थयो. आ प्रमाणे भणीगणीने पण पशुना जेटली पण अक्कल नहि पामेला घणा पुरुषो आ पृथ्वीमां छे. ज्यांसुधी भेदबुदि होय अने पशुना जेटलुं ज्ञान होय त्यांसुधी पारकानी पीडाविषे केम विचार आवे? झीणा जंतुथी मांडीने ब्रह्मापर्यंत सर्वेना प्राण सरखा छे, सहुने दुःख ने सुख सरखां लागे छे अने ते ऐश्वरी मायाना विलासरूप छे एम निरंतर समजवुं जोइए, पण रागद्वेषथी जेनां अंतःकरण भरेलां होय छे तथा खरां तत्त्वथी जे अजाण्या छे तेनाथी ते समजातुं नथी. जेओ तत्त्वने जाणनारा छे तेने पोतानुं पारकुं के सारुं माठुं एवो भेद होतो नथी. श्रीभगवान् कहे छे के—

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणेगविहस्तिनि ।
शुनिचैवश्वपाकेच पंडिताः समदार्शिनः ॥

विद्या अने विनयथी युक्त ब्राह्मणनेविषे, गायनेविषे, हाथीनेविषे, कुतरानेविषे, अने चांडालनेविषे पंडितो सरखी नजरवाळा होय छे.

आवी रीते जेने भेदबुद्धि न रही होय ते क्यांई पण क्लेश पामता नथी अने तेने बंधन थतुं नथी, तेम तेना तरफथी बीजाने पण बंधन थतुं नथी. समदर्शी थवुं एटले आजकाल केटलाक नवा सुधरेलाओ व्यवहारसंबंधी जातिभेद न राखवो एवो अभिप्राय लइ भागे छे ते मोटी भूल छे. तेनो सार ए ग्रहण करवानो छे के सर्वे प्राणियोनां शरीर सरखां, पचभूतथी बनेलां ने अपवित्र हाडकां चामडानां घर छे. सर्वेमां सर्वव्यापक ईश्वर एक होवाथी तथा

सहुने दुःखसुख एकसरखां लागे छे तेथी एओ सरखी रीते दया करवाने योग्य छे. हलकी जातिनुं कोइने जाणीने तेनी उपर थोडी दया राखवी अने भारे जातिनुं जाणी तेनी उपर वधारे दया करवी एम नहिं, पण सहु उपर सरखी दया करवी ने सर्वने पोतानी समान लेखवां. आ सिद्धांतविना जे अवळुं समजवुं ते तो मात्र अनर्थरूप छे. ज्यांसुधी अंतःकरणनो भेद न गयो होय त्यांसुधी बहारना गमे तेटला भेद मेली दीधा होय तोपण तेथी कंइ सारुं नथी अने अंतःकरणनो भेद टळी गयो होय ने बहारना भेद न टळ्या होय तो तेथी कंइ नठारुं नथी. सारांश समजवानो ए छे के सहुने पोतानी समान लेखवा, जेम पोतानां हितमाटे प्रयत्न करिये तेम सर्वमाटे करवुं ने जेम पोतामां ईश्वर

छे तेम तेओमां छे एम समजवुं. ए समजाया पछी पोतानुं ने पारकुं एवो भेद क्रमेकरी नाश पामे छे. त्यारपछीनी स्थितिमां पछी कशो क्लेश रेहेतो नथी. आ बधुं मन जो वश होय तो थाय छे. मन वश करी जेणे भेदज्ञान टाळ्युं तेज उत्तम स्थितिनो अधिकारी अने मनुष्यजन्मने सफळ करनार छे. जेओने अप्रिय जोइने खेद थतो नथी, जेओने प्रिय जोइने हर्ष थतो नथी, जेने पोतानां पारकामां अेकसरखी कृपादृष्टि छे, जेओ नाशवंत विषयोमां ललचाता नथी ने जेओ ईश्वरमय जगत् देखे छे तेओना अवतारने धन्य छे. आ जगत् मायानी जाल छे. एमां सर्व ठेकाणेथी भेदबुद्धि तजी देवी ए बोध समजाय तो सर्वोत्तम छे. जेटलुं दुःख अने बंधन छे ते भेदबुद्धिमां छे. भेदबुद्धि टळतां दुःख के बंधन

रेहेतां नथी. माटे सर्वत्र रहेला एक ईश्वरने ओळखी सर्व सत्पुरुषोए समदृष्टि थवाना प्रयत्न-मां तत्पर थवुं जोइए. समय चाल्यो जाय छे; वीती वेळा फरीने आववानी नथी; माटे पूर्ण लक्ष पोचाडीने समानदृष्टिवाळा न थवायुं तो पछी कांइ थवानुं नथी.



*** बालस्तावत्क्रीडासक्त**

स्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः ।

वृद्धस्तावच्चिंतामग्नः

परमे ब्रह्मणि कोपि न लग्नः॥१२॥†

अर्थ.

बाळक होय त्यांसुधी रमतमां आसक्त रहे छे, युवा होय त्यांसुधी युवतीमां प्रीतिवान रहे

---

* जगतनी जाळमां मनुष्य केवी रीते पराधीनतामां बंधाई रहेछे ते बालस्तावात ए श्लोकथी देखाडीने मोह दूर करवानुं सुचवे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† रमवाविषे राची रहे छे होय बाळक ज्यांसुधी,
तरुणीविषे ताकी रहे छे, तरुण रे'छे त्यांसुधी;
बूढा रहे छे त्यांसुधी चिंताचिता तजता नथी,
अहि कोइ पण भगवान उत्तम ब्रह्मने भजता नथी ।

छे अने वृद्ध होय त्यांसुधी चिंतामां बुडी रहे छे; एम उत्तम ब्रह्मस्वरूपमां कोइ पण मग्न थयो नहि. ! !

टीका.

मनुष्यजन्म धारण करवा माटे ज्यारे जीव माताना उदरमां आवे छे त्यारे तेने पूर्वजन्मनुं स्मरण थायछे तेथी अने गर्भवासनां दुःखथी बहु पश्चात्ताप थाय छे तेथी करी एवी भयंकर स्थितिमांथी छूटवामाटे ईश्वरनी स्तुति करे छे. माताना उदरमां उंधे माथे लटकतो जीव केवी रीते बंधनमांथी छूटवाने ईश्वरनी प्रार्थना करे छे तेविषे श्रीभागवतमां कपिलदेवजी पोतानां माता देवहूतिने आ प्रमाणे कहे छे.

" शरणागत जगत्नी रक्षा करवा माटे अनेक प्रकारना अवतार धरनार श्रीकृष्ण भगवानना पृथ्वी उपर चालता अने जेमां कोइ

प्रकारे भय नथी एवा चरणारविंदनी शरणे जाउं छुं, के जे भगवाने हुं के जे पापी छुं तेने न घटे एवो आ गर्भवास आप्यो छे. आ माताना शरीरमां पंचभूत, इंद्रिय अने अंतःकरणरूप मायाने (देहाकारपणांने) पामीने हुं जाणे कर्मथी बंधाइ गयो होउं एवी रीते रह्यो छुं ते, हवे शुद्ध, निर्विकार, अखंड ज्ञानस्वरूप अने आ तपतां हृदयमां जणाता परमेश्वरने नमस्कार करुं छुं. खोटी रीते इंद्रिय, गुण, पंचभूत अने चिदाभासरूपे थयेलो हुं के जे पंचभूतथी थयेलां शरीरमां खोटी रीते ढंकाइ रहेलो छुं ते, शरीरथी, अखंडित, प्रकृतिपुरुषना नियंता अने सर्वज्ञ ए परमेश्वरने नमुं छुं. जेनी मायाथी स्वरूपनी भुल थतां घणा गुण अने कर्मथी बंधायेला आ संसारना मार्गमां घणां दुःखथी फरतो आ

जीव, ते ईश्वरना अनुग्रहविना बीजी कयी युक्तिथी पोताना स्वरूपने पामे ? आ त्रण काळनुं मने ज्ञान थयुं छे ते आपनार कोण ? ए तो स्थावरजंगमोमां अंतर्यामीरूपे रहेला ईश्वरज. एटलामाटे जीवपदवीने पामेलो हुं त्रणे ताप टळवानेमाटे तेनेज भजुं. माताना शरीररूप गुफामां लोही विष्टा अने मूत्रना खाडामां पडेला, बहुज दुःखी थता अने अहींथी (गर्भवासमांथी) नीकळवामाटे पोताना महिनाओने गणता आ कंगाल जीवने हे परमेश्वर ! क्यारे बहार कहाडवामां आवशे ? जे आप जेवा महादयाळुए आ दश महिनाना प्राणीने आवुं ज्ञान आप्युं छे ते आप के जे दीननाथ छो ते पोते करेला उपकारथीज प्रसन्न रेहेजो; केमके आपना उपकारनो बदलो हाथ जोड्या शिवाय कोण आपी

शके ? बीजा पशु विगेरेने तो पोताना शरीरनां सुखदुःखनीज मात्र खबर पडे अने हुं तो जेणे आपेला विवेकथी शमदमआदिक पळाय एवी स्थितिमां छुं ते, भोक्तापणांथी अपरोक्ष देखाता आदिपुरुषने बहार अने हृदयमां परिपूर्ण देखुं छुं. हे परमेश्वर ! हुं घणां दुःखनी स्थितिमां छुं तो पण गर्भमांथी बहार नीकळवाने इच्छतो नथी; केमके बहारना अंधारा कूवामां पडेलाने आपनी माया व्यापी जाय छे, के जेने पछवाडे देहाभिमान अने स्त्रीपुत्र वगेरेना संबंधो प्राप्त थाय छे. एटलामाटे हुं अहींज रहीने धीरज राखी तथा आपना चरणने हृदयमां धरीने पोतानी बुद्धिनी सहायताथीज मारो संसारमांथी उद्धार करीश, के जे रीते अनेक गर्भमां निवास करवारूप दुःख पाछुं मने प्राप्त थशे नहीं."

ज्यांसुधी गर्भमां होय त्यांसुधी एवुं ज्ञान रहे छे पण पछी बहार नीकळ्या पछी ते ज्ञानने नाश थइ जइ अति अज्ञाननी दशा प्राप्त थाय छे, के जे दशामां परवशपणुं भोगववुं पडे छे. जन्मथी मांडीने मरणपर्यंत जेटलो काळ काढवो जोइए तेटला काळने शरीरना संबंधमां अवस्था केहेवाय छे. ए अवस्थाना त्रण भाग पाडेला छे. विद्वानोनी कल्पनाने अनुसरतीज जाणे केम मायानी रचना रचाइ होय तेम जगत्मां जोवामां आवे छे. जेम बीजी त्रिपुटीओ विद्वानोए कल्पेली छे तेम आ अवस्थानी त्रिपुटी पण छे. ए त्रिपुटीना त्रणे भागने भोगवे एवा कोकज भाग्यशाळी आ भवाटवीमां देखाय छे. हवे अवस्थानी त्रिपुटी बांधीने पेहेला भागनुं नाम बाल्यावस्था राख्युं, बीजा भागनुं नाम युवावस्था

अने त्रिजानुं नाम वृद्धावस्था राख्युं. पेहेली जे बाल्यावस्था छे तेमां बीजी पेटानी अवस्थानो समावेश थाय छे. जन्मथी मांडीने युवावस्थानो आरंभ थाय ते पेहेलांनी जेटली अवस्था छे ते बाल्यावस्था छे पण तेटला समयमां शरीर अने ज्ञानना फेरफारने लीधे बीजी पेटानी अवस्थाओ जेवी के कुमार, पौगंड, किशोर, ए नामथी कल्पाएली छे.—

कौमारंपंचमाब्दांतं पौगंडंदशमावधि ।
कैशोरमापंचदशं यौवनंतुततःपरम् ॥

पांच वर्ष सुधी कुमार अवस्था, दश वर्ष सुधी पौगंड अवस्था, पंदर वर्ष सुधी किशोर अवस्था अने ते उपरनां वर्ष छे ते युवावस्थानां.

सारांश के ए त्रणे अवस्था बाल्यावस्थाना भागमां गणी शकाय छे. जन्म थया पछीनी

एवी स्थिति होय छे के बे त्रण दिवस सुधी धाववानी खबर पण पडती नथी. धीरे धीरे भूख लागती होय के न लागती होय पण धाववानुं शीखे छे. पछी धीरे धीरे दुःख न होय तो रमवुं ने दुःख होय तो रडवुं एटलुं भान थाय छे. रडे छे ते पण आ हुं रडुं छुं एवुं ज्ञान मुदल होतु नथी. भीनी के सुकी जग्यामां अथवा मळमूत्रवाळी जग्यामां कोइ नांखी मेले अथवा तो सुंदर सुवर्णना पारणामां सुवाडे तो पण कशुं भान होतुं नथी. क्रमेकरी हसतां शीखे छे, भुख लागे एटले रडतां शीखे छे, पोतानी माताने ओळखतां शीखे छे अने ओळखीने तेनी पासे जवाने इसारो करतां शीखे छे. आ अवस्थामां शुं तेमने ज्ञान होय? पवित्र शुं छे, अपवित्र शुं छे, सारुं शुं छे, माठुं शुं छे, हुं कोण

छुं, मारी शी दशा छे अने मारुं सगुं कोण छे इत्यादि ज्ञान एवी अवस्थामां क्यांथी होय? खरेखर ए दशा पशुना करतां पण ओछा ज्ञाननी छे. आवी स्थितिना बाळकने रागद्वेष के लाजमर्यादानो अंश पण होय नहि. क्रमेकरीने पछी बेसतां शीखे, जरा जरा अन्न खातां शीखे, रोजना परिचयनां मनुष्योने ओळखतां शीखे, रीखतां शीखे, स्वार्थने लइने रडतां शीखे, उभुं थतां शीखे अने चालतां शीखे. आ अवस्थामां पण तेनी ज्ञानशक्ति खीलेली होती नथी. खावा अने पीवा शिवाय कशुं ज्ञान हजी सुधी होतुं नथी. विष्टाथी अंग भराइ रहेलुं होय तो पण शुं अने सारा सुगंधी पदार्थथी खरडायेलुं होय तो पण शुं. धीरे धीरे परिचयनेलीधे पछी रमवा शीखे छे. पछी खाधानी जणसोनुं, रमवानी ज-

णसोनुं अने रमतनुं भान थवा 'मांडे छे. पछी संबंध प्रमाणे स्नेह बंधाय छे ने पछी रमतमां तल्लीन थाय छे. गमे तेटली वातो करवाथी के गमे ते आप्याथी रमते वळगेलुं छोकरुं पोतानी रमत के वात छोडतुं नथी. ए अवस्थामां पण पोतानुं हित शुं छे अने अहित शुं छे, तथा हुं कोण ने मारे शुं करवुं जोइए तेनुं ज्ञान थतुं नथी. सद्गुण दुर्गुण पछी धीरे धीरे प्रवेश करवा मांडे छे तथा कामक्रोधादिक पण पोतानुं क्रमेकरी स्थान करवा मांडे छे अने तेनी साथे साधारण ज्ञानशक्ति पण स्थापन थवा मांडे छे. क्रमेकरी पछी खावानु, पीवानुं, सारांनरसांनुं, सगांसंबंधीनुं, अने व्यवहारनुं ज्ञान थवा मांडे छे. पछी तो कोइ मेलावे तो रमत मेली अभ्यास करवामां मन लागे छे. ८ वर्षथी मांडीने १२ के १४ वर्ष

सुधी भणीने उचो नंबर मेळववामां, वखते रम-
वामां अने भणी रह्या पछी कमावामां लक्ष
लागेलुं होय छे. पछी धीरे धीरे भणतरनी चिंता
मेली सगाइ थवानी अने स्त्री मेळववानी चिंता
पेसे छे. भणीने कमावुं अने स्त्री परणवी एज
ते वखतनुं कर्त्तव्य छे एम भासे छे. आ समये
ज्ञानशक्ति पूर्ण खीलवा मांडे छे पण तेना उपर
असर अवळी थइ जवाथी तेनो उपयोग अवळी
रीते थाय छे. आवी रीते बाल्यावस्था कशुं
पण साधन कर्याविना जाय छे. बाल्यावस्था तो
कदी ओछी ज्ञानशक्तिने लीधे साधन कर्याविना
जाय एम संभवित मानिये पण युवावस्था पण
तेमज जाय छे. पेहेलां भणीने भोग भोगववानी
इच्छाथी स्त्री परणे, पछी छोकरां थाय अने
पछी ते सर्वनुं पालणपोषण करवामाटे रातदि-

बस घाणीना बेलनी पेठे प्रयत्न करी कमावुं पडे. सारां भाग्ये सारे घेर अवतार होय अने पैसावाळाने त्यां पुत्रपणुं प्राप्त थयुं होय तोपण हायवोयनो कशो घटाडो होतो नथी. ए तो गरीब अने तवंगरने सरखी अथवा तो तवंगरने वधारे होय छे. एम करतां करतां कमातां अने खातांपीतां समय जाय छे तेमां कल्याण करवानुं कशुं सुजतुं नथी. स्त्रीना हावभावथी मोह पामेलुं मन स्त्रीमय बधुं देखे छे त्यां बीजुं शुं सुजे? मनुष्यावतार छतां पशुनी पेठे मात्र युवावस्थामां आचरण थाय छे. त्यारपछी जेम जेम युवाने ठेकाणे वृद्धा अवस्था आवती जाय तेम तेम वेपाररोजगारमां नजर थोडी पडे, स्त्रीनो भाव उतरतो लागे, तृष्णा वधती जाय, छोकराओ कह्युं करे नहि अने कांइ धार्युं उतरे नहि

तेथी रातदिवस चिंतामां ने चिंतामां बळ्या करे. आम आखुं आयुष्य वहि जाय. कर्मयोगथी बालपणमां मरण न पामे तो जुवानी जुवे अने जुवानीमां मरण न पामे तो घरडपण जुवे छे. मरवानी घडी सुधी कांइ पण उपाय कर्यो न होय पछी वधारे वधारे चिंतामां घेराइने रडे छे. जे समये यमना दूतोनां दर्शन थाय छे ते समये पछी कोइ काम नथी लागतुं. कांइ पण पापपुण्य कर्यां होय तो आगळ उभा रहे छे. ते पछी पश्चात्ताप थाय छे पण आखर वखते शुं काम लागे ? जेवो जन्मवा टाणे थतो पश्चात्ताप निष्फळ जाय छे तेम मरवा टाणे पण थतो पश्चात्ताप वृथा थाय छे.

बाल्या, युवा अने वृद्धा ए त्रणे अवस्थामां जो के युवावस्था अनर्थना आश्रयरूप छे तो

पण इंद्रिओनी शक्ति परिपूर्ण होवाथी तथा ज्ञानशक्ति ताजी होवाथी ते अवस्था घणी उत्तम छे, अने ते उत्तम त्यारे केहेवाय के ईश्वरने ओळखवामां तेनो उपयोग थाय. बाल्यावस्था कशा कामनी नथी केमके तेमां पूरी समजण होती नथी अने वृद्धावस्था पण कामनी नथी केमके तेमां ज्ञानशक्ति अने इंद्रियशक्ति घणुं करी नबळी पडी जाय छे. पण खेदनी वात एज मोटी छे के सघळी अवस्थाने अज्ञानी लोको वृथा गाळी नांखे छे. मोटी मोटी विद्या भणनारा, डाहापणनी वातो करनारा, देशपर हुकम चलावनारा अने उंचकुलमा उत्पन्न थयेलाओ पण आयुष्य एळे जवादे छे त्यारे बीजाओनी तो शी वात केहेवी?

सदाचार शीखवो, न्यायनी रीते वर्त्तवुं, क-

र्त्तव्यकर्म समजवुं, ईश्वरने ओळखवो, धर्म जा-
णवो अने व्यवहारमां चतुर थवुं ए सर्व काम
युवावस्थामांज सिद्ध करवानां छे. ए अवस्थामां
न थयां तो पछी क्यारे थवानां? काळनी ग-
तिथी सहु कोइ अजाण छे, माटे पाछळना
समयनो भरोसो राखवो ते खोटो छे. जे कर्युं ते
खरुं अने बाकी खोटुं समजवुं. जेओ जुवानी
भोगवता होय तेओनी उपर ईश्वरनी मोटी
कृपा छे एम समजवुं केमके घणाए बिचारा बा-
ल्यावस्थामां पूर्ण अज्ञान दशामां परलोकमां
पोची जाय छे ते पोतानुं कर्तव्य केम करी शके?
ईश्वरे कृपा करीने युवावस्था आपी तो तेने स-
फळ करी ईश्वरने प्रसन्न करवा ए युवानोनुं
काम छे ते न थाय तो ईश्वरनी छती कृपाए
अकृपा समजवी; केमके बाल्यावस्थामां कांइ

खोटुं आचरण नथी थतुं परंतु युवावस्थामां तो हजारो खोटां आचरण थाय छे अने पछी तेथी असंख्य दुःख भोगववां पडे छे.

युवावस्थामां जे कर्त्तव्य छे ते करी ईश्वरने ओळखी बाकीनी होय तेटली अवस्था आनंदमां गाळवी ए उत्तम प्रकारनुं कर्तव्य छे. तेमां कांइ पण न थयुं तो अमूल्य हीरो कादवना ढगलामां फेंकी दीधा जेवुं छे. आ मनुष्यदेह पाणीना परपोटा जेवो क्षणभंगुर छे पण ते अति अमूल्य छे. बधा पदार्थो जडे पण मनुष्यशरीर कोइ पण प्रकारे मळी शकतुं नथी. एवा शरीरने अज्ञान दशामां नाश थइ जवा देवुं एथी बीजी कइ हानि छे? आ अमूल्य देहनुं अमूल्यपणुं तोज सफळ छे के जो पोतानुं कर्तव्य समजाइ, ईश्वरने ओळखाइ सदाचारथी चलाइ उत्तम पद

पमाय. एम न थाय तो पछी छते उत्तमपणे तेनी उपर अधमपणांनी छाप लागे छे. युवावस्थाज सर्व कामने योग्य छे एम जाणी बीजी अवस्थाओने अयोग्य नथी गणी. जेनी जे अवस्था चालती होय तेणे ते अवस्थामां पोताना कल्याण माटे अने ईश्वर ओळखमाटे प्रयत्न करवुं जोइए. गयेली अवस्थानेमाटे शोक न करवो अने आवती अवस्थानो भरोसो राखी बेशी रेहेवुं नहीं. जुवो, ध्रुवजी ए पांच वर्षना हता त्यारथी ईश्वर तरफ तेनुं लक्ष लाग्युं हतुं. तेमज प्रह्लादजीनुं पण बालपणथी ईश्वरभणी लक्ष लाग्युं हतुं. एम कोइ बाल्यावस्थामां, कोइ युवावस्थामां, अने कोइ वृद्धावस्थामां चेतीने ईश्वरमां चित्त लगाडी परम कल्याणना पात्र थया छे. तो पण युवावस्थामां जो थवाय तो कल्याणनुं पात्र थवाने ते अवस्था वधारे शक्तिवाळी छे.

पण जगत्‌नी विचित्र रीति एवी छे के सर्वे मनुष्यप्राणियोनुं बाळकपणुं रमतमां, जुवानी जुवतीमां अने वृद्धपणुं चिंतामां चाल्यां जायछे ने छेवट कल्याणथी विमुख रेहेवाय छे. मनुष्य शरीर सर्वे साधन करवानुं स्थान छे माटे आ- वेलो अवसर न चूकवाने भर्तृहरि कहे छे के—

यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरुजं यावच्च दूरे जरा
यावच्चेंद्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः।
आत्मश्रेयसितावदेव विदुषाकार्यःप्रयत्नोमहान्
प्रोद्दीप्तेभुवनेतुकूपखननं प्रत्युद्यमःकीदृशः ॥

ज्यांसुधी आ शरीररूपी घर मजबूत छे, ज्यांसुधी जरा (घरडपण) दूर छे, ज्यांसुधी इंद्रियोनी शक्ति ओछी थइ नथी, अने ज्यांसुधी आयुष्यनो क्षय थयो नथी ज्यांसुधी, विद्वाने पोताना कल्याणने माटे मोटुं प्रयत्न करवुं जोइए,

केमके घर सळगे त्यारे कूवो खोदवामां उद्यम करवो ते केवो कहेयाय?

आ वात यथार्थ छे. जेम लाइ लागे ते समये कूवो खोदवानी मेहेनत करवी ते वृथा छे तेम शरीर स्वस्थ न होय, वृद्धावस्था आवी गइ होय, इंद्रियशक्ति ओछी थइ गइ होय, अने मोत माथे फरतु होय ते समये पछी पोतानुं कल्याण करवानुं प्रयत्न करवुं ते वृथा छे. केमके ते समये शुं थइ शके अने शुं सूजे? आम छे खरूं तो पण साव कल्याणनो विचार नहि करनारा ते समये पण जेटलो बनी शके तेटलो विचार करे तो तेथी ते वृथा थाय नहि. लाइ लाग्या पछी कूवो न खोदाय ए दृष्टांतने अनुसरी सर्व साधनो संपूर्ण होय त्यांसुधीमां पोताना कल्याणनुं काम करी लेवुं ए वात बाळको अने

जुवानोने अनुकूळ पडे छे तेथी जेओ वृद्ध थइ गया होय तेणे एम न जाणवुं के आपणो समय गयो छे माटे हवे आपणे कांइ उद्यम न करवो. जो कांइ पण आयुष्यनो भाग बाकी होय ने अन्न खवातुं होय तो कल्याणनुं साधन करवामाटे घणो समय छे. अने जे कांइ जेने करवुं हशे ते थइ शकशे. थोडा समयमां शुं थाय एम न विचारवुं, केमके थोडा समयमां पण जे खरां अंतःकरणथी कांइ थाय तो ते घणुं थाय छे. बीजी अवस्था करतां वृद्धावस्थामां उपाधि थोडी होय छे, एटले तेमां निवृत्तिनो समय वधारे मळे छे, तेथी ते समयमां जोइए ते करी शकाय छे. तेम छतां नथी करातुं तेनुं कारण ए छे के बाल्यावस्था अने युवावस्थामां जुदी जातना संस्कारो बेसी गया होय एटले वृद्धावस्थामां पण.

तेवा संस्कारने वृत्ति छोडती नथी. एवा संस्कार छुटी जाय अने सर्व चितानो त्याग थाय तो वृद्धावस्था पण पोतानी सत्ता प्रमाणे कल्याण करनारी थाय छे. आटलामाटे वृद्धोए पण पोतानां कल्याणमाटे प्रयत्न करवुं. काळनी खबर पडती नथी, तो पण बाळकोने अने जुवानोने आवती अवस्थानी आशा होय छे पण वृद्धोने बीजी मरण शिवाय एके अवस्था आववानी न होवाथी 'पछी करशुं;' एवी आशा राखवी ते वृथा छे. आ बोलथी बाळकोए अने जुवानोए एम न समजवुं जोइए के आगळ उपर अमे कल्याणनो विचार करशुं; केमके काळनी गति बधाने सरखी लागु पडे छे. कल्याण करनारां काममाटे एमज निरंतर समजवुं जोइए के आपणी ए छेली अवस्था छे अने मृत्युना मोमां

पञ्या छिये. आम विचारवुं लेश पण खोटुं नथी ए आपणे हजारो दृष्टिये पडता दाखलाथी जाणी शकिये छिये. आटलामाटे समजणा थयेला बाळकोए पोतानी खोटी रमतमां जती वृत्तिने रोकी कल्याणकारक रमतमां मन लगाडवुं, युवानोए युवतियोना अने बाळकोना हावभावथी मोह पामी गयेलां चित्तने शुद्धिमां लावी संसारनी खटपटमांथी निवृत्त करी तेने कल्याणकारक काममां लगाडवुं अने वृद्धोए अनेक व्यवहारनी अने इच्छानी चिंतामां रोकायेली मनोवृत्तिने समजावीने तेने कल्याणने मार्गे चडाववी. एम करवाथीज मनुष्यजन्मनुं साफल्य छे. बाळपणमांथी जेणे पोताना कल्याणनुं काम कर्युं ते सहु करतां सरस भाग्यशाळी, युवावस्थामां कल्याणनुं साधन कर्युं ते बाल्यावस्थावाळा

करतां ओछो भाग्यशाळी अने वृद्धपणामां जेणे पोतानुं कल्याण करवामां चित्त जोड्युं ते युवावस्थावाळा करतां ओछो भाग्यशाळी. जेने पोतानुं कल्याण करवामां प्रीति थइ ते भाग्यशाळी तो सघळा खराज, पण अवस्था प्रमाणे तेनो वर्ग चडतो उतरतो गणवो जोइए. जेम बाळको निशाळमां पेहेलो नंबर लेवामाटे प्रयत्न करे छे तेम आ जगत्‌रूपी निशाळमां सर्वे मनुष्योए पोतानुं कल्याणनुं साधन संपादन करवामां पेहेलो नंबर मेळववो जोइए, के जेथी ईश्वर प्रसन्न थाय अने अमूल्य मनुष्यदेहनो जन्म सफळ थाय. आचार्यजीनो हेतु एज छे के सर्वे अवस्थावाळाए ईश्वरने ओळखवामां आळसु न थवुं. आथी करीने चालतो संसारनो व्यवहार अटकावीने बावा बनी बेसवुं एम समजी लेवानुं

नथी. व्यवहार सुनीतिथी अने सदाचारथी चाले अने आपणुं आत्मसाधन पण थाय एम समजवानुं छे. माटे त्रणे अवस्थाना मनुष्योए आ वात लक्षमां राखी एवो उपाय करवो के फरीथी कशी कडाकूट करवानुं रहे नहि.



***दिनयामिन्यौ सयंप्रातः
शिशिरवसंतौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्त-
दपि न मुंचत्यशावायुः ॥ १३ ॥†**

अर्थ.

रात-दिवस, सांज-सवार, अने शिशिर-वसंतादि ऋतु फरीफरीने आवे छे; काळ क्रीडा

* कालनी साथे आयुष्य चाल्युं जाय छे तोपण आशा छुटती नथी एम बतावता **दिनयामिन्यौ** ए श्लोक कहीं अतरथी तेने दूर करवा अने आयुष्यने सफळ करवा सूचवे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† शुभ शिशिर तेम वसंत ऋतु आवे सदैव फरी फरी
दिन रात सांजे सवारनी पण एज रीत खरेखरी;
क्रीडा करे छे काळ जीवन जाय छे वीती बधुं,
तो पण नथी तजतो तने तृष्णापवन वातो वधुं !

करे छे; तथा आयुष्य चाल्युं जाय छे; तो पण आशानो वायु तने तजी देतो नथी.

टीका.

सांज, सवार, रात, दिवस, मास, ऋतु अने अयन ए सघळां आवे छे अने जाय छे. संवत्सररूप एक चक्र होय अने तेना जाणे ते आरा होय तेम तेनुं आवागमन चक्रना आरानी पेठे थयाज करे छे. जेम कोइ घटमाळ होय तेमांहिनो एकेको घडो पावठो फेरवतां वारंवार भराइने आव्या करे छे अने ठलवाइने पाछो गयाज करे छे, तेम काळनां आ अंगो पण फरीफरीने आव्याज करे छे. विद्वानोइ जे जे समयने तेना विलंब प्रमाणे अनादि काळथी नाम आप्यां छे, ते ते समय पोतपोताना अवसरे आवीने उभो रहे छे. एक आंखनुं मटकुं मारिये एटला अथवा

एथी थोडा काळथी मांडीने युग सुधीना अथवा तेथी वधारे काल सुधी ए नियम एकसरखोज लागु पडे छे, ने ते प्रमाणे क्रमे क्रमे थया करे छे. आ प्रमाणे रातदिवसआदि जाय छे ने वारंवार आव्या करे छे तेथी काळ कांइ घटतो के वधतो नथी. ए तो ऐश्वरी कोइ चमत्कारथी पोतानी क्रीडा कर्या करे छे. एक मोटुं चक्र फरतुं होय तेना फरता घेरावने आपणे नाना मोटा भाग पाडी उपर रातदिवस एवां नाम मांडयां होय तो ते चक्र फेरवतां वारंवार पोतपोतानां नामना क्रम प्रमाणे आव्या करे छे. चक्रना घेरावना फरवानो जेम अंत न आवे तेम तेना वारंवार आववानो पण अंत आवे नहीं. एज प्रमाणे रात-दिवस आदि कालचक्रना भाग ए चक्रना फरवा साथे फर्याज करे छे. ईश्वर

शिवाय ए कालचक्रने कोइ अटकावनार नथी. अथवा खरुं बोलिये तो काल एज पोते ईश्वर छे अने विद्वानो पण कालने ईश्वरनुं रूप आपे छे. हवे ए कालचक्र फर्या करे छे अने रात-दिवस फरी फरीने आव्या करे छे तेविषेनो आपणा शरीरनी साथे विचार करिये तो आ-युष्य घटतुं जाय छे. ए घटेलुं आयुष्य शुं पाछा आवता दिवसो साथे आवे छे? जो आवतुं होय तो बालअवस्था युवा अवस्था अने वृद्धा अवस्थाज केम थाय? एक पळ जेटला काळमां के आंख वींचीने उघाडिये तेटली वारमां पण आपणुं वीतेलुं आयुष्य गयुं ते एवुं गयुं के कोइ कल्पे पण पाछुं आववानुं नथी. जीव मरतो नथी अने तेने जन्म-मरण नथी तेथी शरीरना आयुष्यने अने तेने कशो संबंध नथी माटे वृथा शोक शा.

माटे करवो, एम कोइ शंका करे तो तेनो उत्तर एज के जीव, शरीर, अने काल, एविषे जे जाणवुं जोइए ते आपणे कशुं जाणता नथी. आ शरीर एज हुं अने जे कांइ सगां कुटुंबी अने वैभव एज मारां छे एम मानी काळ काढिये छिये त्यांसुधी आपणे कालचक्र फरवानी साथे आयुष्य घटतुं जाय छे तेनो विचार करवोज जोइए. ज्यारे आपणे जन्म अने मरणनां बंधनमां फरी न पडवुं पडे अने पशु आदिना देह धरी अनेक दुःख सहन न करवां पडे एवुं आ शरीरथी कार्य करी चुकिये त्यारे पछी आयुष्य ओछुं थतुं जाय छे तोपण तेथी आपणे दुःख जेवुं कशुं नथी; केमके आ शरीर छुटया पछी आत्माने शरीरनी साथे संबंध नथी अने तेथी आयुष्य जतां रेहेवानो भय नथी. जन्म-मरण

के जे कांइ छे ते शरीरनेज छे. जीव (आत्माने) नथी. पण पेहेलां विचारिये के आपणे चाल्यां जतां आयुष्यनी चिंता न राखवी पडे एवुं शुं साधन कर्युं छे? आपणुं अति बालकपणुं जो अनेक उपद्रवोथी जीवता रहिये तो साव पराधीन दशामां जाय छे. बोलतां, चालतां, खातां, पीतां, रमतां अने सघळो व्यवहार करतां शीख्या पछीनी बाल अवस्था पण जो एटलेसुधी जीवता होइए तो अनेक प्रकारनी रमतमां साव चाली जाय छे. सारामां सारा सदाचरणवाळा केहेवता होइए तो पण परमार्थदृष्टिपर विचार करतां युवावस्थाना आरंभसुधी कशुं कल्याणकारक काम थइ शकतुं नथी. केटलाक निर्दोष अवस्थानी रमत मेलीने निशाळमां अभ्यास करवा लागी जइए छिये, केटलाक वेपार-रो-

जगारमां चाकरी करवा लागी जइए छिये, केटलाक राजकाजना कार्यमां आगळपर अनुभव मेळववाना हेतुथी पेहेली अवस्थामांज पडी जइए छिये अने केटलाएक तो कारीगरी शीखवामां वळगी पडिये छिये. एम करतां सघळाने युवावस्थानो आरंभ थयो के शरीरमां रहेला छ शत्रुमांनो मुख्य जे काम छे ते धीरेधीरे प्रकाश पामवा मांडे छे, तेथी सहु कोइ पोताने मळे ते प्रमाणे स्त्री परणीने गृहस्थाश्रमनुं सुख मानवा इच्छिए छिये. शक्ति प्रमाणे भणवुं, भणीने कमावुं, ने ए कमाणीमांथी पोतानी स्त्रीनेमाटे अने बीजानेमाटे खावा-पीवानुं तथा पेरवाओढवानुं तैयार कराववुं एज सुजे छे. रात-दिवस स्त्री अने बाळकोनां पोषणनेमाटे मेहेनत करवामां तेमज कुटुंबनेमाटे काळजी राखवामां एक

क्षण पण नवरो रेहेतो नथी. खातां, पीतां, रमतां, व्यवहार करतां अने बीजां सघळां कार्यमां स्त्रीपुत्रादिकने सुख आपवा अने तेने सुख आपी पोताने संतोष लेवा माटे प्रत्येक क्षणे नवी नवी युक्तियो गोठविये छिये. कालनी गति केवी छे अने काले शुं थशे ए कंइ जाणवामां आवतुं नथी अने कदी कोइ समये आवे तो सांज वखते वादळांनो रंग जेटली वार रहे तेथी पण ओछी वार रहे छे. ईश्वरेच्छाथी जो हजी पण वधारे आयुष्य होय तो आपणी आशानी दोरी पण लांबी चाले छे. चाकरी करीने के रोजगार करीने पैसो मेळववो, ए पैसाथी पोतानुं अने कुटुंबनुं पोषण करवुं अने पछी छोकराछोकरी परणाववां ए घडमथलमां निरांते अन्न पण कोइ दिवस खवातुं नथी. अनेक,

उपाधिथी हारी जइए छिये तो पण अफिणना बंधाणनी पेठे तेमां आपणने अरुचि थती नथी, अने तेनुं तेज अहर्निश कर्त्तव्य कर्मनी पेठे एकाग्रचित्तथी कर्या करिये छिये. जेनां जेवां प्रारब्ध होय, जेनी जेवी सत्ता होय अने जेमां जेवी विद्या होय ते प्रमाणे सहु छोकरा छोकरी परणाववा आदिनां कार्यो खुशीथी पार पाडिये छिये. पछी धीरे धीरे वडपण आवे छे तेथी इन्द्रियोनी जोइए तेवी शक्ति रेहेती नथी अने क्रमे करीने निर्बळ थइ जइए छिये. अंगनी चामडीमां कडचली पडी जाय छे, आंखनो रंग फरी जायछे, वाळ सफेत थइ जाय छे, हाथ-पग कंपे छे, दांत पडी जाय छे, आंखे ओछुं देखाय छे, काने ओछुं संभळाय छे, चाकरीमां के वेपार-रोजगारमां पूर्ण मेहेनत करी शकाती नथी,

श्वास चडी जाय छे अने सुख सर्व ओछुं थाय छे. आम छतां पण वधारे जीवाय अने इन्द्रियो वधारे शक्तिवाळी थाय तेनेमाटे फांफां मारीने अनेक उपायो करिये छिये! तो पण कशुं मळतुं नथी. अशक्त थयेलां शरीरथी इंद्रियोना सवळा भोगववाना भोग भोगवाता नथी तेथी उलटी अंतःकरणनी पीडा वधे छे. शरीरमांहीनी सर्व इंद्रियोनी शक्ति घटी जाय छे पण कोइ ऐश्वरी चमत्कारथी तेमां रहेनारूं मन जुवान थाय छे तेथी ते एकलुं अनेक सुखने अने भोग भोगववाने तडफडाटी मारे छे पण तेनाथी कांइ थतुं नथी. तेथी रात-दहाडो महाताप थया करे छे; तेमां वळी कोइ कुटुंबीनुं मृत्यु थाय तो तेथी बमणो ताप थाय छे. छोकरां मोटां थयां होय एटले ते तो पछी भाभानो,

भाव पण पुछे नहीं अने स्त्री तो अशक्त शरीर थयुं एटले आगळ पण आवे नहि. आ चिंता पण कांइ ओछी बाळती नथी. गृहस्थाश्रमना सुखवाळाने पण आम महा पीडामां पड्या पड्या पीडावुं पडे छे तो बिचारा गृहस्थाश्रमनां सुखनो अनुभव नहि करनारा अने जेने विषयभोगनां दर्शन पण नहि थयां होय तेवा पीडाय एमां शुं आश्चर्य? आवी रीते आपणे आपणुं अमुल्य आयुष्य महाश्रमे मळेलुं फोकट जवा दइए छिये. मरणनी पथारीये पड्या सुधी पण छोकराने सारी शीखामण देवामां के तेनी कोइ सारां माणसने भळामण देवामां के एक फेर उठीने सुख भोगवी लेवामां के धन दाटेलुं होय ते बताववामां मन डोळाय छे, अने बोलाइ नथी शकातुं तो तेमां ने तेमां मनोवृत्ति रेहेतां प्राण

नीकळी जाय छे. केवी आपणी स्थिति ! केवुं आपणुं ज्ञान! अने केवां आपणां प्रयत्न ! हवे विचारी जोतां नकी जणाशे के आपणे कशुं कर्युं नथी, तेथी काळ तो ओछो थतो नथी बाकी आयुष्य ओछुं थतुं जाय छे ए अति हानि छे. कदी आपणे एम समजीए के जेटलो समय गयो तेटला मोटा थया, पण अरे, मोटा कोना ? ए मोटा थया ए तो नाना थवाने माटेज. कोने खबर छे के आयुष्य केटलुं हशे ? माटे जेटलुं गयुं तेटलुं ज्यांसुधी कांइ कल्याणनुं साधन नथी कर्युं त्यांसुधी वृथा गयुं समजवुं. आचार्यजी एवो बोध करे छे के काळ क्रीडा करे छे, अने आयुष्य वृथा वह्युं जाय छे; तो पण आशानो पवन तमने तजतो नथी. सारांश ए उपरथी एम समजवानो छे के आशाने अळगी करी जतां,

रेहेवाना स्वभाववाळां जीवनने सार्थक करवुं. आशाने आधीन थइ रेहेवुं एना जेवं पराधीन पणुं अथवा दुःख एके नथी. केमके.

आशायायेदासास्तेदासाःसर्वलोकस्य ।
आशायेषांदासी तेषांदासायतेविश्वं ॥

जेओ आशाने आधीन छे ते आखा जगतने आधीन छे अने जे आशाने पोताने आधीन राखे छे तेने जगत आखुं आधीनना जेवुं थइ जाय छे.

धन, स्त्री अने भोग भोगववाना बीजा पदार्थो मेळववामाटे वृत्ति दोडे छे अने ते मेळववामाटे अनेक प्रयत्न करवा पडे छे. योग सरखो आवे तो वात पार पडे छे अने योग सरखो न आव्यो तो वात पार पडती नथी. एक आशा मनमां राखी होय ने कदी ते पार पडे

तो वळी पाछी बीजी तेथी वधारे कंइ आशा थाय; तेथी कोइ पण नामरूपनी आशा करी होय ने ते पार पडे तो पण तेनुं परिणाम न पार पड्याना जेवुं थइ रहे छे. आम आशामां आयुष्य वह्युं जाय छे. जेम सती स्त्री होय ते गमे तेवा निर्गुण के सगुण, रूपाळा के करुपडा अने लुला-पांगळा के अंगे संपूर्ण पतिनी साथे आगळ बळी मरती, तेम तृष्णा पण गमे तो निर्गुण होय के सगुण होय, गमे तो रूपाळो होय के करूपडो होय, अने गमे तो लुलो-पांगळो होय के अंगे संपूर्ण कुशळ होय पण ते पोताने पाळनार पतिनी साथेज बळी मरे छे. अर्थात् सार ए समजवानो के आशा शरीर पडे छे त्यांसुधी पण मनुष्यने छोडती नथी अने तेथी करीनेज कशुं कल्याणनुं काम नथी थतुं.

एटले जीवन वृथा वीती गयुं केहेवाय छे. पूर्वनां पुण्यथी जेनुं आयुष्य सफळ थवानुं होय तेवो सत्पुरुष, पूर्वे जेम वैराग्य पामेला महाजनो पोतानी अति प्राणप्रिया पत्नीने छोडीने पण तपोवननो आश्रय करता तेम पोतानी प्राणप्रिया आशाने तजीने संतोषनो आश्रय करे छे. जेम सती अने प्राणप्रिया पत्नी छतां पण तेने वैराग्यथी वेगळी करीने तपोवनमां जइ वसनारा वैरागी महाजनोने परमपदनी प्राप्तिनो मार्ग मळे छे, तेम आशाने तजी संतोषने सेवनाराने पण ते प्रमाणे परमपदनो मार्ग मळे छे. आम थोडा प्रयत्नमां उत्तम फळ थतुं होय तो ते केम संपादन न करवु? अवश्य करवुज जोइए. ईश्वरे जो समजवानी शक्ति आपणने आपी छे तो ते वात आपणे केम न समजिये? बजारमां

पाइनु शाक लेवा जइए छिये त्यां पण आपणो लाभ संभाळवानुं आपणे समजिये छिये, तो फरीने दुःख न देखवुं पडे एवो लाभ केम न समजिये ? शुं आपणु ए काम नथी ? पण अरेरे कोण जाणे केवां पूर्वनां पापथी आपणां अतःकरण छंदाइ गयां छे के व्यवहारमां सर्व कार्यमां आपणे आपणो लाभ साचववानुं विचारिये छिये त्यारे बराबर सूजे छे ने परमार्थमां लाभ विचारतां तो साव अंधारूं घब थइ जाय छे ! ए केवी विचित्र वात अने ए केवो खेदनो बनाव ! पण आथी शुं आपणे लमणे हाथ दइने बेशी रेहेवुं ? शुं एटला माटेज आपणे साडात्रण हाथनुं शरीर पोषण करवानी वेठ करी ? एम कदी होय नहीं. आपणे जे करशुं ते करवानो ज्यांसुधी आ मानव शरीर छे त्यांसुधी अवसर छे अने आपणे

उत्तम प्राणी छिये माटे उत्तममां उत्तम काम करवुं ए आपणो धर्म छे. माटे जता आयुष्यने सफळ करवुं अने तृष्णाने तरछोडी मेलवी. ए देहसाथे बळी मरनारी पतिव्रताजेवी छे पण तेनुं उत्तर फळ पतिव्रता आपे छे तेवुं आपती नथी. पतिव्रताना सहगमनथी तो तेना पतिओ पवित्र धाममां पोंचे छे अने तृष्णाना सहगमनथी तो अपवित्र धाममां पोंचे छे. एटलामाटे ते सदैव त्याग करवा योग्य छे. जन्ममरणनां अनेक दुःखने आपनारी एज चुडेल छे. जेम चुडेल काढवाना अनेक प्रयोगो ने उपायो जगतमां खरा के खोटा पण देखिये छिये तेम तृष्णाने काढवाने माटे पण महादयाळु पुरुषोए अनेक उपायो लखेला छे जेथी करीने सहज वारमां आपणे ने तृष्णाने आपणाथी दूर करी

शकशुं. मात्र प्रयत्न करवुं एज आपणुं काम छे. सुता रहिये तो जमण क्यांथी जमिये? पछी करशुं एम विचारिये तो पछी कांइ थतुं नथी, केमके एक तो आयुष्यनो भरोसो नहि, ते तो पाणीना टीपानी पेठे पलवारमां हतुं न हतुं थइ जाय तेवुं छे अने ते कदी लांबु चाले तो नानो रोग जेम उपाय न करतां मजबुत घर करी गया पछी प्राण लीधावगर जतो नथी तेम तृष्णा पण मजबुत थवाथी पछी प्राण लीधावगर जती नथी. आटलामाटे ज्यारथी सूजे त्यारथी तेने तरछोडीने आयुष्य सफळ थाय तेम करवुं एवो उपरना आचार्यजीना बोधनो हेतु छे.

खुब खाइ पीने रातुंमातुं शरीर कर्यूं, धन तथा स्त्री मेळवी अने भोग भोगवी आनंद पाम्या एथी बीजुं करवानुं शुं छे? एम मानी बे-

मवुं एज पेहेलां तो अति अविवेक छे. पशुओ पण स्वेच्छाथी वनस्पति खाइने रातांमातां बने छे अने मनगमती स्त्रियो मेळवे छे, एमां शुं आश्चर्य छे? विषयसंबंधी सुख पण ते मेळवी शके छे त्यारे पछी तेमां ने आपणमां शो फेर? धन मेळववानी तो तेने जरूर नथी एटले आ-पणा करतां तो ते अधिक भाग्यवाळां छे. ए तो बिचारां अंगमेहेनत करीने माणसनुं हित करे छे अने वखते शरीर आपीने पण माणसनुं हित करे छे एवां तो साव परोपकारी छे त्यारे आप-णे सरस के ते सरस? सारांश के अंगने रातुंमा-तुं करवुं के स्त्री मेळववी के विषयसुख लेवुं एमां तो पशुओ पण आपणा करतां चडे छे अने वळी परोपकारी थइने तो आपणने शरमावा जेवुं करे छे त्यारे शुं आपणे आपणुं कर्त्तव्य नथी कर्युं

एम नहि लागे? खरेखर आपणे जे करवानुं छे ते कयुंज नथी. एक कोरथी आपणा कान आपणने सुंदर शब्द सांभळवाने खेंचे छे, बीजी कोरथी आपणी आंख आपणने रूप जोवाने खेंचे छे, त्रीजी तरफथी आपणी त्वचा आपणने स्पर्श करवाने खेंचे छे, चोथी तरफथी आपणी नासिका आपणने सुगंध लेवाने खेंचे छे, अने पांचमी तरफथी जीभ आपणने अनेक प्रकारना रस चाखवाने खेंचे छे; एम सघळां इन्द्रियो पोतपोतानां कार्यमां आपणने खेंची ले छे. जेम कोइ घणी स्त्रियोनो धणी होय तेने एक हाथ ताणे तो बीजी पग ताणे, एक कान ताणे तो बीजी नाक ताणे, एक खेस ताणे तो बीजी धोतियुं ताणे, एक केश ताणे तो बीजी मूछ ताणे, एम महाकष्टनी दशा ते बिचारो पराधीन थइने

भोगवे छे, तेम आपणे पण इन्द्रियोए खेंचावाथी तेना जेवी तो शुं पण तेनाथी लाखगणी वधारे पराधीनदशा भोगविये छिये. कीडीओ जेने वळगेली होय तेवो छांणनो कीडो चोतरफ खेंचातो महावेदना भोगवे छे तेम इंद्रियोथी खेंचाता आपणे अति वेदना पामिये छिये. पण मायानो प्रताप एवो छे के ए दुःखने आपणे दुःखरूप जोता नथी अने एमांज आपणे आपणुं कर्त्तव्य मानिये छिये. विषयादिकनां खोटां सुख तो सर्व जातिमां होवाथी सर्वने छे, माटे तेमाटे प्रयत्न करवुं ते वृथा छे; केम के ते अनायासेज मळे छे. पण जे अनायासे न मळे अने जे मनुष्यावतारवगर बीजा प्राणीने अलभ्य छे तेनेमाटे प्रयत्न करवुं तेज सफळ छे. शरीरने रुष्ट-पुष्ट करवुं अने गृहस्थाश्रम करवो ने तेनी साथे विद्यानो अ-

भ्यास करवो ते धर्म, अर्थ, काम, अने मोक्ष ए पुरुषार्थ सिद्ध करवानेमाटे छे. मिष्टान्नथी पेट भरी पथारिये पडी रही पेटपर हाथ फेरवी पशुनी पेठे निश्चिंत बेशी रहेवानेमाटे के परने पीडा करवानेमाटे होत तो मनुष्यजन्म आवतज शामाटे? धर्म, अर्थ अने काम, ए त्रण पुरुषार्थ पण सिद्ध थया होय तो ते पोताना अने पारकाना कल्याणमाटे योजवा जोइए. जो तेम न थयुं तो धर्म ते धर्म नथी, अर्थ ते अर्थ नथी अने काम ते काम नथी; पछी मोक्षनी वातज क्यां रही? जीभथी न वर्णवी शकाय, आंखथी न जोइ शकाय अने कानथी न सांभळी शकाय एटलां जन्म-मरणनां दुःखो छे. तेमांथी छूटवाने आ आपणने प्रभुए कृपा करी मनुष्यशरीररूप वहाण आप्युं छे, तो तेमां बेशीने संसारसमुद्र

तरी जवो. ए वहाणमां बीजां साधनो बधां अनुकूळ पडतां करी लेवां जोइए, नहि तो वहाण कतड चडी जाय. ईश्वरनी दयारूप पवन अनुकूळ जोइए, स्थिरचित्तरूप सढ सारो जोइए, विवेकरूप कुवो सारो जोइए, शम दम श्रधा तितिक्षा आदि गुणोरूप खलासियो जोइए, सद्विचाररूप सुखाण जोइए अने यमनियम आदिथी वर्त्तवारूप बीजो घणो सामान जोइए. आ बधुं मेळववुं ए आपणा हाथमां छे. ईश्वरनी एमां सहायता छे एतो मनुष्यजन्म मळ्यो तेथीज सिद्ध थाय छे, तो पछी शामाटे वच्चमां बुडी मरवुं? शुं आपणे नथी समजता के पाणानी होडीथी तराय नहि? जो ए समजिये छिये तो एम पण समजवुं जोइए के कीडाना के मंकोडाना अथवा खच्चरना के गधेडाना अवता-

रथी संसारसमुद्र तराय नहि. जेम पाणीमां तरवारने एक काष्टनुंज वहाण समर्थ छे तेम संसाररूप समुद्रने तरवारने आ मनुष्यशरीररूप एकज वहाण समर्थ छे; माटे जो आपणे तरी जवा माटे प्रयत्न करता होइए तोज जीवन वीती जाय तेनो पश्चात्ताप करवो घटित नथी; पण जो कंइ प्रयत्न न थतुं होय तो पछी पश्चात्ताप वगर बीजुं पाछळ शुं रह्युं? चाल्युं जतुं जीवन कोइथी रोकातुं नथी ए आपणे जाणिये छिये एटलाजमाटे कर्त्तव्य कर्म करवाने पण आपणे जेम बने तेम उतावळ राखवी. पण अफसोस छे के आपणे सघळुं उलटुंज करिये छिये! आपणने अनेक पुण्यने बदले मळेलुं मनुष्यशरीररूप वहाण, सारुं सुखाण, सारा खलासी, सारो सढ, सारा कुवाथंभ अने सारां

बीजां साधनो तजी दइने हाथे करीने खराबे चडी डुबाडिए छिये. विचारो के हवे आपणो शो आधार? कांइ पण नहि. आपणे आवा अणसमजणा होवाथीज दयाळु आचार्यजी जेवा बोध आपे छे के तमे आयुष्य चाल्युं जाय छे ते नहि तपासतां आशामां शुं गुचाइ रह्या छो? काळ पण अदृश्य रीते आपणे आपणुं आयुष्य फोकट जवा दइए छिये तेने जोइने हसे छे. माटे सर्व वातें एवुं करवुं के काळ पण हसे नहि, आयुष्य पण सफळ रीते वीती जाय, आयुष्य तो वीती जाय पण कीर्ति कायम थाय, अने जीवतां सुधी सुखमां ने संतोषमां दिवसो जाय.



*यावज्जननं तावन्मरणम्
तावज्जननीजठरे शयनम् ।
इति संसारे स्फुटतरदोषः
कथमिह मानव तव संतोषः॥१४॥†

अर्थ.

ज्यांसुधी जन्म छे त्यांसुधी मरण पण छे अने त्यांसुधी माताना उदरमां आववानुं पण छे.

---

* संतोष रखावाव यावज्जननं ए श्लोकथी संसारनो दोष देखाडे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† ज्यांसुधी जन्म थया करे छे मरण पण छे त्यांसुधी,
तेमज जनेताना जठरमां शयन तारे त्यांसुधी;
मानव अरे संसारमां प्रत्यक्ष एवो दोष छे,
तो पण कहे शा कारणे तेमां तने संतोष छे ?

संसारमां आ प्रमाणे देखीतो दोष छे त्यारे हे मानव ! तने तेमां केम संतोष छे ?.

टीका.

पूर्वजन्ममां जेवां कर्म कर्यां होय तेवां कर्मनुसारुं के माठुं फल भोगवी, पाणी, औषधि अने वीर्यद्वारा फरीने प्राणीओना उदरमां आवी तेवी जातिनो देह धारण करवो पडे ते जन्म केहेवाय. पुण्यनो विशेष भाग होय तो मनुष्यावतारनो संभव छे अने तेम न होय तो पछी बीजी जातिमां संस्कार प्रमाणे अवतार आवे छे. कोइ वार एम पण थाय छे के वधारे पुण्यना भागथी मनुष्यावतार आवे छे तो पण तेमां पशुना करतां पण अनेक अणचिंतवी आपत्तियो माथे आवी पडे छे; अने कोइ वार एम पण बने छे के ओछा पुण्यना भागथी पशुआदि

अवतारो आवे छे तोपण मनुष्यना करतां पण अनेक सुख भोगवी अति आनंदमां जीवतर गाळे छे. आ केवो ऐश्वरी मायानो चमत्कार! एक कोइ पशु कोइ धनवाननी प्रीतिनुं पात्र थाय तो ते केटलुं बधुं देखीतुं संसारनुं सुख पामे छे! निरंतर खावाने मिष्टान्न मळे, ओढवाने मखमलनां वस्त्र मळे, बेसवाने मशरूना गादी-तकिया मळे, पेहेरवाने सोनानां के मोतीनां घरेणां मळे, रेहेवाने सुंदर मेहेल मळे, सुवाने सुंदर शणगारेला पलंग मळे, नहावाने सुगंधी साबु अने उनां पाणी मळे, चाकरी करवाने अने संभाळ राखवाने बे चार चाकरो पाछळ फर्या करे, अने क्यांइ आघुं-पाछुं जाय तो सर्वने चिंता उत्पन्न थाय. तेने पाळनारा बकीयो भरे, लाड लडावे अने ईश्वरेच्छाथी मरण पामे तो

अंगना बाळक करतां पण वधारे शोक करे. आवुं पशु आजकाल भाग्यशाळी श्वान घणे स्थळे आपणे जोइए छिये. आनी साथे एक भीखारीनी स्थिति मेळविये तो तेमां केटलो फेरफार छे ते जणाय.-विचारने खावाने रोटलानो कटको पण मांड मांड तिरस्कारथी मळे छे, पेरवाने फाटेलां चीथरां पण पूरां मळतां नथी, सुवाने सपाट जमीन पण कोकज समये होय त्यारे पलंगनी तो वातज शी करवी, रेहेवाने पादडांनुं झुपडुं पण कोकज समये होय छे, कोइ चाकरी करे नहि, कोइ आज्ञा उठावे नहि, भूख्या-तरश्यानी कोइ चिंता करे नहि, टाढे थरथरवुं पडे, ताप सहन करवा पडे, वरसाद वेठवा पडे, अने जेटलां कहिए तेटलां संकट सेहेवां पडे अने छेवट मरण पामे तो शोक करवो

तो रह्यो पण मार्गे चालतां माणस एक मुवेला उंदरनी माफक तेने ढसरडी फेंकी दे. अहो उत्तम जन्म पामीने पण केटली विशमता! आनुं कारण प्रारब्धयोगविना बीजुं शुं कल्पी शकाय? जुवोने पक्षीओ पण केवां केवां सुख भोगवे छे?—सोनानां के हीरा-मोतीथी जडेलां पांजरामां रहे, जेने छीक आवतां हजारो अनुजीवियो खमां खमां करतां होय एवा सत्तावान लोको पोताना कोमळ करथी पांखो साफ करे, खावाने सुंदर दाडिमना दाणा आदि मेवो मळे, पीवाने अमृत जेवुं पाणी घडिये घडिये मळ्या करे, टाढ-तडको न लागे माटे नित्य संभाळ रहे, सुंदर राजमेहेलमां निरंतर वास रहे, जेनुं मन कोइ पण खेंची न शके तेवां गंभीर प्रकृतिनां अमीर माणसो तेने बोलाव्या करे, मान आपे,

छोकरां करतां वधारे वहालथी मीठी नजरे जुवे, एनेमाटे एकथी वधारे रुपैयानुं खर्च करे अने मरण पामे तो अत्यंत शोकमां तेनां पाळनारां पडी जाय. जुवो आ पण एक ऐश्वरी मायानो अने प्रारब्धनो मंहिमा ! आम पशु के पक्षी गमे तेवां सुख भोगवे अने गरीब मनुष्यो गमे तेवां दुःख भोगवे तो पण मनुष्यजन्म उत्तम केहेवाय. साधारण रीते विचारतां पशु-पक्षी आदि प्राणी जेवां पराधीन अने पीडा पामनारां छे तेवां मनुष्यप्राणी पराधीन अने पीडा पामनारां नथी. पशु-पक्षीओ पोते पोतानी मेळे पीडा थाय तेवुं करतां नथी परंतु बीजाओ तेने पीडा पमाडे छे; अने मनुष्योने बीजुं कोइ पीडा करनार नथी तो पोते पोतानी मेळे पीडा पामे छे. नानां मोटां मळीने असंख्य जातिओ छे पण मुख्य

विचार करिये तो तेनो चार जातिमां समावेश थाय छे. जेम के,—जरायुज[1], अंडज[2], स्वेदज[3], अने उद्भिज्ज[4], आ चार जाति. तेने बे विभागथी वेचीए तो स्थावर अने जंगम एवा मुख्य बे भेद छे. जेटलां हाली-चाली शके तेटलां जंगम केहेवाय अने जेटलां स्थिर रहे तेटलां स्थावर केहेवाय. आथी स्पष्ट समजावुं जोइए के पृथ्वीमांथी उत्पन्न थनारां वृक्ष आदि पण प्राणीओज छे. जगतमां मनुष्यनी बनावट शिवायना उत्पन्न थता, वृद्धि पामता अने नाश पामता नामरूपवाळा पदार्थो प्राणवाळाज मानवामां आवे छे. आ विचार अति सूक्ष्म छे एटले तेनुं विस्तारथी विवेचन अहीं थइ न शके.

---

१ ओरथी थनारां. २ इडांथी थनारां. ३ पसीनाथी थनारां. ४ कोटो फूटीने पृथ्वीमांथी थनारां.

समजवानुं एमां एटलुंज छे के गमे तो स्थावरमां अने गमे तो जंगममां अवतार आवे पण ज्यां आवे त्यां जन्म थयो केहेवाय. स्थावर प्राणीओ जेवां जंगम प्राणियोने सुख आपनार छे तेवां जंगम प्राणियो स्थावरने सुख आपतां नथी. एक वृक्षउपरज* विचार करिये तो ते केटलो बधो उपकार आपणी उपर करे छे ते जणाय. सुंघवाने फूल आपे, टाढ तडको अने वरसाद सहन करी आपणने तेनाथी बनतुं रक्षण करे, औषधमाटे छाल अने पान आपे अने छेवट पोतानुं अंग (काष्ट) पण बाळवामाटे आपी दे. एनामां आपवानी शक्ति नथी ने समजण

* वृक्ष कापवां के फूळ-फळ तोडवां ए पण हिंसा-रूप छे एम केटलाक विचारवान् पुरुषो माने छे तेनुं कारण पण एज के तेमां प्राण छे माटे ते प्राणी छे अने एटलामाटे तेने कापवां के तोडवां नहि.

पण नथी एम शंका थाय तो ते खोटी नहि, पण विचारवुं जोइए के तेने गमे ते प्रकारे पण अति परोपकारी कह्या वगर चाले तेम नथी. वृक्षादिकनो अवतार अति नेष्ट केहेवाय छे पण अमे ते घणे प्रकारे तेने उत्तम मानिये छिये. ए अवतारमां अन्य प्राणिओउपर अति उपकार थाय छे ते कांइ ओछुं पुण्य नथी. बीजा गमे ते जातिना अवतारमां आटलो परोपकार थाय नहि. अरे ए मूर्छित दशामां रेहेनारां प्राणिओ-ने मनुष्यप्राणिओ बाळी नांखे छे तेथी तेने शुं दुःख नहि थतुं होय! बीजा अवतारोमां पण अनेक पीडाओ अने दुःख थाय छे, जे अनु-भवसिद्ध छे. वृक्षादिकनो अवतार बधी वाते सारो गणाय पण पोताना कल्याणनी वात एमने सुजे नहि एटला हेतुथीज ते मात्र भाग्यहीन

कही शकाय. ईश्वर रखे ने तेनां परोपकारीप-णांथी तेने उत्तम पद आपी दे एम घडीवार आपणने शंका थाय, पण अरेरे उत्तम पद तो उत्तम मनुष्य जन्ममां पण मांड मळे छे तो वृ-क्षना अवतारमां क्यांथी मळे? जंगमप्राणीमां जरायुज, अंडज अने स्वेदज ए त्रण जातिनो विस्तार समाइ जाय छे. असंख्य नाना नाना झीणा अशक्त जंतुओ के जेओ घडीमां उत्पन्न थाय छे अने घडीमां तापथी वायुथी के वरसा-दथी अथवा क्यांइ कचराइ जवाथी मरी जाय छे एनी पीडानो अने दुःखनो तो पारज नथी. तेम ईश्वरे तेने मनुष्यनी पेठे ज्ञान नथी आप्युं एटले ए विषयमां पण हीनभाग्य छे. झीणा जंतुओ करतां मोटा जंतुओ कांइक वधारे सुखी अने मनुष्यप्राणीने उपयोगी छे. तेओ

पण घणे प्रकारे मनुष्यप्राणीनो उपकार करे छे. तेओने पण अमे उपकार करिये छिये एम जाणवानी शक्ति नथी. अमे तो एमज मानिये छिये के मोटां प्राणी पशुओ जो ईश्वरे उत्पन्न न कर्यां होत तो मनुष्यप्राणी पोतानो कशो व्यवहार करी शकत नहि अने सुख पामत नहि: आजे अनेक प्रकारना यंत्रो थया छे तो पण जे काम पशुओ करे छे ते यंत्रोथी थतुंज नथी. आवां उपयोगी प्राणीओ पण घणां दुःख मनुष्य तरफथी वेठे छे. माणसो माथे भार भरे, भार तणावे, पीठपर लाकडीओना मार मारे, खावाने खाण न मळे, पीवाने पाणी न मळे अने दिवस उगे त्यारथी ते रात पडे त्यां-सुधी एवीने एवी दशामां रेहेवुं पडे. एने बिचा-रांने बोलवानें वाचा नथी एटले ते आपणी पेठे

'वोयरे माडी, मने बहु पीडा थाय छे, के मने बहु भार लागे छे' एम कही शके नहि. ए एवां भलां अने मरणियां छे के मरणनी छेली घडी सुधी पण मनुष्यनी वेठ कर्या करे छे. आवां निरपराधी, गरीब, अति उपयोगी, अने पोते जीवतां रही जीवाडनारां प्राणियोने विना मोते पण मनुष्यप्राणीमांनो केटलोक भाग निर्दयपणे उपयोगमां लेवाने आगल पडे छे ए केवी अन्याय अने खेदकारक वात छे ! एवां मनुष्यप्राणीने माथे कोइ बे मणनो बोजो मेली, तापथी तपेली जमीनपर उघाडे डीले चाबखा मारतां दस पंदर मैल चलावे, खावापीवानुं न आपे, तथा उघाडी तरवारे पोतानी उपर आवीने मारवा माटे कोइ उभुं रहे के प्रहार करे तो तेना मनमां ते समये शुं थाय छे एनो जो विचार

करवामां आवे तो जाणवामां आवे के परने पीडा करवामां केटलुं दुःख छे? तेओ तो वजेर भार उपाडी शकता नथी, तापमां के वरसादमां चाली शकता नथी, भूख्या रही शकता नथी अने जरा कांटो वागे तो पण हायरे कहीने हेठा पडे छे. पण आ उपरथी एम नथी दया आवती के एक कांटो वागतां आपणने आटलुं दुःख थाय छे तो जे प्राणीओनी निर्दयपणे हिंसा थती हशे तेने केटलुं दुःख थतुं हशे? एम ने एम पक्षीओ पण निरपराधी अने जगत्नी शोभारूप प्राणीओ बिचारां घणीवार घणां विनामोते मनुष्यप्राणीनो भोग थाय छे, ए कांइ थोडुं दुःख नथी. जो जन्म धारण कर्यो तो पछी एवां आवी पडतां अनेक दुःखो सहन करवां पडे एमां शो संदेह? उपर प्रमाणे बिचारां पशु अने पक्षियो

अति दुःखने पामे छे. तो पण ते केटलीक वाते परोपकारी ठरे छे. पण एटलुं तो खरुं के वृ-क्षोना जेवो परोपकार तेनाथी थतो नथी. आ पशु-पक्षियो पोते पण केटलांक हिंसक छे पण तेओने ईश्वरे एज प्रमाणे जीववामाटे जन्म आप्यो होय एम जणाय छे. **जीवो जीवस्य जीवनं।** (जीव जीवनुं जीवन छे) ए प्रत्यक्ष दा-खलो एवा प्राणीओ वधारे करावे छे. अने सूक्ष्म रीतिये जोइए तो तो आखु जगत् ए वाक्य प्रमाणेज वर्त्तनार छे अने ते 'स्थावर जंगम सर्वे प्राणी छे' एम समजवाथी प्रत्यक्ष जणाइ रहे छे. ए समजवामां केटलीक सूक्ष्मबुद्धिनी जरुर छे. विचारवान् अने सूक्ष्मबुद्धिमान् होय तो एज वाक्यथी सारो बोध लइ सारी रीते व्यवहार चलावे छे अने विचारवान् अने सूक्ष्म बुद्धिमान्

न होय तो एज वाक्यनो अवळो अर्थ करी नठारी रीते व्यवहार चलावे छे. हवे आ वात वधारे आडी उतरे छे. आपणे समजवानुं ए छे के अनेक प्रकारनां प्राणीओ छे अने ते ते प्राणीओनी जातिमां जेवां दुःखना आपणे अधिकारी होइए तेवो जन्म आवे छे. ज्यां जन्म आवे त्यां जन्म केहेवाय. ज्यांसुधी ए जन्म मटे तेवो उपाय न कर्यो होय त्यांसुधी माताना उदरमां मळ-मूत्रना स्थानमां उंधे माथे लटकी रेहेवानुं दुःख अने मरणसमयनु अनेक वींछियोना डंख करतां पण वधारे वेदनानुं दुःख मटतुंज नथी. आ शिवाय बीजां जीवतानां असंख्य दुःख छे पण तेनो तो कांइ हिसाबज नथी. ए दुःख पण जन्म मट्याविना कोइ दिवस पण मटे तेम नथी. बधां प्राणीओ करतां मनुष्यप्राणी उत्तम प्राणी

छे, केम के ते एज अवतारमां पोताना कल्याणनुं साधन सारासार विचारथी करी शके छे. आटलुं जो न थयुं तो पछी झीणा जंतु के स्थावर प्राणी करतां पण मनुष्यजन्म अति हलको समजवो. जो कल्याणना साधननी वात न सूजे तो मनुष्यजन्म उलटो अनर्थकारक छे, केमके अवळां कृत्य करवानुं अने ते कृत्यना दोषनुं पात्र पण तेज मनुष्यजन्म छे. खरुं उत्तमपणुं तो त्यारे केहेवाय के जो नियमप्रमाणे कोइने पीडा न थाय तेवी रीते निरंतर चलाय, इंद्रियोने आधीन न थवाय, विषयोमां अवळी रीते आसक्त न थवाय, अने कल्याणनां साधनो संपादन कराय. एक फेरे मनुष्यजन्म आवे छे, ते जन्ममां जो कांइ सुकृत करी जन्म न लेवो पडे तेवुं कर्युं होय तो तो ठीक, नहि तो वळी चोराशी

लाख आवतारोनां अनेक जन्म-मरणादिक दुःख भोगववां पडे छे, एम केटलाक विद्वानो कहे छे. छेवट पाछो वळी मनुष्यदेह आवे छे. ते समये पण एज रीते समजवुं. आपणने आ मनुष्यजन्म आवेल छे अने ते सर्व दुःखथी छोडनार छे; एटलामाटे आ शुभ योगने वृथा न जवा देवा आ स्थळे आचार्यजीनो बोध छे. ज्यांसुधी जन्म छे त्यांसुधी माताना उदरमां नव मास सुधी रेहेवानुं दुःख अने मरणनुं दुःख मटे तेम नथी. माताना उदरमां प्राणीने शुं दुःख थाय छे ते आगळना भागमां लखाइ गयुं छे. अंदरनुं के बहारनुं एके दुःख वर्णव्युं जाय तेवुं नथी. जन्मति वखते पण चीचोडामांथी कचराइने नीकळता सेलडीना सांठाना जेवी जरायुज प्राणीनी दशा थाय छे. आवी रीते दुःख न पामवा अने

रक्त-मळ-मूत्रना कुंडमां गुंगळाइने न पड्या रेहे-
वाने आचार्यजी कहे छे के अरे मानव! आवो
प्रसिद्ध दोष संसारमां छे तो पण तने तेमां सं-
तोष केम थाय छे? जगतमां नानां-मोटां प्राणी-
ओने अने मनुष्योने जन्मतां जोइए छिये, जन्म
थया पछी पीडा पामे छे ते जोइए छिये अने
छेवट अनेक पीडा पामी मरणने वश थाय छे ते
पण जोइए छिये; तो पण आपणे आपणुं संभा-
ळता नथी. आपणे आपणने माताना उदरमां
शुं दुःख थतुं हतुं ते तो मायाना योगथी
सर्व भूली जइए छिये. बाळकपणामां शी शी
पीडा पडी छे ते पण मोटपणे काळना योगथी
भूली जइए छिये. आपणे तो नाना प्रकारनां
छल-कपट करवामां, शद्वादिक विषयभोगने
भोगववामां, पारकुं बगाडी पोतानुं सारुं करवामां

द्रव्य संपादन करवामां अने शरीरने पोषण करी संभाळवामां तथा कुटुंबनु संरक्षण करवामां एवा गुंथाया छिये के रात छे के दिवस ते पण आपणने सुजतुं नथी. केटलाक वळी एथी पण वधारे अवळां आचरणमां गुथाय छे के तेने तो देहनुं के बीजा कशानुं भानज रेहेतुं नथी. अति दुःखरूप अने अनर्थ करनारां कार्यने आपणे उत्तम मानी पकडी बेठा छिये. आपणने सारुं कृत्य पण सारुं लागतुं नथी तेथी ते करवाने इच्छा करता नथी. आपणने गमे तेवुं नठारुं कृत्य आपणी बुद्धिमां सारुं लागे छे. घूड जेम दिनांध होवाथी सूर्यज नथी एम पोते माने छे तेम आपणे पण मायाना प्रतापथी अंजाइ गयेला 'आपणे जे करिये छिये तेनाथी कांइ बीजुं सारुं नथी,' एमज मानी बेसिये छिये. आटला

माटे जे प्रसिद्ध दोष छे तेने जोवाने अने खोटो संतोष मानी बेठा छिये तेने त्याग करवाने महापुरुषो बोध आपे छे, तो ते लक्षमां लेवा जोइए.

पृथ्वी, जळ, तेज वायु, अने आकाश, ए पांच महाभूतनुं स्थूल-शरीर बनेछे. ए स्थूलशरीर अने तेमां रहेलुं सूक्ष्मशरीर* ए बेयनो संयोग होय त्यांसुधी स्थूलशरीर जीवतुं केहेवाय छे अने ए बेयनो योग मट्यो एटले स्थूलशरीर मरेलुं केहेवाय छे. सूक्ष्मशरीरना वियोगथी स्थूलशरीर काष्ठ जेवुं जड थइ जाय छे. आम स्थूल मरे छे पण सूक्ष्मशरीर मरतुं नथी. फरी जन्म पण एनोज छे. सूक्ष्मशरीर एक स्थूलने मेलीने बीजामां पेसे एटले जेने मेले तेने मरेलुं

* पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रिय पांच प्राण, एक मन, एक बुद्धि एम १७ तत्वनुं सूक्ष्मशरीर केहेवाय छे.

अने ग्रहण करे तेने जन्मेलुं केहेवाय छे. सूक्ष्मशरीरनो नाश थाय त्यारे जन्म-मरण मटे छे. ए सूक्ष्मशरीरनो नाश तत्वज्ञानथी कारणशरीरनो नाश थयाविना थतो नथी; अने ते तत्वज्ञान अति पुण्यना प्रतापविना अने सत्संगतिविना मळतुं नथी. पण आपणने आ वात सांभरतीज नथी. आपणे तो गमे तेवुं दुःख होय, गमे तेवुं सुख होय, गमे तेवुं पाप होय के गमे तेवुं पुण्य होय, तो पण सारासार विचार्याविना गाडरिया टोळानी पेठे आंखो वींचीने ज्यांसुधी काळना झपाटामां न आव्या होइए त्यांसुधी चाल्या करिये छिये. जो संसारमां एक फेरे जन्म लीधा पछी फरीने बीजो जन्म न लेवो पडतो होय, जो अवस्था बदलाती न होय, जो मृत्यु थतुं न होय, जो सघळा प्रिय पदार्थनो

कोइ दिवस वियोग थतो न होय अने जो जे कांइ देखवा-सांभळवामां नामरूपात्मक छे ते अनित्य न होय तो तो संतोष मानीने के सुख मानीने बेशी रेहेवुं ते योग्य छे, पण ज्यारे तेम नथी अने उत्तम साधन कर्याविना उत्तम पद पमातुं नथी त्यारे तो ते वातमां पाछळ पडवुं न जोइए. जेओ पश्वादिकना अवतारने योग्य छतां मनुष्यावतार पाम्या छे, जेओ पशुनी पेठे ज्ञान वगरना छे, जेओ उदर भरवामां अने इंद्रियोने विषयोना भोगथी तृप्त करवामां पशुओने पण पाछळ राखनारा छे, जेओ मनुष्यजन्मना मूल्यने समजता नथी, जेओ पाप-पुण्यने ओळखता नथी, अने जेओ आचार-विचार के विवेकने नथी समजता अने केवळ पृथ्वीने भाररूप छे तेवाओ कांइ बोधने लायक नथी, तेओने बोध थतो नथी, तेने

बोध कोइ आपतुं नथी, अने तेओ बोध लेवाने इच्छता पण नथी. पण आपणे छेक तेवा नरपशु नथी. आपणने आपणा कल्याणनेमाटे इच्छा छे, आपणे जन्म-मरणनां दुःखने अने संसारना दुःखने थोडांघणां जाणीए छिये अने ईश्वरकृपाथी थोडुंघणुं भण्या छिये तो आपणने बोध थइ शके तेम छे. अने जो इच्छा करशु तो बोध आपनार सत्पुरुषो अने शास्त्रोना सद्बोधो घणा छे माटे आवो सारो योग वीसारी न मेलवो. स्थावर अने जंगम प्राणियोपर दया राखवी, नीतिथी चालवुं, सत्य पाळवुं, परोपकार करवो, न्यायथी वर्तवुं, इंद्रियोने अवळी रीते वश न थवुं, शम-दमने सांचववा, व्यवहारमां शुद्ध रेहेवुं, विकारमात्रने रोकी राखवा, अने तनमनथी शुद्ध रही पोतानुं अने

ईश्वरनुं स्वरूप ओळखी ते बेयनी एकता समजी जन्म-मरणादिकनी फांसीमांथी छूटी जवुं अने सामर्थ्य होय तो बीजाने सुरीतिवडे छोडववो, तेज ईश्वरकृपाथी मळेला मनुष्यदेहनुं साफल्य छे. अने तेम न बने तो पछी पशुमां अने मनुष्यशरीरमां आकृति शिवाय कशो फेर नथी. संसारमां कदि क्षणिक सुखो हशे तो पण तेनाथी उपर जे निरंतरनुं सुख होय अने ते सुखने मेळवी आपनारां जे उत्तम साधनो होय ते उपर संतोषनी नजरे जोवुं एज आपणुं काम छे. कशो विचार न करतां विषयादिकनां क्षणिक सुखमांज मात्र गुलतान थइ रेहेवुं ए आपणुं काम नथी. ए काम पशुओनुं छे अने तेओ करे छे. पशुओनुं काम आपणे करिये तो पशुना करतां पण वधारे धिःकारना पात्र छिये एम खरेखर

समजवुं जोइए. मनुष्यजन्म फरीने संसारमां जन्म धारण न करवो पडे तेवां साधनो संपादन करवामाटे छे. तेज जन्मथी संसारमां अनेक जन्म-मरणनां दुःख संपादन करवानां साधनो संपादन थाय एना जेवी आपणने कइ हानि छे? बीजी कोइ पण एना जेवी हानि नथी. कोइ शेहेरनी बहार सुंदर बाग होय तेमां जावाने माटे चार मार्ग होय. ए चार मार्गमां एक मार्ग कांटा अने कांकरावाळो होय ते मार्गेथी बागमां गया होइए तो ते मार्गमां थतां दुःखथी फरीने तेज मार्गे चालवा इच्छिये नहि पण बीजे मार्गेथी घर तरफ वळिये. अने फरीने जवुं होय तो सारे मार्गेथी जइए. व्यावहारिक रीतिमां आपणे आटली बधी संभाळ राखिये छिये परंतु परमार्थ रीतिमां ते कशुं विचारताज नथी. गमे तेवो न-

ठारो मार्ग होय तोपण ते उपर कंडडाट चाल्या जइए छिये. जे मार्गे चालवाथी कशुं कल्याण संपादन नथी थतुं तेवा मार्गो शाल्मलीनां फुलनी पेठे देखवामात्र सुशोभित लागे तेवा क्षणिक सुख आपनारा छे, एटले तेनुं दुःख वीसरी जइ क्षणिक सुखमां आपणी लालच लागे छे; अने छेवट फसाइने ज्यारे दुःख पामिये छिये त्यारे पोतानां कृत्य संभारी पश्चत्ताप करिये छिये. परंतु ज्यारे सारां शास्त्रो बोध आपनारां छे, ज्यारे सत्पुरुषो बोध आपे छे, ज्यारे समजवाने ईश्वरे बुद्धि आपी छे अने ज्यारे सर्व कल्याणना साधनरूप मनुष्यदेह वर्त्तमान छे त्यारे आगलथी सहुए सारे मार्गे शामाटे न चालवुं? अवश्य आपणने सर्व वातनी अनुकूलता छे माटे कल्याणने मार्गे जवुंज जोइए. एमां जेटलुं आलस

करवुं तेटली आपणने पोतानेज हानि छे. योगने साधनार अने मंत्रजाप करनार दृढ पुरुषने तेनी धारणा पार नहि पडवा देवाने देवताओ ते धणीने कांइ आगळथी सुखरूप फल देखाडे छे, जेमां मोह पामीने योगसाधवा करनार अने मंत्रजप करनार पोतानुं सघळुं पडयुं मूकी देखाडेला ते तुच्छ फलमां लालच राखी लेवा दोडे छे; अने छेवट ते मळतुं नथी अने बेय खोया जेवुं थायछे. आपणे पण एमज ठगाइने आ अमूल्य अने क्षणभंगुर देहनुं आयुष्य वृथा जवा दइए छिये. फरीने जन्म धारण न करवो पडे अने तेथीज माताना उदरमां सुवुं न पडे अने मरणनुं दुःख न भोगववुं पडे एवां साधनो करवाने आरंभमां आ मनुष्यदेह धारण कर्यो, परंतु विषयादिकनां क्षणिक सुखो आपणनें ते मार्गे जता

अटकावी अथवच तोडी पाडे छे अने पछी ते क्षणिक सुख पण थोडी वारमां नाश पामी बेय बगड्या जेवुं थाय छे. आ वात खुब सावचेती राखीने विचारवानी छे. पूर्वापर सघळो विचार करी पोताना सदैवना साथी अंतःकरणनी साथे विचार करी निर्णय करवानो छे के ते वात खरी के नहि ? विचार तो करवो जोइए के करोडो रुपीया खरंचवाथी जे शरीर नथी मळतुं अने जे करोडो रुपीया खर्चतां जे काम न थाय ते क्षणवारमां करी शके तेवुं छे, ते शरीर शुं भीखीने पेट भरीने जंगलमां सुइ रेहेवाने माटेज छे? अथवा तो मिष्टान्न भोजन करी पेटपर हाथ फेरवी सुंदरियो सहित पलंगपर पोढी रेहेवाने माटेज छे ? एम कदी होयज नहि. आ क्षणमां नाश थनारो पाणीना परपोटा जेवो देह परनुं

अने पोतानुं कल्याण थाय अने फरीने कोइ पण जातिनां दुःखनो अनुभव न करवो पडे तेवां काम करवा माटेज छे अने ते वर्णाश्रमादिकना धर्म पाळवाथी अने महापुरुषोना सदाचारना बोधथी थइ शके छे.

केटलाक तो अज्ञानतामां समजता हशे के सदैव आपणो देह अमर रेहेवानो छे अने तेथी मोजशोख माणता हशे; पण अरेरे ए निश्चय क्यांसुधी तेओनो रेहेवानो ? ज्यांसुधी काळरूप पाराधीना तेओ लक्षमां लेवाया नथी त्यांसुधीज. ब्रह्मादिक देवो, मोटा मोटा राजाओ अने महापुरुषो, जेओना यश आजसुधी गवाया करे छे तेओ शुं आजे वर्तमान छे ? तेओ पण ज्यारे काळना कोळीयापरू थइ गया अने आजे केटलाक मोटा पुरुषो थाय छे त्यारे आपणे ते

कोण मात्र ! ए काळने तो बधा रायरंक सरखा छे. जेनो जन्म थयो तेनो आज के पछी गमे तेटले काळे नाश थया वगर रहेन नहि. जो जन्मे तेनो नाश न होय तो आजे आ अवनीपर पग मेलवा जेटली पण जग्या खाली न होय. कवि शामळ कहे छे के,—

जे जायुं ते जाय जेह फूल्युं ते खरशे,
भर्युं तेह ठलवाय चड्युं तेनो ऊतरशे;
लीलुं ते सूकाय नवुं ते जुनुं थाशे,
आयुर्दा वश सर्व काल सौकोने खाशे ;
जो किन्नर यक्ष ने राक्षसो देव गांधर्व ने दानवी,
मघवादिक पण मोते मरे कोण मात्रमां मानवी!

आ विषय प्रत्यक्ष अनुभवाय छे; तेम घणा विद्वानोना तेविषे सिद्धांत पण छे के क्षणभंगुर शरीर कोइ क्षणे पडवानुंज छे. भगवान् व्या-

सजी पण वासुदेव पात्रद्वारा बोध आपे छे के

मृत्युंजन्मवतां वीर देहेनसह जायते ।
अद्यवाब्दशतां तेवा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवः ॥

हे वीर ! देह उत्पन्न थाय ते साथेज मरण उत्पन्न थाय छे. आज अथवा सो वरस पछी पण मृत्यु तो प्राणियोने खरेखर छेज.

सारांश ए के मरण अवश्य छे, शरीर क्षण-भगुर छे, मनुष्यदेह वारंवार मळतो नथी, अने जन्म धारण करवाथी ए बधुं वळगे छे; माटे कर्म करवु ते एवुं करवु के जेथी फरीने कशी कडाकूट रहे नहि. आजे काल अने मनुष्य-शरीररूप उत्तम कल्याण करवानुं साधन अनु-कूळ छे तो तेने सफळ करी भाग्यवान् थवुं एवी अमारी सर्व सुज्ञोने विनति छे.



*अष्टकुलाचलसप्तसमुद्रा
ब्रह्मपुरंदरदिनकररुद्राः ।
न त्वं नाहं नायं लोक-
स्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः॥१५॥†

अर्थ.

आठ[1] कुलाचल पर्वत नथी. सात समुद्र

---

* संसारनो दोष देखाडीने हवे छेवट अष्टकुलाचल ए श्लोकथी दृश्यमात्रनुं निराकरण करे छे.

(अनुवाद हरिगीत छंदमां.)

† नहि आठ कुलपर्वत अने सुण सात सागर छे नहि,
ब्रह्मा सदाशिव इन्द्र दिनकर देव पण क्यां छे अहीं;
तुं पण नथी हुं पण नथी ने छे नहीं आ लोक रे,
तो पण वृथा अंतरविषे तुं शोक शा माटे करे ?

१ कुलाचल मूळ श्लोकमां अहि आठ लखेल छे. बीजे ठेकाणे सातनी संख्या जोवामां आवे छे ने ते

नथी,‡ ब्रह्मा नथी, इंद्र नथी, सूर्य नथी, रुद्र नथी, तुं नथी, हुं नथी, अने आ लोक पण नथी. अर्थात् ए बधुं नाशात्मक अथवा मायानो आभास छे. तोपण शामाटे शोक करवामां आवे छे?

टीका.

जे कोइ दिवस चले नहि पण स्थिर रहे तेने अचल केहेवाय छे. पर्वतो आपणा जोवामां कोइ दिवस खसता नथी एम लागे छे अने ए हेतुथी तेमने अचल केहेवामां आवे छे. एवा

कुलपर्वत केहेवाय छे. जेम के;—महेंद्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्ष पर्वतः। विंध्यश्च पारियातश्च सप्तैते कुलपर्वताः॥ (महेंद्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्ष, विंध्य, अने पारियात, ए सात कुलपर्वत केहेवाय छे.)

‡ सात समुद्रनां आ प्रमाणे नाम नीकळे छे. जेवा के—क्षारोद दधिमंडोद, अने शुद्धोद.

स्थिर पर्वतो के जेओ कुलाचल एवां नामथी आठ प्रसिद्ध छे तेओ पण कालनी आगळ अथवा जगतना नाशात्मकपणा आगळ छेज नहि. सात समुद्रो के जेओ पृथ्वीना सात द्वीपने सात खाईसरखा केहेवाय छे अने जेओनी मर्यादाथीज सर्वनी मर्यादा छे तेओ पण कालनी आगळ के जगतना नश्वरपणा आगळ गणतीमांज नथी. ब्रह्मा के जे सर्व सृष्टिना उत्पन्न करनारा गणाय छे, अने ए हेतुथी जे पितामह केहेवाय छे ए महासमर्थ देवपण कालनी आगळ अथवा जगतना नश्वरपणा आगळ कांइ नथी. पुरंदर जे इन्द्र ते महासमर्थ देवताओनो अधिपति, स्वर्गनो राजा तथा वृष्टि वर्षावनार गणाय छे, ते पण कालनी आगळ अथवा जगतना नश्वरपणा आगळ कांइ नथी. अतिप्रकाशमान सूर्य

के जेना तेजवडे रात अने दिवसनी गणना थाय छे, जेना तेजवडे सघळो व्यवहार चाले छे, अने जेना तेजवडे सर्व वनस्पति पाके छे अने काल तथा ऋतु बंधाय छे; ते महाप्रतापी देव पण कालनी आगळ अथवा• जगतना नश्वरपणा आगळ कांइ नथी. रुद्र के जे कोप करे तो सघळी सृष्टिनो संहार करी नांखे, मोटा योगीं-द्रो जेनुं ध्यान धर्या करे छे अने जेमणे हला-हल पान कर्युं हतुं एवा समर्थ देव पण कालनी आगळ अने जगतना नश्वरपणा आगळ कांइ नथी; तेमज अमे, तमे अने जेओ मारा-तारामां मोह पामी रहेला छिये तेओ पण काळनी आ-गळ के जगतना नश्वरपणा आगळ कांइ नथी. तेमज आ लोक के जे अनेक प्रकारना प्रपंचमां बुड्यो पड्यो छे अने जे सदैव वर्त्तमान रहेछे

एम जणाय छे ते पण कालनी आगळ अने जगतना नश्वरपणा आगळ कांइ नथी. गपजण ए उपरथी ए लेवानी छे के ए सघळी नानी–मोटी उपाधियो छे ते उपाधियो लय थाय छे, पण तेमांनां चैतन्यनो लय नथी थतो. बीजुं एम जाणवानुं छे के जेटला नामरूपात्मक पदार्थो छे ते काले करीने मोडावेला नाश थवानाज छे. त्रीजुं एम समजवानुं छे के जे कांइ छे ते सघळुं ईश्वररूप छे. ईश्वरथी भिन्न कशुं नथी. ज्यां ज्यां ईश्वरनुं स्थूलरूप महाविद्वानोए वर्णव्युं छे त्यां त्यां लोकनेज ईश्वरना स्वरूपथी वर्णव्यो छे. सारांश तेथी एम लेवाय के सघळुं ईश्वरमय छे अने एम छे तेथीज ईश्वर सर्वमय अने सर्व व्यापक लेखाय छे. आम समजीने करवानुं ए छे के ईश्वरमय सघळुं देखीने कोइ पण नानां-

मोटां प्राणीने समान गणवां, समान गणीने मन-वचनकर्मथी तेमने दुःख देवुं नहि, पंचभूतथी थयेलुं शरीर क्षण भंगुरजाणवुं, क्षणभंगुर जाणीने कल्याणनो उपाय जे काले करवानो विचार होय ते आजे करी लेवो, ने काळने आधीन सर्व कोइ छे तेमज आपणे छिये माटे ए अप्रतिवार्य नियमने माटे हर्ष-शोक कशो करवानो नहि. शोक करतां के संसारनां क्षणिक सुख भोगवतां अने प्रपंचना गारामां लोटतां मनुष्यजन्म जो गयो तो पछी समजवामाटे एके साधन रेहेशे नहि.

पुनर्वित्तं पुनर्मित्रं पुनर्भार्या पुनर्मही ।
एतत्सर्वं पुनर्लभ्यं न शरीरं पुनः पुनः ॥

धन, मित्र, स्त्री अने धरती, ए सघळां फरी मळी शके पण शरीर फरीने मळे नहि.

आ उपरथी आपणे एटलुंज समजवानुं छे के शरीर उत्तम छे ते साथे फरीने मळे तेम नथी ए वात भूलवी नहि. संसारना प्रपंचमां पडेला, विषयना गारामां गुचेला, अनाचारनी लाखमां चोटेला अने विवेक वगरना अनधिकारीने माटे कशो बोध होय नहि; पण समजु, विवेकी अने अधिकारीने बोध होय, माटे आचार्यजीए तेवाओने माटे सारो बोध आपवा प्रयत्न कर्युं छे, तो आपणे तेमांथी सत्य सार आस्तिक थइने ग्रहण करवो. आस्तिक थया वगर एके वात अंतःकरणमां ऊतरती नथी अने संपूर्ण संतोष थतो नथी. ज्यांसुधी देहनुं भान भुलाइ जइ सर्व ईश्वरमय देखाय एवी परम दशा प्राप्त न थइ त्यांसुधी घणुं कर्तव्य छे; अने तेथीज सारूं-नरसुं ओळखी सारांने ग्रहण कर-

वानी जरूर छे. आटलासारु पोताना कल्याण माटे आस्तिक थइ ज्यारथी चेत्या त्यारथी उत्तम साधन करवा मांडवां. ज्यांसुधी तेम नथी करतां त्यांसुधी आपणे पोतेज आपणा अपराधी थइए छिये.

प्राप्यचाप्युत्तमं जन्म लब्ध्वाचेंद्रियसौष्टवं।
नवेत्यात्महितं यस्तु सभवेदात्मघातकः ॥

उत्तम जन्म अने कुशल इन्द्रियो पामीने जे पोतातुं हित नथी जाणतो ते आत्महत्यारो थाय छे.

आनी उपरथी एवो सार लेवो के आ मनुष्यजन्म अने पूर्ण इन्द्रियनी प्राप्ति फरी कशुं दुःख सहन न करवुं पडे तेवुं साधन संपादन करी लेवानेमाटे छे. तेम छतां जो तेने अवळी रीते उपयोगमां लेवाय तो ते वृथाज छे एम

समजवुं पोताना हाथमां छे. जन्म अने इन्द्रियनुं परिपूर्णपणुं केवुं श्रेष्ट अने उपयोगी छे ते पोतानी मेळेज जाणवाथी जणाय छे. एना अनुभवनेमाटे पण अनुमानना अने प्रत्यक्ष दाखला पण जोइए तो घणा छे. समजीने ग्रहण करवानुं ए छे के, सत्शास्त्र अने सत्पुरुषोए बतावेला शुभमार्गे चाली वर्णाश्रमना शरीरसंरक्षणसहित धर्म पाळी, ईश्वरस्वरूप अने आत्मस्वरूप ओळखी, जन्ममरणनो फेरो फरवो न पडे तेवुं साधन करी लेवुं. एनुं नामज कल्याणनुं साधन कहेवाय. घरमां बेठा बेठा दुध-चोग्वा खवाय ते तेवो आगळथी उद्यम करवो ए पण कल्याणनुं साधन केहेवाय, पण ते मात्र व्यवहारमां शरीरनेज उपयोगी छे. तेथी कांइ फरीने भवाटवी न फरवी पडे तेवुं थतुं नथी. शरीर दुर्लभ

छे अने क्षणभंगुर छे, एम जाणवुं ते हालतां–चालतां के खातां-पितां चिंता करवामाटे नहि पण संसारमां पडती आधि व्याधि अने उपाधिथी क्लेश न थवाने अने फरीने जन्ममरण न आवे तेवुं साधन तरत करी लेवानेमाटे छे. जो एम न थाय तो तो उलटुं 'अतोभ्रष्ट अने ततोभ्रष्ट'नी पेठे व्यवहार पण सुधरतो नथी. सघळा विचारो व्यवहार अने परमार्थने सुधारनारा होय, तेज विचारो ज्यारे परमार्थ तो रह्यो पण व्यवहारने पण बगाडे त्यारे समजवुं के आपणी समजणमां अने आपणा अधिकारमांज फेर छे. आपणे आपणो अधिकार अने समजण सुधारीने व्यवहारपरमार्थ सुधरे अने परम सुख थाय तेम करवुं तेज आपणुं कर्तव्य छे. जगत् सघळुं खोटुं, नाशात्मक अने देखवा

मात्र छे तथा पदार्थो पण तेवाज छे एम जाणवुं ते पण कल्याणनां कार्य तरत करी लेवानेमाटे छे; अवळे मार्गे चालवाने के खोटी चिंता करवानेमाटे नथी. सघळुं दुःखमय अने खोटुं छे एम मान्याथी अने मानीने ते प्रमाणे अनुभव करवाथी वैराग्य उत्पन्न थाय छे, ए वैराग्य पण उत्तम सुखनां साधननेमाटे अमूल्य छे. जेओ पोतानाओनुं के परनुं भलुं नथी करी शकता, एवाओने वैराग्यथी तेम थाय छे एम धारी अवखोडवा नहि, केमके ए तो अशक्ति, आलस अने अनभ्यासनुं परिणाम छे. दुःखमय अने नाशात्मक सघळुं जाणी वैराग्य पामी सुख लेवुं ते साथे व्यवहार बगडवो न जोइए, केमके ज्यांसुधी सिद्धदशाने प्राप्त न थवाय त्यांसुधी केटलोक व्यवहार पण कल्याणनां साधनरूप

थाय छे. सघळुं नाशात्मक अने दुःखरूप जाणी वैराग्य पामी सुखने मार्गे न जतां जो नाशात्मकपणानी अने दुःखरूपपणानी चितामांज पडी जवाय तो तो उलटो अनर्थ थाय छे, केमके एम थवाथी परमार्थ अने व्यवहारने अति हानि पहोंचे छे. आ बाबतमां तो **अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिंतयेत्**'। (अजर अने अमरनी पेठे विद्या अने अर्थनो विचार करवो.) आ वाक्यप्रमाणे वर्त्तवुं जोइए. एवा निश्चयविना व्यवहार सिद्ध करी शकातो नथी माटे एम होय न होय तोपण मानी लेवुं एम विद्वानोनी संमति छे. **ग्रहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्**। (मृत्युए शीखा पकडेली होय एवी रीते धर्मनुं आचरण करवुं.) आ उपरनां पद्यनां उत्तरार्धप्रमाणे कल्याणनुं साधन करी लेवामां

वर्त्तवुं जोइए, केमके तेम वर्त्याविना उत्तम कार्य के आत्मसाधन थतुं नथी अने काळ निष्फळ चाल्यो जाय छे. परमहितनेमाटे आवां वाक्यो छे ते उपरथी सार ग्रहण नहि करता उलटा चितामां पडी तेवी विचित्रतानोज विचार करवा लक्ष दोरावियेे तो ए वाक्य समजवुं पण व्यर्थ जाय छे; केमके ए विचित्रतानो अंत आवतो नथी अने चिता करवाथी कंइ सारूं फळ थतुं नथी. माटे ए खोटी चितामां मनने उतरवा देवुं नहि पण जे मुख्य हेतु होय तेमां उतारवं. मन अने इन्द्रियोनो निग्रह करी सत्पुरुषो अने सत्‌शास्त्रोना सदुपदेशप्रमाणे आचरण राखी मिथ्या ममत्व मेलीने अभेददृष्टिवडे जे थाय ते परोपकार करी प्रसन्न रही पुण्य संपादन करवुं ए मुख्य हेतु छे एम जाणवुं. सघळां कार्य भेद-

दृष्टिथी अने अभेददृष्टिथी करवां तो पडेज छे तोपण जे अभेददृष्टिथी देहादिक के पुत्रादिकने माटे कार्य करवां पडे ते पण उत्तम साधननुं मूळ छे. श्रीभागवत अष्टमस्कंधमां व्यासजी कहे छे के;—

यद्युज्यतेऽसुवसुकर्ममनोवचोभि-
र्देहात्मजादिषु नृभिस्तदसत्पृथक्त्वात् ।
तैरेव सद्भवति यत् क्रियतेपृथक्त्वात्
सर्वस्य तद्भवति मूलनिशेचनं यत् ॥

मनुष्यो भेददृष्टि राखीने देह तथा पुत्रादिकने सारु प्राण, धन, कर्म, मन अने वचनथी जे कांइ करे छे ते व्यर्थ थाय छे; अने अभेद निश्चय करीने सर्वने ईश्वररूप जाणी देह तथा पुत्रादिकने वास्ते तेज प्राणादिक पदार्थोथी जे कांइ करे छे ते महाफळदायी थाय छे, केमके

मूळमां पाणी रेडुं होय तो ते वृक्षना सघळा अवयवोने काम लागे छे.

गृहस्थोनेमाटे घणो बोध सत्पुरुषो आपे छे के जेथी उभय लोक सुधरे छे. जे सारां कार्य करवामां आवे ते समानदृष्टिथी करवामां आवे एवी निश्चयात्मक वृत्ति थइ जाय तो पछी तेने कल्याणनुं साधन कशुं दूर छे एम कही शकाय नहि. **आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति।** पोतानी पेठे जे सर्व प्राणीओनेविषे जुवे छे तेज देखे छे, सारांश के तेम नथी देखता ते देखताज नथी. ए वाक्य पण विचारवान् पुरुषनुं समत्व देखाडनारूं छे. आ वातनो त्याग करी स्वाभाविक मायाना चमत्कारउपर अने जगतना नश्वरपणाउपर विचार करवा बेसीये तो ते विचारमां ने विचारमांज आपणुं

वय वहुं जाय. ज्यांसुधी ईश्वरमय सघळुं देखाय अने शरीरादिकनुं के व्यवहार मात्रनुं भान न रहे एवी स्थिति न होय त्यांसुधी दुनियामां नाश थता पदार्थो देखवा मात्र पण हता खरा एम जाणिये छिये, पण जाणीने तेने अविचळ राखी शकता नथी तेम आपणा देहने पण ते, धर्मवाळो मटाडवाने जरापण समर्थ थता नथी त्यारे तेनेमाटे जे शोक करवो ते मिथ्याज छे. जो मनुष्यादिक जन्म फरीने मळे नहि तोज नाशात्मक धर्म बाध करे नहि. जो के नाशात्मकपणुं कंइ चैतन्यस्वरूपने नथी तोपण ममत्वथी ज्यांसुधी जाण्युं न होय त्यांसुधी आपणे पोते नाश थइए छिये एम मानिये छिये अने तेथी अंतःकरणने अति परिताप थाय छे. आ पण एक मायानो अलौकिक चमत्कार छे.

हवे ए दुःख मटाडवाने मनुष्यशरीरमां जे स-
द्विचार थाय तेज छे. ते सद्विचार जो पशुनी
पेठे विषयादिकना गारामां गुचाइ जइए अने
मायामां मोह पामी हर्ष-शोक कर्या करिये तो
थतोज नथी; पण ज्यारे विषयादिकनुं असत्य-
पणुं अने तेना सुखनुं क्षणिकपणुं समजीए, जग-
तनुं पण नाशात्मकपणुं समजीए, अने ब्रह्माथी
मांडीने कीडी सुधीनां सर्व प्राणीओने नाशवान्
अस्थिर आयुष्यनां जाणीए तो ते विचार आ-
वतां पछी कशो विलब रेहेतो नथी. जो सत्रळुं
नाशात्मक जाणीने अने शरीर क्षणभंगुर जा-
णीने निर्दय थवाय के यथेच्छाचरणी थवाय तो
ए जेवो बीजो एके अनर्थ नथी. तरवार बांधवी
ते हरामखोर लोको आपणा जानमालने नुकसान
करे तेने शिक्षाना उपयोगमां लेवा सारू छे,

पण पोतानाज शरीरने क्रोधना आवेशमां कापी नांखवाने नथी. कदी कोइ एवो उपयोग करे तो ते दुःखी थाय अने जगतमां निंदाय छे. आजप्रमाणे जे कांइ आपणे जगतविषे जाण्युं होय तेथी जे सत्पुरुषो बोध करे छे ते सत्य मार्गे चालवुंज जोइए. ईश्वरेच्छाथी आपणे जंगली स्थितिमां नथी, शरीरे सारा छिये, देशनी रीत भीत अने सारुं–नरसुं जाणिए छिये. विवेकने समजीए छिये, अने विद्यानो अभ्यास कर्यो छे; एनो हवे उपयोग एटलोज रह्यो छे के शमदमादिकनी उत्तम सहायताथी ईश्वरनुं, पोतानुं अने जगतनुं रूप ओळखी जे मार्गे महान् पुरुषो चाली उत्तम पद पाम्या छे ते मार्गे चाली उत्तम पद पामवुं. सारामां सारी समजणनुं अने सारामां सारी विद्यानुं एवुं उत्तम फळ न थाय

तो विद्या अने समजण निष्फळ थाय एमां शो संदेह छे? पूर्वना पुण्यथी, ईश्वरकृपाथी अने सारी संगतथी कांइ पण योग्य बोधनुं अधिकारी थवाय तो पछी मनने मोकळुं मेली सर्वज्ञपणानुं अभिमान धरवुं नहि, केमके जो तेवुं अभिमान थयुं तो बोधना अधिकारी थया ते न थया जेवुं समजवुं. प्रतिदिवस वधारे वधारे ज्ञान मेळवी उत्तम साधन संपादन करवामां निरंतर विद्यार्थीनी अवस्थामांज रहेवुं. केमके जाणवानुं एटलुं बधुं छे के तेनो अंतज नथी त्यारे पछी सर्वज्ञ ते केम थवाय? भर्तृहरि कहे छे केः—

यदाकिंचिज्ज्ञोहं द्विप इव मदांधः समभवं
तदा सर्वज्ञोस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः ।
यदाकिंचित्किंचिद्बुधजनशकाशादवगतं
तदामूर्खोस्मीति ज्वरइव मदो मे व्यपगतः ॥

ज्यारे कांइक जाणीने हुं हाथीनी पेठे मदांध थयो त्यारे हुं सर्वज्ञ छुं एवी रीते मारुं मन लेपाइ गयुं; पण ज्यारे बुधजनो पासेथी कांइ कांइ में जाणवा मांड्युं त्यारे तो हुं मूर्ख छुं एम जाण्युं अने तेथी तावनी पेठे मारो मद उतरी गयो.

आ उपरथी आपणे जाणी शकशुं के आपणे घणुं जाणवानुं छे. थोडुं जाणीने जे अभिमान धरी बेशीये छिये ते केवळ टुंकी नजर छे. एक विषयमां नहि पण सघळा विषयमां एवीज रीते समजवानुं छे. आ जगतरूप एक मोटुं नाटकग्रह छे, तेमां आपणे हाल मनुष्यनी भूमिका भजावी बतायिये छिये. बीजी भूमिकाओ भजावतां भजावतां ज्यारे नाटकाचार्यने आपणी भूमिका भजाववानी योग्यता ठीक लागी हशे

त्यारे छेवट उत्तम भूमिका के जे मनुष्यनी छे ते मळी छे. हवे जो ते भूमिका यथार्थ रीत न भजावाय तो मोटी खामी केहेवाय अने तेथी पाछी हलकी भूमिकानुं पात्र थवाय. माटे आ मनुष्यजन्मनी भूमिका एवी भजावी बतावबी जोइए के नाटकाचार्य एवी खटपटमांथी काढी नांखी कृपा करी पोताने योग्य पद आपे जेथी अतुल सुख मळे. आ आपणुं काम आपणे आपणी सत्वगुणी बुद्धि अने सारी संगतिथि पार पाडवुं एमां ईश्वरसहाय तो मनुष्यावतार अने जाणवानी शक्ति छे तेथी स्पष्ट जणाइ रहे छे के ईश्वर तो सदैव सहायतामांज छे; केमके ते कांइ साकारनी पेठे हाथे करीने सहाय आपता नथी

सारांश ए समजवो के सर्व ईश्वरमय छे,

नामरूपात्मक देखवामात्र छे, क्षणभंगुर अने नाशात्मकनो वृथा शोक करवो नहि, आपणुं शरीर पण नाशात्मकज छे अने नाशात्मक छे माटे बीजी चिंताओ के जेथी सुख के कल्याण थतुं नथी तेवी मेली देवी, ते मेलीने अभिमान मेलवुं, अभिमान मेलीने मन अने इन्द्रियोनो निग्रह करी विद्या अने विवेकनी सहायताथी पोतानुं, ईश्वरनुं अने जगतनुं स्वरूप ओळखी फरीने आधि व्याधि ने उपाधिना ताप खमवा न पडे अने जगतमां यशरूप शरीर अमर रही ईश्वरनां पदने पमाय तेवुं करवुं अने परोपकारार्थे बीजाने पण तन-मनथी तेवुं थवा प्रेरणा करवी. आचार्यजी पण तेवीज प्रेरणा परोपकारार्थे करे छे. सत्पुरुषोने एमज घटे छे केमके तेवाओनी समृद्धिओ परना उपकारने माटेज

होय छे. सर्वनामनमां ईश्वर वसे छे माटे आ वातमां जेमने संदेह लागे तेमणे पोताना हृदयमां रहेला[1] अंतर्यामिनी साथे विचार करी जोवो एटले सघळुं साचुं-खोटुं जणाइ रहेशे.

[1] ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
हे अर्जुन ! ईश्वर सव प्राणीओना हृदयमां रहे छे. एम श्रीभगवान अर्जुनने कहे छे.



*षोडशपज्झटिकाभिरशेषः
शिष्याणां कथितोभ्युपदेशः।
येषां नैष करोति विवेकं
तेषां कः कुरुतामतिरेकम् ॥१६॥†

अर्थ.

आ सोळ श्लोकना चाबखाओथी शिष्योने-सारू उपदेश कर्यो छे. जेने ते विवेक, एटले आ सारूं अने आ नरसुं अथवा आ साचुं अने आ खोटुं एम समजवानी शक्ति नथी करतो तेने आथी वधारे बीजो बोध कोण करे?

---

* दृश्यनुं निराकरण कर्या हवे षोडश ए छेला श्लोकथी उपसंहार करे छे.

(अनुवाद चोपया छंदमां.)

† सोळज कवितावडे अशेश, शिष्यो काज कर्यो उपदेश;
जेने न करे कांइ विवेक, तेनो कोण करे अतिरेक?

टीका.

आरंभथी मांडीने अंतसुधीना सघळा श्लोक आपणे वांची गया. ते उपर एकद्रष्टिथी विचार करतां जणाय छे के जेटली जातनो सदुपदेश कहिये तेटली जातना सदुपदेशनो सांसारिक अने व्यावहारिक रीते समावेश थइ जाय छे. पेहेला श्लोकमां धननी तृष्णानो त्याग करी जे मले तेमां संतोष राखी चित्तमां राजी रेहेवानुं; बीजा श्लोकमां द्रव्यवाळाने दीकराथी पण बीक लागे छे अने धनथी कशुं खरूं सुख थतुं नथी माटे तेने अनर्थरूप जाणवानुं अर्थात् तेथकी निस्पृह रेहेवानुं; त्रीजा श्लोकमां ज्यांसुधी धन मेळववानी शक्ति होय त्यांसुधी सर्व संबंधी अथवा परिवार प्रीति राखे छे पण अशक्त थया एटले कोइ भाव पण पुछतुं नथी ए सारांश

उपरथी संसारमां सहु स्वार्थथी सगां छे एम स-
मजी अति आसक्ति छोडवानुं; चोथा श्लोकमां
आ विचित्र संसारनी विचित्र रचनामां स्त्री
पुत्रादिक शरीर होय त्यांसुधी छे पछी कोइ
कोइनुं नथी माटे हुं कोण छुं अने क्यांथी आ-
व्यो छुं ए विचार उपरथी आत्मतत्व ओळख-
वानुं; पांचमा श्लोकमां जेने काळ क्षणवारमां
नाश करी नांखे छे एवां धन, मनुष्यसंपत्ति अने
युवावस्था ए आदिनो गर्व न करतां तत्काळ
समजी जइ ईश्वरमां मन जोडवानुं; छट्टा श्लो-
कमां जीवन कमळना पानमां पडेला पाणीना
टीपानी पेठे चपळ छे माटे ज्यांसुधी ते वर्तमान
छे त्यांसुधीमां संसार तरवामां वहाणरूप सत्सं-
गति करी लेवानुं; सातमा श्लोकमां जेने आत्म-
तत्वनुं ज्ञान न थयुं होय तेवा मूढलोको नरकना

अधिकारी थाय छे माटे आपणे तेवा न थतां कामक्रोधादिकनो त्याग करी पोतानुं स्वरूप ओळखी लेवानुं; आठमा श्लोकमां.वृद्धावस्था आवी अंग साव शीथिल थइ अशक्त थइ मरणनी अणीउपर आवे छे तो पण आशा तेने छोडती नथी अने ते आशाने छोडतो नथी; सारांश के एवी जन्म-मरण आपनारी आशाने अळगी करी दइ स्वस्थ शरीर होय त्यारथी निराश रही उत्तम पदमां लक्ष लगाडवानुं; नवमा श्लोकमां संसारनां सर्व दुःखने दूर करनार अने क्षणिक सुखमां नहि लपटावनार उत्तम सुखना साधनरूप वैराग्यनी महत्ता जाणी तेने ग्रहण करवानुं; दशमा श्लोकमां परमगतिने पामवानुं परम साधन समदृष्टि छे माटे आ शत्रु अने आ मित्र एवो स्वपरभेद मटाडी संधिविग्रहने

વેગળા કરી સમચિત્ત થવાનું; અગિયારમા શ્લો-
કમાં આ સર્વ જગત્ માયાની જાળરૂપ સમજી
અને ઈશ્વર સર્વમાં એકસરખા રહેલા જાણી કાંઇ
પણ રાગ-દ્વેષ ન કરતાં ભેદબુદ્ધિ તજી દઇ અ-
ભેદબુદ્ધિ અંતઃકરણથી રાખવાનું; બારમા શ્લો-
કમાં બાલ્યાવસ્થા રમતમાં નહિ જવા દેતાં, યુ-
વાવસ્થામાં તરુણીમાં આસક્ત ન થઇ જતાં અને
વૃદ્ધાવસ્થામાં ચિંતાચિંતાને સ્વાધીન ન થતાં
ઈશ્વરમાં મન લગાડવાનું; તેરમા શ્લોકમાં જેમ
જેમ દિવસ રાત ઋતુ અને કાળ જતાં જાય છે
તેમ તેમ આપણું આયુષ્ય ઓછું થતું જાય છે તે
જાણ્યાવિના આપણે લાંબી આશાને વળગી રહિયે
છિયે. માટે તેમ નહિ કરતાં આયુષ્ય છે ત્યાંસુધી
તેને સાર્થક કરવાનું અને વૃથા વખત ન જવા
દેવાનું; ચૌદમા શ્લોકમાં જ્યાંસુધી જન્મ લેવો

पडे छे त्यांसुधी मोत थया वगर रहेतुं नथी अने फरीने माताना उदरमां आव्या वगर चालतुं नथी एवो आ संसारनो मोटो दोष जाणीने तेमां मानेलो खोटो संताप मेली दइने. फरीने जन्म-मरणनो फेरो टळी जाय तेवां साधन करी लेवानुं; पंदरमा श्लोकमां ब्रह्माथी मांडीने कीडीथी पण झीणा सूक्ष्मदर्शक यंत्रथी पण भाग्ये जणाय एवा जंतु सुधी सर्व नाशवाळा छे, [illegible] आपणे पण ते साथेज छिये माटे उत्पन्न थयेलानो नाश थतां वृथा शोक न करवानुं अर्थात् सर्व नाशात्मक छे अने आ शरीर पण तेवाज धर्मनुं छे माटे आ नाशात्मक धर्मवाळा संसारमां नित्य नाश थनारूं शरीरज पाछुं लेवु न पडे तेवुं साधन करी सुखदुःखमां सरखुं मन राखी प्रारब्धकर्म भोगवतां सर्व शोकने मेली मात्र

ईश्वरमां प्रेम परोववानुं; अने सोळमा श्लोकमां पंदर श्लोकमां आपेला उपदेशथी जो कांइ बोध न थाय तो तेने विशेष कांइ उपदेश न होवाने लीधे बोध न थवाथी ते सदैव अज्ञाननुं पात्रज रही जवानुं सुचव्युं छे. आटली बाबत जे सूचवी छे तेमां सघळा विधिनिषेधरूप उपदेशो ग्रहण करनारनी योग्यता प्रमाणे समाइ जाय छे. अर्थ अनर्थरूप छे, संबंध खोटो अथवा स्वार्थनो छे, जगत् असत्य अने इन्द्रजाळ जेवुं छे, ईश्वर सर्वव्यापक एक छे अने समदृष्टिपणुं थवुं ए अति सुखरूप छे ए आदि जे जे मुख्य बोधना विषय तेमां छे तेथी कांइ थोडो बोध थतो नथी. सदाचार आदिकनो बोध पण तेनी साथेज समाइ गयेलो समजवो. दया, दान, ध्यान अने ईश्वराराधन पण एमां समाय छे. सत्य शुं अने अ-

सत्य शुं ए पण एमां समाय छे. हवे मात्र स-
मजवानुं आपणा हाथमां छे. बोध आपनारा
समयप्रमाणे अने अवकाशप्रमाणे बोध लखी
जाय ते उपरथी न्यूनाधिक सघळुं वांचनारे स-
मजी लेवानुं छे. आ उपरथी आपणे जाणी श-
कशुं के खोटा मोहने तोडवामां सोळ श्लोकमां
समायेलो बोध घणो छे. कदी एम करतां जो
आपणने के बीजाने बोध थयो नहि अने मो-
हनी जाळ तुटी नहि तो पछी तेनेमाटे बीजो
कशो बोध छे नहि अने होय तो लागवानो
पण नहि. अधिकारनी वात पण आ प्रसंगे जा-
णवी योग्य छे. जेनो जेटलो अने जेवो अधिकार
होय तेने तेटलो अने तेवो बोध थाय छे. एकज
जातना उपदेशमांथी अनेक प्रकारना सारा अ-
थवा माठा बोध लोको लइ शके छे. जेओ सर्व

सारा उपदेशमांथी सारो बोध ले छे तेओ धन्य छे, अने जेओ सारा उपदेशमांथी नठारो बोध ले छे ते धन्य नथी. विशेष बोलिये तो नठारा दुर्जनादिकना उपदेशोथी पण जे सदैव सारोज बोध ले छे तेओने तो अति धन्यवाद आपवो जोइए; पण एवा अधिकारियो विरला होय छे. उपदेश आपनाराओ सघळानमाटे बोध आपे छे तेने ग्रहण करनारा अधिकारी अने अनधिकारी बे भेदना लोको होय छे. सदुपदेश सांभळी तेनो सारो उपयोग करे ते अधिकारी केहेवाय अने सदुपदेश सांभळी तेनो खोटो उपयोग करे ते अनधिकारी केहेवाय. एक कोइ विद्वान् ब्राह्मणे नाना गामडामां भीखा पटेलने घेर जइने चोमासाना चार महिना सुधी भारतनी कथा करी. समाप्तिने समये ब्राह्मणने हजार पांचसो कोरीनी

पेदाश करी आपीने पटेल पोताने अति धन्य मानवा लाग्यो. राजी थयेला ब्राह्मणे पण चालवा टाणे विचार कर्यो के पटेले आपणाउपर बहु उपकार कर्यो तेथी धर्मात्मा जणाय छे माटे एमने मारी कथाथी केवोक बोध लाग्यो छे ते हुं पुछतो जाउं जेथी सारो बोध लाग्यो होय तो मारी आजसुधीनी मेहेनत निष्फळ न जाय. आम विचारी ब्राह्मणे पटेलने जइ पुछ्युं के कहो पटेल! तमे भारत सांभळीने शो बोध लीधो? पटेले जवाब दीधो के भाइओनी साथे अने भत्रीजाओनी साथे वेर करी जरा पण तेने भाग न आपी सघळुं आपणे पचावी पडी खाइ पी खुशीमां रही सुख भोगववुं ए आपणे तो समज्या. ब्राह्मण तो आश्चर्यथी मोंमां आंगळी घाली पटेलाणी शुं समज्यां छे ते जाणवानी

इच्छाथी तेनी पासे गयो अने पुछ्युं के कहो पटेलाणी! तमे भारत सांभळीने शो बोध लीधो छे? पटेलाणीए जवाब दीधो के देर जेठनां छोकरांने दुःखी करवां, तेनां धनमाल होय ते लुटी लइ पोतानां छोकरांने आपवां अने मरवुं त्यांसुधी पण पोतानी वात मेलवी नहि. आ वचन सांभळी वधारे आश्चर्य अने खेद पामी पटेलना दीकरानी मोटी वहु पासे वधारे जाणवा माटे गयो अने पुछ्युं के कहो वहुबापा! तमे भारत सांभळीने शी शीखामण लीधी? वहुए जवाब दीधो के गोरबापजी! में तो एवी शीखामण लीधी के द्रौपदी जेवी महासतीने पण पांच पति थया हता अने सती केहेवातां तो आजे कलियुगमां आपणां जेवांने तेटला पति थाय त्यांसुधी तो सती केहेवाइए. ब्राह्मणे तो आ

वचन सांभळी माथुं धुणावी निश्वास मेली तेने उत्तर आप्यो के, बाइ ! तारा समजवामां पण मणा नहि अने मारा वांचवामां पण मणा नहि. आटलुं बोली पोताने उतारे आवी पोते करावेलां भारतनां श्रवणनो सर्वने अवळो बोध थयो तेनो पश्चात्ताप करी पोताने गाम जवा तैयारी करवा लाग्यो. तैयारी करतां आवां दुर्बुद्धिनां माणसो पासेथी मळेलुं द्रव्य कशा कामनुं नहि माटे तेने अहींज बंध बसारी काले अहिंथी नीकळी जवुं एम विचारी मळेलां द्रव्यथी मोतीचुरना लाडवा करावी माणसोने अने पशुपक्षीओने खवरावी दीधा. बीजे दिवसे ते पटेलनो अने पोताना धंधानो धिःकार करतो ते ब्राह्मण पोताने गाम जवा नीकळ्यो. अधिकार वगरनां माणसोने गमे तेटलो बोध होय तोपण ते वृथा थाय

छे अने सारा बोधथी तेनां नठारां आचरणोमां वधारो थाय छे. अरे प्रभु! एवां माणसो आ संसारसमुद्रने केम तरी शकशे अने तेनां जन्ममरणनां दुःख केम टळी शकशे? आम विचार करतो पेहेलो ब्राह्मण त्रण मैल नीकळी गयो त्यां बे चार वडनां झाडना झुंडनीचे बे कोस चालता हता. तेना चलावनार मांहेथी एक माणसे ए महाराजने दूरथी बोलावी आगतास्वागता करी सर्व वृत्तांत पुछ्युं. ब्राह्मणे तो पोताना सर्व विचारो अने पटेलआदिनी अवळी समजण सर्व तेनी पासे कही दीधुं. तेनी पासे केहेवानुं कारण एज के तेनी साथे तेनो रोजनो सारो परिचय हतो केमके ते पेहेला भीखा पटेलनो नानकडो पुत्र हतो. ब्राह्मणनी वात सांभळी पटेलना पुत्रे कह्युं के महाराज! आप

विवेकी थइने भूलो छो केम? एनामां समजण न होय ते क्यां लेवा जाय? एओ भारत जेवी कथानो उलटो सार समज्यां तेमां तमारे खेद करवानुं कशुं कारण नथी. जेना जेवा संस्कार अने जेनी जेवी बुद्धि होय तेवुं तेने सुजे छे अने ते करे छे, त्यारे आप शामाटे शोक करो छो? पटेलना पुत्रनां आवां समजणवाळां वचन सांभळी ब्राह्मणनुं मन जरा ठंडुं थयुं अने ताप सघळो शांत थयो तेथी पुछ्युं के—भाइ! तमारा विवेकथी मने संतोष थाय छे. मने लागे छे के ईश्वरे तमने सारी समजणना कर्या छे तेथी भारत सांभळीने तमने कांइ वधारे सारी समजण आवी हशे माटे तमे शुं शीखामण लीधी छे ते कहो तो मने वधारे संतोष थाय. पटेलना पुत्रे ब्राह्मणने ते दिवस पोतानी वाडीये रोकीने

सीधापाणीनी सोइ करी आपी. मध्यान्ह समये ब्राह्मण जमीने तैयार थयो ते समये पोते पण नाह्तो पाणी करी पासे आवीने कह्युं के महाराज! मोटा मोटा विद्वानो पण भारतनो पूरो सार नहि समजता होय तो हुं तो कोणमात्र छुं, तोपण आपनी दयाथी हुं एटलुं तो समज्यो छुं के, प्राणीमात्र उपर सरखी दया राखवी, कोइ साथे क्लेश करवो नहि, जुठुं बोलवुं नहि, अन्याय करवो नहि, ज्ञातिसाथे के कुटुंबसाथे क्लेश राखवो नहि, सर्वनुं शक्ति प्रमाणे मान राखवुं, वर्णाश्रमनो धर्म पाळवो, सदाचारथी चालवुं अने शमदमादिकथी अंतःकरणने शुद्ध करी आ भवसागर तरी जवा माटे ईश्वरमां वृत्ति जोडी देवी एटली शीखामण में लीधी छे. आटलो टुंको पण श्रेष्ट बोध पोतानी मारफत पटेलना पुत्रने थयो

तेथी ब्राह्मणे पोतानी मेहेनत सफळ मानी, पटेलना पुत्रनां वखाण कर्यां अने पछी पटेलना पुत्रने आशीर्वाद आपी पोताने घेर गयो. पटेलना पुत्रे पण पोताने थयेला बोधथी जेटलो बोध बीजाने थयो तेटलो कर्यो अने पोते पोतानुं उत्तम साधन करवा लाग्यो ते ज्यांसुधी जीव्यो त्यांसुधी कर्युं. आम अधिकारीमां फेर होय छे. सर्वनां अदृष्ट अने सर्वनां फळ सरखां होतां नथी तेथी तेम थवानो संभव छे. कोइ कोइ वार कसाइना कुळमां उत्पन्न थएला अति दयाळु अने अहिंसक थइ उत्तम मार्ग लहे छे, तेम कोइ कोइ वार अति दयाळु वर्गमां उत्पन्न थयेला अति निर्दय अने अति हिंसक बनी अधमाचरण करे छे. आम प्रारब्धनी विचित्रता छे त्यां कशो बोलवानो अवकाश नथी. आपणे तात्पर्य तो ए

लेवानुं छे के जेओ अनधिकारी छे तेनेमाटे तो कशो बोधज नथी; परंतु जेओ अधिकारी छे तेओनेमाटे बोध छे. तीव्र अने मंद एम बे प्रकारना अधिकारी होय तेमां तीव्र अधिकारीने थोडा समयमां अने थोडा उपदेशमां घणो बोध थइ जाय छे अने मंद अधिकारीने घणे समये अने घणा उपदेशथी थोडो बोध थाय छे. आ उपरथी समजाशे के आचार्यजीना मोहमुद्गरना उपदेशथी अधिकारी हशे तेने पछी थोडो के घणो बोध थइ जवो जोइए. कोइ शंका करे के ज्यारे अधिकारप्रमाणे सवळुं थाय छे त्यारे पछी प्रयत्ननी शी जरूर छे? आनो उत्तर ए छे के अधिकारप्रमाणे सवळो बोध थाय छे ते वात तो खरी छे परंतु तेमां प्रयत्न करवु ए एने वधारे अनुकूळ छे अने कदी अनुकूळ न होय तो पण

निरंतरनो अभ्यास छे ए पण मंद अधिकारीने तीक्ष्ण अधिकारी जेवो करी देछे. तीक्ष्ण के मंद अधिकारीने उपदेश कर्यो होय ते तेना अधिकारने योग्य उत्तेजन आपनार थइ पडे छे माटे महापुरुषो समयने अनुसरी सदुपदेश करे छे. कोइ टाणे एम पण बने छे के वरसाद पोताना परोपकारी स्वभावथी चोमासामां वरसे छे तेमां जेटला बिंदु छीपमां पडे तेटलां मोती थाय; सर्पना मुखमां पडे तेटला झेर थाय अने पांदडामां पडे तेटला मोतीना जेवी आकृतिवाळा थाय; तेम सत्पुरुषो पण पोताना दयाळु स्वभावथी सर्वदा बोध आप्याज करे छे. आ अधिकारी अने आ अनधिकारी एवो विषमभाव तेओ राखताज नथी. आम छतां जे जे पात्रमां उपदेश पडे छे ते ते पात्रोमां सहुसहुनी यो-

ग्यता प्रमाणे तेनुं फळ थाय छे. कोइ उत्तम अधिकारी होय तो तेने तरत सारो बोध थइ जाय छे अने कोइ अधिकारी न होय तो तेने उत्तम बोधने बदले अवळो बोध थाय छे. आटला माटे निरंतर उत्तम अधिकारीज थवुं जोइए. अधिकार वगर व्यवहारमां पण कोइ पद मळी शकतुं नथी त्यारे परमार्थनी शी वात करवी ? सत्पुरुषोना उपदेश अधिकारी थइ कंठे राख्या होय तो अत्यंत शोभा आपे छे. कंठे धारेलां सोनानां के हीरामोतीनां घरेणांनी तो मात्र देखवानीज शोभा छे; बाकी तेनो स्पर्श अति कठोर होय छे. तेम देखावामां सारां लागे पण वखते जीवने जोखममां नाखी दे. सत्पुरुषोना सदुपदेशरूप कंठाभरण तो सदैव भय वगरनुं अने निरंतर शोभा आपनारुं छे. ते ज्यारे आ-

पणे धारण न करिये त्यारे बीजां खोटां घरेणां धारण कर्यां तो पण शुं अने न कर्यां तो पण शुं ? ज्यांसुधी साची वस्तु साची छे. एम समजवामां आवतुं नथी त्यांसुधी कोइ पण पूर्वनां पापरूप निशानुं जोर हजी आपणा हृदयमांथी खश्युं नथी एम समजवुं. दूधनो रंग निरंतर धोळो छे ते ज्यारे निरंतर पीळो लागे त्यारे समजवुं के आपणी आंखमां कमळो छे; तेम साची वात होय ते खोटी लागे त्यारे समजवुं के आपणे एटला दोषवाळा छिये. समजीने कर्त्तव्य एज छे के शुद्ध थवा प्रयत्न करी छेवट योग्य अधिकारी थइ सदुपदेश ग्रहण करी जन्म-मरणनो फेरो टळवा प्रयत्न करवुं. उत्तम अधिकारी एकदम थइ जवुं ए वात सेहेली नथी. उघाडी तरवार लइने उभेला सीपाइओना समुहमांथी छोडवढ थयाविना

आरपार उतरी जवुं ए जेवुं कठण छे तेना करतां पण आ काम घणुं कठण छे. महाशूरवीरो एवा मामलामांथी आरपार उतरी जाय छे अने एम करतां कदी वचमां कपाइ जाय तो पण तेने उत्तम स्थान मळे छे. परंतु उत्तम अधिकारी थनारने तो जो वचमां रहे तो उत्तम फळ थतुं नथी. अनेक विषयोनी वासना, तेने वधारनारां वांचवा-सांभळवानां साधनो अने विषयरसमां बुडेलानां देखवामां आवतां खोटां सुखोथी मनुष्य घवाइने वचमांज तुटी पडे छे. एवी रीते घवाएलो केम आगळ सारो अधिकार पामी शके? आवुं कठण काम पण मनुष्यने करवानुं छे; केमके विवेकशक्ति एटलामाटेज ईश्वर तरफथी मनुष्यने मळी छे. पोतानो अधिकार पोते न साचवतां अधिकारने घटे नहि तेवुं नठारुं

काम करनारने अधिकार छीनवी लइने उपरथी यथायोग्य दंड थाय छे ए वात आपणे व्यवहारमां पण नजरे जोइए छिये. परमार्थविचारमां पण एमज समजवुं. मनुष्यनो अधिकार सारासार समजी अने सत्यासत्य समजी सारनो अने सत्यनो संग्रह करवानो छे. तेम जो न करे तो ईश्वरना तरफथी अपराधी थाय छे. अने तेथी मनुष्यत्वरूप अधिकार तेनो छीनवाइ जायछे अने अवटित कार्यना दंडमां यमयातना अने पशुपक्षी आदिना अवतार भोगववानुं माथे आवे छे एम विचारवान् पुरुषो कहे छे. सोळ श्लोकमां जे जे उपदेश आवे छे ते उपदेशने योग्य रीते हृदयमां उतारी परमार्थ अने व्यवहारने सुधारवो जोइए. ए सुधारवा उत्तम अधिकारी थवुं ए गमे तेवुं

कठण छे तो पण मनुष्यशरीर मळ्युं छे माटे गमे तेवुं कठण हशे तोपण ते काम पार पड्या वगर रेहेवानुं नथी पण प्रयत्न करवुं ते आपणा हाथमां छे. जाणी बुजीने अवसर जवा दइए तो पछी शुं थाय ? खोटी ममतानी जाळमां गुंथाइ रहीए अने पछी दुःख पामीए तेमांथी कोण छोडावे ? सत्पुरुषोनां वाक्यो प्रसिद्ध रीते बोध आपे छे ते हृदयमां उतार्यावगर दुःखमय संसारमांथी सुख मेळववा इच्छा राखीए ते क्यांथी मळे ? ए मार्गथी सुख थवानुं नहि अने सुख शुं पदार्थ छे ते ओळखावानुं पण नहि. एम थवाथी छेक विवेकवगरना आपणे मूर्खमांज गणावाना. मूर्ख थयो एने पछी डाह्यो करवाने कशा उपाय कामे लागता नथी. भर्तृहरी पण साक्षी आपे छे के—

शक्योवारयितुंजलेनहुतभुक्छत्रेणसूर्यातपो
नागेंद्रोनिशितांकुशेन समदो दंडेन गोगर्दभौ ।
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्चविविधैर्मंत्रप्रयोगैर्विषम्
सर्वस्यौषधमस्तिशास्त्रविहितंमूर्खस्यनास्त्यौषधम् ॥

अग्नि पाणीथी ठारी शकाय छे, सूर्यनो ताप छत्रथी रोकी शकाय छे, मदोन्मत्त हाथी तीक्ष्ण अंकुशथी वारी शकाय छे, लाकडीथी बळद अने गधेडाने हांकी शकाय छे, नानाप्रकारनां औषधना संग्रहथी रोग मटाडी शकाय छे अने मंत्रना प्रयोगोथी झेर उतारी शकाय छे; एम सर्वनुं ओसड शास्त्रमां कहेलुं छे पण मूर्खनुं ओसड तो छेज नहि.

आ प्रमाणे मूर्खपणानुं ओसड नथी. मूर्खपणुं ते आपणुं अज्ञानज छे. अति असाध्य रोगनेमाटे जेम औषधना उपचार वृथा जाय छे तेम अति

अज्ञाननेमाटे पण पछी कोइपण उपचारो कामे लागता नथी; माटे एवांज आचरण राखवां के अज्ञाननो असाध्य रोग अंगमां प्रवेशज करे नहिं. अज्ञाननुं असाध्य रोगनी पेठे ओसड नथी एम केहेवानो हेतु एज के अति अज्ञानीने पछी बोधनी वात अंतःकरणमां उतरती नथी. कदी कांइ पराणे बे बोल कह्या के संभळाव्या होय तो कंठप्राणवाळा मनुष्यने जेम गळे औषध न उतरे तेम तेने गळे उतरता नथी. ज्यारे एम थाय त्यारे अज्ञान टळेज केम? आटलासारू उपाय नथी एम कह्युं. बाकी उपाय तो एवा एवा छे के लोढाने पारशना स्पर्शथी सोनुं थतां जेटली वार लागे तेटली अज्ञान मटीने उत्तम अधिकारीने ज्ञान थतां लागे. अर्थात् तत्काळ ज्ञान थाय तेवा अनेक उपायो

छे, पण कोण जाणे शो चमत्कार छे के एवा उपायो पण. घणे ठेकाणे अफळ जाय छे. अने तथी अधिकार के पछी ईश्वरकृपावगर ज्ञान नथी थतुं एम कह्यावगर चालतुं नथी. आटला माटे सारां कर्म करी ईश्वरकृपा मेळववा अने ज्ञान प्राप्त थवा बाळपणथीज प्रयत्न राखवुं जोइए; केमके बाळपणनो अभ्यास आगळ उपर अति दृढ थाय छे. जो बाळपणथी अभ्यास रहे नहि तो पछी अज्ञाननां मूळ ऊंडां जामी गया पछी उखडवां घणां कठण पडे छे. सूर्य अस्त थवाथी थयेलुं अंधारूं चार पहोर पछी टळी जाय छे, पण अज्ञानरूप अंधारूं तो जो उत्तम साधन संपादन करी मनुष्यजन्ममां टाळ्युं नहि तो पछी अनेक जन्मेपण फरी मनुष्यजन्म मळ्याविना अने मळ्याने उत्तम साधन थयाविना

टळतुं नथी. आटला हेतुथी दयाळुं पुरुषो परोपकारबुद्धिथी बोध आपे छे ते उपर लक्ष पहोंचाडवुं जोइए. विषयादिकनां क्षणिक सुखोतरफ तो पशुपक्षियोनुं पण लक्ष लागे छे त्यारे आपणे उत्तम प्राणीनी गणतीमां केम गणाइ शकिये? स्मरण राखवुं जोइए के विषयसुखमां आसक्त रेहेवुं ए काम पशुपक्षी आदि प्राणीओनुं छे; अने तेथी विषयसुखथी विरक्त रेहेवानुं अने ईश्वरनुं स्वरूप ओळखी निवृत्तिथी अति आनंद के ब्रह्मानंदमां रेहेवानुं काम आपणुं छे. समुद्रमां वहाण चलावनार खलासी सुखाणने मेली दइ तोफान लागवा दइ पोताना वहाणने मध्यसमुद्रे बुडाडी देवा प्रयत्न करे तो तेनी मूर्खता कोण मटाडे अने कोण तेने त्यांथी बचावे? तेमज संसारसमुद्र तरवाने मळेला उत्तम

शरीररूप वहाणने चोतरफथी विषयादिक सुखना अने आधिव्याधिना पवनना झपाटा वागवा दइ सन्मार्गरूप सुखाण मेली. दइ पार नहि उतरतां वचमां बुडी जवा इच्छा करिये तो कोण बचावे ? पोतानुं भलुं पोते समज्यावगर उपायो छतां पण थाय नहि माटे पोते पोतानी मेळे समजवुं अने उपायो कामे लगाडवा. आपणे सारुं भण्या छिये, संसारनां सुखदुःख जाणिये छिये, कोइने काळ अचानक झपाटामां ले ते समये तो संसारनी केटली सत्यता अने केटलो संबंध छे ते जाणिये छिये, द्रव्यनेमाटे बाप दीकरो वढी मरता जोइ ते वखते संसारमां कोनी सगाइ खरी छे ते अनुभविये छिये, वृद्धावस्थामां मरण पामता पुरुषो अति अशक्त होवाथी अने आशातृष्णामां बुडेला होवाथी केवा

पीडाय छे ते जोइ तेवुं आपणने न थाय एम इच्छिये छिये, आपणी आगळ जे जे जगतमां मरा-नरता बनाव बने छे ते जोइए छिये अने तेमां आगळ रहीने अने क्यांइ भेळा भळीने भाग लइए छिये तो पण आपणे आपणुं कल्याण करवाने इच्छता नथी ए शुं थोडुं आश्चर्य छे !! जेने खावुं पीवुं अने द्रव्य संपादन करी विषयसुख भोगववुं एज कर्त्तव्य होय अने ते शिवाय सघळुं असत्य समजता होय तेनेमाटे तो कशुं बोलवुं योग्यज नथी; पण जेओ छेक तेवा नथी पण कंइक समजे तेवा अने आस्थावाळा छे तेनेमाटे बोलवुं योग्य जाणी विवेकी पुरुषो विवेक शीखवे छे. आचार्यजीना श्लोक उपरथी आपणे विवेक ग्रहण करवो जोइए. जो एटलाथी आपणने कशो विवेक न थाय तो पछी एथी वधारे

लांबा बोधथी पण थइ शके नहि. जो आटला-थीज कंइ अंतःकरण सारासार विचार करवा मांडे तो पछी वधारे बोध कोइ आपे ते बरोबर अनुभवमां आवे, ते शिवाय आवे नहि. आ खोटुं अने आ साचुं तथा आ सारुं अने आ नरतुं एम ओळखीने साचुं अने सारुं होय ते ग्रहण करवुं एनुं नाम विवेक केहेवाय. संसार-व्यवहारमां तो आपणे ए वात समजवामां अति कुशळ छिये; परंतु परमार्थविचारमां अति पा-छळ छिये. माटे ए विषयमां पण पाछळ न रहेवामाटे आवा उपदेशोनुं श्रवण-मनन राखवुं जोइए, जेथी ईश्वरकृपा अने पोताना प्रयत्नथी परमार्थविषयमां पण आपणे आगळ थइ उत्तम सुखना पात्र थशुं. एम थाय त्यारेज आ साडा-त्रण हाथनुं हाडकां-चामडांनुं पूतळुं अमूल्य

गणाय अने तेनी अमूल्यता सफळ थाय. माटे बाळके बाळपणथी, जुवाने जुवानीथी अने वृद्धे वृद्धपणथी काळनो विश्वास कर्याविना उत्तम कामनो आरंभ करी देवो. एमांज नरनारीओनुं उत्तम हित समायेलुं छे.

इतिश्री
परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छ-
कराचार्यभगवत्कृतमोहमुद्गरं समाप्तं ॥





****

इति मोहमुद्गर समाप्तम्.

वेचवानां पुस्तको.

श्रीमद् भागवतभाषांतर

શુદ્ધ ગુજરાતી ભાષામાં ગદ્યરૂપે ચૌદ ચિત્રો સાથે બારે સ્કંધમાં ચોપડીને આકારે બહાર પડી ચુક્યું છે. સોનેરી અક્ષરના નકસીદાર પુઠાંનો નોછાવર ઘટાડીને રૂપીયા આઠ રાખ્યા છે. ટપાલ ખર્ચ બાર આના. પુસ્તક આર્યલોકોએ સંગ્રહ કરવા લાયક છે.

दशमस्कंध.

જુના પુસ્તકમાંથી જુદો પાડેલોછે. કિં. રા૦રૂપીયા.

श्रीमद् भगवतीभागवतभाषांतर

ચોપડીના આકારમાં શુદ્ધ ગુજરાતી ભાષાંતર છે. એમાં પ્રકૃતિરૂપ શક્તિનું મહાત્મ્ય વિવિધ આખ્યાનોમાં આપ્યું છે. કિંમત રૂપીયા ૮॥ ટપાલ-ખર્ચ આઠ આના.

सावित्रीचरित्रसंस्कृत.

એ સુબોધક પુસ્તકની કિંમત સવા રૂપીયો છે. ટપાલખર્ચ બે આના.

श्रीमद् भगवद्गीताभाषांतर.

સુંદર રેશમી પુઠાંથી બાંધેલું આ ધર્મસંબંધી પુસ્તક આર્યલોકોએ પાઠ પૂજામાં રાખવા યોગ્ય છે. કિંમત ૦–૧૪–૦ રાખી છે. ટપાલખર્ચ એક આનો.

पेली चोपडी

(ચિત્રોથી બાળકોને અક્ષરનો બોધ થાય તેવી.)

આર્ય લોકોના બાળકો બીજી નાનપણમાં ખરાબ ચોપડીઓ વાંચે છે તેથી તેને ખોટી અસર થાય છે. માટે તેમાં બને તેટલો અટકાવ કરવા આ ચોપડી બહાર પાડી છે. કિંમત ૧ આનો, ટપાલખર્ચ પાંચ નંગ સુધી અરધો આનો.

ईश आदि दश उपनिषद् मूल.

પાઠપૂજામાં રાખી શકાય એવું રેશમી પુઠાંનું આ ધર્મનું પુસ્તક બ્રાહ્મણ વર્ગને અતિ ઉપયોગી છે. એના નામથી એનો મહિમા લોકોના જાણવામાં છે. કિંમત રૂ. ૧), ટપાલખર્ચ બે આના.
